लेखक के बारे में

कुंवर प्रताप सिंह नागर s/o श्री सुखदेव सिंह, कस्बा बहसूमा (रानी का महल) के निवासी है। इन्होने कानपुर विश्वविद्यालय से MSc. की परीक्षा उत्तीर्ण की। इन्होनें राजा नैन सिंह (स्मारिका) भाग-1 वर्ष 2001 में लिखी तथा कई महत्त्वपूर्ण कार्य किये। इन्होनें इन्टर कॉलेज में राजा साहेब के नाम पर मुख्य द्वार का नामकरण किया। कस्बा बहसूमा नगर रियासत के राजा नैन सिंह के नाम पर मार्ग पास कराया तथा पाण्डेश्वर मन्दिर व कर्ण मन्दिर में द्वार लगवाया और राव कदम सिंह मार्ग का नामकरण, नगर निगम मेरठ में पास कराया।

पुस्तक के बारे में

संघर्षों के परिणाम की अवहेलना करते हुए जो लक्ष्य की ओर निरन्तर गतिशील रहते हैं। उन्हें ही महापुरुषों की संज्ञा दी जाती है। 17वीं शताब्दी के अन्त और 18वीं शताब्दी के शुरू से ही गंगा, जमुना की घाटी में मेरठ जनपद के गुर्जर समुदाय में एक ऐसा ही स्वर राजा जैतसिंह नागर उठा जिसने, मुगल सल्तनत को मजबूर किया कि वह गुर्जर बाहुल्य क्षेत्रों में गुर्जरों का स्वशासन दें। उसी कार्य को राजा जैतसिंह नागर ने किला परीक्षितगढ़ राज्य को सुसंगठित बनाकर और प्रजा को सुरक्षा और सुख की साँस देकर पूरा किया। उसी क्रम में 10 मई, 1857 की क्रांति के अग्रदूत कुंवर कदमसिंह जी ने अपने प्राण न्यौछावर किये। अपने पूर्वजों और उनके महान कार्यों को याद करना प्रत्येक व्यक्ति का पुनीत कर्त्तव्य है। राजा नैन सिंह स्मारिका इस दिशा में एक छोटा-सा प्रयास है। इसमें दिये गये तथ्य, मेरठ गजेटियर तथा राजा जैतसिंह के राजकीय भाटो के वंशजों तथा शिलालेखों आदि से प्राप्त प्रमाणिक सामग्री से लिये गये हैं।

Learning Media Publication

Learning Media Publication
A-16, Aman Vihar, Mawana Road,
Opp. J.P. Academy, Meerut- 250001
Contact No. +91-8791976106
E-mail : learningmediapublicationmeerut@gmail.com
Website : www.learningmedia.in

Available Online on
Learning Media Publication
Website : www.learningmedia.in

indiamart
amazon
Flipkart

ISBN 978-81-948799-9-2

₹ 250/- ($04)

राजा नैन सिंह (स्मारिका) कुंवर प्रताप सिंह नागर

Learning Media Publication

राजा नैन सिंह

(स्मारिका)

(राजा जैतसिंह, राजा नैन सिंह, राजा नत्था सिंह और कुंवर कदम सिंह तथा रानी लाडकौर का जीवन-चरित्र)

लेखक :
कुंवर प्रताप सिंह नागर

राजा नैन सिंह

[स्मारिका]

लेखक :

कुंवर प्रताप सिंह नागर

सचिव : राजा नैन सिंह स्मारक समिति

(मो. : 7467856455, 7017049736)

सम्पादक:

राजकिशोर जैन

Learning Media Publication

Learning Media Publication, Meerut

Learning Media Publication

Learning Media Publication, Meerut

Regd. Office :

Learning Media Publication
A-16, Aman Vihar, Mawana Road,
Opp. J.P. Academy, Meerut- 250001
Contact No. +91-8449001390, 8791976106
E-mail : learningmediapublicationmeerut@gmail.com
Website : www.learningmedia.in

राजा नैन सिंह स्मारिका

लेखक (Author)**:** **प्रताप सिंह नागर** (Pratap Singh Nager)

First Edition : 2021
ISBN: 978-81-948799-9-2

(ISBN: 978-81-948799-9-2, **मानव संशाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा प्रदान किया गया)**

Printing : Shiv Offset Printers, Meerut
DTP : Learning Media DTP Unit, Meerut

Price : ₹ 250

© Authors

- The views expressed by the authors are their own. The editors and publishers do not own any legal responsibility or liability for the views of the authors, any omission or inadvertent errors.
- No part of this book may be reproduced or transmitted by any means/forms,electronic, mechanical, or any other way, without prior written permission from the publishers.
- Any dispute arising due to any issue/issues related to the publication of this book shall be subject to the jurisdiction of Meerut Courts only.

दो शब्द

संघर्षों के परिणाम की अवहेलना करते हुए जो लक्ष्य की ओर निरन्तर गतिशील रहते हैं। उन्हें ही महापुरुषों की संज्ञा दी जाती है। ऐसे महामानव तत्कालीन उत्पीड़न व्यवस्था के प्रति विरोध का स्वर मुखारित करते हैं। सत्ता में बैठे लोग उन्हें विद्रोही, बागी, विप्लवी करार देते हैं। इतना ही नहीं उन्हें आतंकवादी, लुटैरा तथा डाकू तक कह डालते हैं। किन्तु वे लोकनायक हो जाते हैं और लोकभाषा में उन्हें क्रान्ति पुत्र कहा जाता है।

17वीं शताब्दी के अन्त और 18वीं शताब्दी के शुरू से ही, गंगा, जमुना की घाटी में मेरठ जनपद के गुर्जर समुदाय में एक ऐसा ही स्वर **राजा जैतसिंह नागर** उठा जिसने, मुगल सल्तनत को मजबूर किया कि वह गुर्जर बाहुल्य क्षेत्रों में गुर्जरों का स्वशासन दें। उसी कार्य को राजा जैतसिंह नागर ने किला परीक्षितगढ़ राज्य को सुसंगठित बनाकर और प्रजा को सुरक्षा और सुख की साँस देकर पूरा किया। उसी क्रम में 10 मई, 1857 की क्रांति के अग्रदूत **कुंवर कदमसिंह जी** ने अपने प्राण न्यौछावर किये।

अपने पूर्वजों और उनके महान कार्यों को याद करना प्रत्येक व्यक्ति का पुनीत कर्त्तव्य है। **राजा नैन सिंह स्मारिका** इस दिशा में एक छोटा-सा प्रयास है। इसमें दिये गये तथ्य, मेरठ गजेटियर तथा राजा जैतसिंह के राजकीय भाटो के वंशजों तथा शिलालेखों आदि से प्राप्त प्रमाणिक सामग्री से लिये गये हैं। भाषा को सरल रखने का प्रयास किया गया है। राजा जैत सिंह तथा **राजा नैन सिंह** का एक संक्षिप्त चार्ट भी दिया गया है जो मेरठ गजेटियर पृष्ठ 94, 97 तथा क्रमांक 185 से तथा रामणीक, भाट, ज्ञानप्रकाश भाट, कैलाश भाट आदि सभी राजकीय भाटों से प्राप्त हुआ। नागर वंश की उत्पत्ति का विवरण तथा गुर्जर प्रतिहार वंश का विवरण (मध्यकालीन, अन्धकायुगीन, भारत) नामक पुस्तक में इतिहासकार डॉ. काशीराम जायसवाल द्वारा पृष्ठ 184 पर उल्लेखित है। प्रत्यक्ष-परोक्ष सभी सहयोगियों का आभार प्रकट करता हूँ।

कुंवर प्रताप सिंह नागर
(सचिव)

भूमिका

जब कोई देश या जाति अपने पूर्वजों की अवहेलना करता है या उनके आदर्शों पर नहीं चलता है। उस देश या जाति का पतन हो जाता है। इसका एक उदाहरण भारतवर्ष में गुर्जर जाति का है। वर्तमान 20वीं शताब्दी में गुर्जर जाति के पतन का कारण शिक्षा का अभाव और अपने पूर्वजों को भूल जाना है। विदशी शासकों में मुसलमानों ने इतना अत्याचार तो नहीं किया। परन्तु धर्म परिवर्तन सबसे अधिक संख्या में गुर्जर जाति का किया। अंग्रेजों ने इस जाति को सबसे अधिक उत्पीड़ित किया। यहाँ अंग्रेजों के शासनकाल में गुर्जर जाति की राजकीय सेनाओं में भर्ती पर भी रोक लगा दी थी। यहाँ तक कि सेना में गुर्जर रेजीमेन्ट भी लगभग 1865 ई० में समाप्त कर दी गई थी। अंग्रेजों ने ईर्ष्यावश इस जाति को डाकू-लुटेरों की संज्ञा दी।

कम्पनी सरकार ने इस जाति के खिलाफ एक गैंगस्टर एक्ट पारित किया। इस एक्ट के तहत बिना कारण बताए गुर्जर जाति को जेल भेज दिया जाता था। इन अत्याचारों से परेशान होकर यह जाति गंगा जमुना के खादर में अपना जीवन निर्वाह करने लगी। इस एक्ट को प्रथम उप-प्रधानमंत्री एवं गृहमंत्री सरदार बल्लभ **भाई पटेल** ने समाप्त किया था। वे सेना में गुर्जर ऐजीमेन्ट भी बना देते अगर वे जीवित होते। इसका कारण यह हुआ कि यह जाति शिक्षा से वंचित रह गई। इसीलिए इस जाति में नारी शिक्षा का अभाव रहा। इसीलिए यह जाति महान पूर्वजों के आदर्शों को भूल गई। इस जाति का पतन हो गया जब-जब इस जाति में महान नारियों ने जन्म लिया तो इस जाति ने सूर्य के समान अपना स्थान बनाया। इन महान नारियों का वर्णन इस प्रकार से है। मथुरा जिले के गाँव बरसाने में **मुखिया वृषभान जी** के यहाँ (आदिशक्ति दुर्गा) ने **राधा** रूप में जन्म लिया। राधा (संसार में) प्रसिद्ध नारी के रूप में उल्लेखनीय है। आज भी कृष्ण जी राधे कृष्ण के नाम से जाने जाते हैं। राधा की अन्त: भक्ति थी। वासुदेव के अभिन्न मित्र **नन्द बाबा** भी गुर्जर थे। **माता यशोदा** भी गुर्जर माता थी। भगवान कृष्ण की सभी गोपियाँ गुर्जर कन्याएँ थीं। दिल्ली के महान शासक **राजा अनंगपाल तंवर** की बड़ी बेटी **महारानी एश्वर्यराज** के पैदा हुए थे **पृथ्वीराज चौहान**। **महारानी सुरूची** के पैदा हुए थे **सम्राट भोज** जो कि गुर्जर प्रतिहार वंश के प्रसिद्ध राजा हुए। जहाँ तक मित्रता का प्रश्न है। **राजा नल** पर विपदा पड़ने पर उनके मित्र **मनसुख गुर्जर** ने ही साथ दिया था। महाभारत काल में अर्जुन के अभिन्न मित्र **सम्राट सात्यकी** भी गुर्जर राजा थे। राजस्थान के इतिहास में **पन्नाधाय** भी गुर्जर माता थीं जिन्होंने अपने बेटे **चन्दन सिंह** का बलिदान करके राजा उदयसिंह को बचाया था। जिससे राजपूत वंश आगे चला। **महारानी जीजाबाई** भी (बैसलें) गुर्जर माता थीं। जिनके आदर्श पर उनका बेटा **वीर शिवाजी** इतिहास के स्वर्ण अक्षरों में लिखा जाता है। गुजरी माता से पैदा हुए **गुरु गोविन्द सिंह** जिन्होंने अपने सिक्ख धर्म को बचाया। **माता गायत्री देवी** ने राय बहादुर गुर्जरमल मोदी जैसे उद्योगपति को पाला था जिसने उद्योग जगत महकाया। **माता तैजकोर** के पैदा हुए **राजा जैतसिंह** जिन्होंने अपने पूर्वजों की रियासत को मुगलों से वापस लिया। **माता सेज्जाबाई पटेल** के पैदा हुए **सरदार बल्लभ भाई पटेल**, जिन्होंने भारत गणतंत्र की स्थापना की थी। **माता विश्वेन्द्रकौर** के पैदा हुए **हरि सिंह नलवा** जिन्होंने काबूली पठानों को पराजित किया और **माता प्राणकौर** के **राव कदमसिंह** पैदा हुए जिन्होंने लार्ड डलहौजी की कूट-नीतियों को रोका। इस प्रकार गुर्जर जाति में महान नारियाँ पैदा हुईं जिन सबका विवरण नहीं दिया जा सकता। मैंने संक्षेप में कुछ गुर्जर माताओं का उल्लेख किया है।''

''मुझे अपने पूर्वजों के इतिहास के प्रति जिज्ञासा कैसे पैदा हुई। जब मैं कानपुर विश्वविद्यालय कानपुर में परास्नातक की शिक्षा ग्रहण कर रहा था। तब **आलोक सिन्हा जी**, इतिहास के प्रवक्ता थे। उन्होंने मेरठ की क्रान्ति का उल्लेख किया और उन्होंने **राव कदम सिंह जी** के बारे में बताया तथा दूसरी घटना 16 अप्रैल, 1986 ई० की हैं तत्कालीन मुख्यमंत्री पंडित नारायणदत्त तिवारी जी के साथ में संसदीय कार्य एवं गृह राज्यमंत्री चौ० हुकुमसिंह जी भी थे तब बड़े मन्दिर दिगम्बर जैन मन्दिर के इतिहास का उल्लेख किया गया। तब जैन समाज के संचालक ने **राजा नैन सिंह** के इतिहास का बखान किया और बताया कि राजा नैन सिंह जी ने मन्दिर के लिए भूमि प्रदान की थी और इस मन्दिर का शिलान्यास भी स्वयं राजा साहब ने किया था। इस प्रकार की गौरवगाथा मै हमेशा अपनी ताई, दादी और माता **श्रीमती संतोष नागर** से सुनता रहता था। हमारी माताएँ लौरी गीत के माध्यम से लार्ड डलहौजी को कोसती रहती थीं। मेरी माता जी **पधान हंसा सिंह बैसले** (जेवरी वाले) की छोटी बहन थीं। मेरे नाना **स्व. लाल सिंह जेवरी** ग्राम के जमींदार थे। उनके दो पुत्र और तीन पुत्रियाँ थीं। उनकी तीनों पुत्रियाँ महान आदर्शवादी नारी थीं। उनके आदर्शवादी होने से उनकी छाया का असर मेरे अंदर भी पड़ा। तभी मेरे मन में अपने पूर्वजों के इतिहास के प्रति जाग्रति पैदा हुई।

कु० प्रताप सिंह नागर (सचिव)
राजा नैन सिंह स्मारक समिति कस्बा-बहसूमा (मेरठ)

संक्षेप में विवरण

समाज के युवक एवं युवतियाँ उन महापुरुषो से प्रेरणा लेकर समाज की बुराईयों को सुधारने का प्रयास करें। महाभारत युद्ध में यदुवंशीयों की सेना बची थी। भगवान वासूदेव ने 35 वर्ष तक राज्य करने के पश्चात् अपने ऊपर लगे शॉप को सार्थक करते हुए 56 करोड़ यदुवंशीयों के (आपस में लड़कर) इस संसार से चले गये थे। स्वयं वासूदेव श्री कृष्ण (पीपल के वृक्ष) के नीचे (जरा, नामक बहेलिया) के बाण लगने के कारण इस संसार को छोड़कर स्वर्ग धाम को चले गये थे। भगवान वासूदेव श्रीकृष्ण के वंश में (भोज वंश) जो कि बचा था। इसी वंश में केवल चौदह हजार पैसठ देव तुल्य व्यक्ति बचे थे। इसी वंश के सम्राट सात्यकि जो कि महाभारत युद्ध में कौरव सेना में किसी भी योद्धा से नहीं हारे थे। जयदरथ वध में तो सम्राट सात्यकि और कर्ण का आमना-सामना हुआ था। कर्ण को पराजित कर दिया था सम्राट सात्यकि ने इसलिये महाभारत युद्ध में वे अजेय योद्धा के रूप में विख्यात हुए थे। उनके पुत्र सार्वधन कुमार से आगे वंश चला जो बाद में गुर्जर प्रतिहार वंश के रूप में परिवर्तित हो गया था। उनके वंश में आगे चलकर सम्राट कनिष्क पैदा हुऐ। इन्होंने शक संम्वत चलाया था और मथुरा से कश्मीर तक अपने राज्य का विस्तार किया। देश के सम्राट विख्यात हुऐ। इसी वंश में गुजंरावाला राज्य के राजा पोरस हुऐ जब सिकन्दर विश्व विजेता रूप में भारत युद्ध करता हुआ आया तो झेलम नदी किनारे तिस्सा का युद्ध हुआ। यह युद्ध सिकन्दर और पोरस के बीच हुआ। इस युद्ध में पोरस की हार तो हुई परन्तु पोरस के साहस और धेर्य के कारण सिकन्दर को उनके सामने झुकना पड़ा था। सिकन्दर ने तभी युद्ध को समाप्त कर दिया था। सम्राट विक्रमादित्य उज्जैन के सम्राट थे। सम्वत को चलाया था और त्रैतायुग के समय से विरान पड़ी अयोध्या को पुन: आबाद किया था। जिसके अवशेष भारत सरकार ने माननीय सर्वोच्च-न्यायालय में दाखिल किये थे। उसी वजह से राम मन्दिर का बनने का मार्ग प्रसस्त हुआ। ऐसे महान शासक आपके समाज से तालुक रखते थे। सम्राट, कन्नौज महीपाल के पोते सम्राट राज्यपाल जो कि गुर्जर प्रतिहार वंश के 12 वें शासक थे। जब मौहम्मद गजनवी ने वर्ष 1018 ई. में कन्नौज पर आक्रमण किया तो उस युद्ध में मौहम्मद गजनवी की हार हो गई थी। वापस गजनी चला गया था। परन्तु पुन: मौहम्मद गजनवी अरावली पहाड़ियों के रास्ते आकर गुजरात प्रान्त पर आक्रमण किया था। भीमदेव (प्रथम) के पुत्र उस समय काठवाडा सम्राट जयपाल सिंह से गजनवी का भयंकर युद्ध हुआ। उस युद्ध में गजनवी की हार हुई। परन्तु गजनवी के सेना के सिपाहियों, पुजारीयों को अपने कब्जे में कर लिया था। पुजारीयों ने गद्दारी की और सुरंग का रास्ता उन्हें बता दिया था। उसी रास्तें से महलों में प्रवेश किया। रानी को कब्जे करके। गजनवी ने सोमनाथ मन्दिर लूटा था लगभग 200 कुन्टल सोना लूट कर गजनवी ले गया था। इसलिऐ पुजारीयों की गद्दारी के कारण ऐसा हुआ था। वीर शिवाजी की मुगल सल्तनत से लड़ाई जंग जाहिर है। वीर शिवाजी के सेनापति प्रताव राव गुर्जर थे। उस महान सेनापति के रणकौशल की वजह से शिवाजी का परचम लहराया। कलयुग के शुरू में ही हस्तिनापुर में सर्प नाशक यज्ञ हुआ था। इसी यज्ञ समाप्त के पश्चात् महर्षि वेद व्यास जी द्वारा राजा जनमेयजय को उनके पूर्व की महाभारत के बारे में बताया और कहा किसी वंश का अन्त नही किया जा सकता है और नागवंश (मध्य कलयुग) में जब विदेशी शासकों या दूसरे धर्म का शासन होगा। तब इसी नागवंश में (एक बालक का जन्म) होगा और आपके पिता द्वारा बसाये नगर (परीक्षितगढ़) को दूसरे समुदाय के राजा से राज्य हीन कर इस नगर को स्वतन्त्र करेगा। वह बालक कुंवर जैत सिंह है। इसी बालक को भगवान शिव ने दर्शन दिये और मौहम्मद शाह की सेना के तीनों सेनापति को मार गिराया। परीक्षित गढ़ में नागवंश (नागर) की राजधानी स्थापित की। जब भारत वर्ष में विदेशी ताकत ब्रिटिस शासक का राज्य था तो लार्ड डलहौजी गर्वनर जनरल थे। तब लौजी लकसी एक्ट जिसे राज्य हड़प्पन नीति कहते है। सर्व प्रथम भारत वर्ष में किला परीक्षितगढ़ के राजा कदम सिंह ने अंग्रजों के खिलाफ 10 मई 1857 क्रान्ति की शुरूआत की थी। 14 महीने अग्रेंजों से संघर्ष किया था। अन्त में वीरगति को प्राप्त हुऐ। महाराजा पटियाला रणजीत सिंह के प्रधान सेनापति वीर हरि सिंह नलवा जिन्होने यवनो एवं मुगलो को भारत वर्ष में घुसने नहीं दिया। यह वीर योद्धा भी इसी समाज के थे। जिन्होंने भारत वर्ष में परचम लहराया था।

समाज के युवक एवं युवतियों को समझना चाहिये और जिस समाज में ऐसे महान शासक और योद्धा हुऐ। ऐसे समाज के पढ़े लिखे व्यक्तियों को आगे आना चाहिये। समाज में फैली कुरीतियों को दूर-करें। नहीं तो आज से लगभग 3500 वर्ष पूर्व जब यदुवंशी आपस में लड़ाई झगड़े कर रहे थे और शराब पीकर आपस में भिड़ गये थे। वासूदेव श्री कृष्ण ने अपने सामने यदुवंशीयों का विनाश कराया। चूकि भगवान वासूदेव चाहते थे यदुवंशी आपस में न लड़े और शराब (मघनिषेघ) का सेवन न करे। परन्तु यदुवंशी नहीं माने थे। ऐसी दशा आज (गुर्जर जाति) की है। शराब पीना और विवाह शादी में अधिक खर्च करना और आपस में मतभेद रखना। मत्यु भोज पर अधिक खर्च करना है। ऐसी दशा में उस समाज का पतन हो जाता है। जो समय के अनुसार नहीं चलते है। ऐसी दशा गुर्जर समाज की है। अगर समाज को अधिक समय तक चलना है। यज्ञ करें। शराब सेवन बन्द करे। यज्ञ आपके पूर्वजो ने किये है। जिन्होंने परचम लहराया था।

आपका शुभचिन्तक
कुंवर प्रताप सिंह नागर

विषय-सूची

1. त्रैतायुग की सूर्यवंश की वंशावली 1-5
2. द्वापर युग की चन्द्रवंश की वंशावली 6-17
3. कलयुग में राजा परीक्षित सर्प द्वारा डसना एवं राजा जनमेयजय का सर्पनाशक यज्ञ करना 18-25
4. कलयुग में प्राचीन भारत में गुर्जर प्रतिहार वंश 26-31
5. राजा जैत सिंह नागर द्वारा परीक्षितगढ़ राज्य की पुनः स्थापना करना 32-40
6. राजा नैन सिंह का शासन 41-49
7. राजा नत्थासिंह नागर एवं रानी लाडकौर 50-54
8. कुँवर कदम सिंह (1857 की क्रान्ति के नायक) 55-59
9. राजा रगबीर सिंह (लण्डौरा) 60-64
10. स्वतन्त्रता संग्राम में गुर्जरों की भूमिका 65-68
11. 1857 की क्रान्ति के पश्चात् अंग्रेजों द्वारा गुर्जर जाति पर किये गये अत्याचार 69-71
12. ईसा पूर्व गुर्जर साम्राज्य 72-85

- शुभकामना संदेश 86-111
- राजा नैन सिंह स्मारक समिति का गठन 112-118
- राजा नैन सिंह स्मारक समिति का संचालन मण्डल 119-122
- राजा नैन सिंह मागदर्शक समिति 123-125
- संदर्भ साहित्य 126-128

"जो भरा नहीं है भावों से, बहती जिसमें रसधार नहीं।"
वो हृदय नहीं पत्थर है, जिसको स्वदेश से प्यार नहीं।।

राजा जैत सिंह जी, राजा किला परीक्षितगढ़, मेरठ

1749-1780

किला परीक्षितगढ़ एवं बहसूमा
महाराजाधिराज नैन सिंह जी

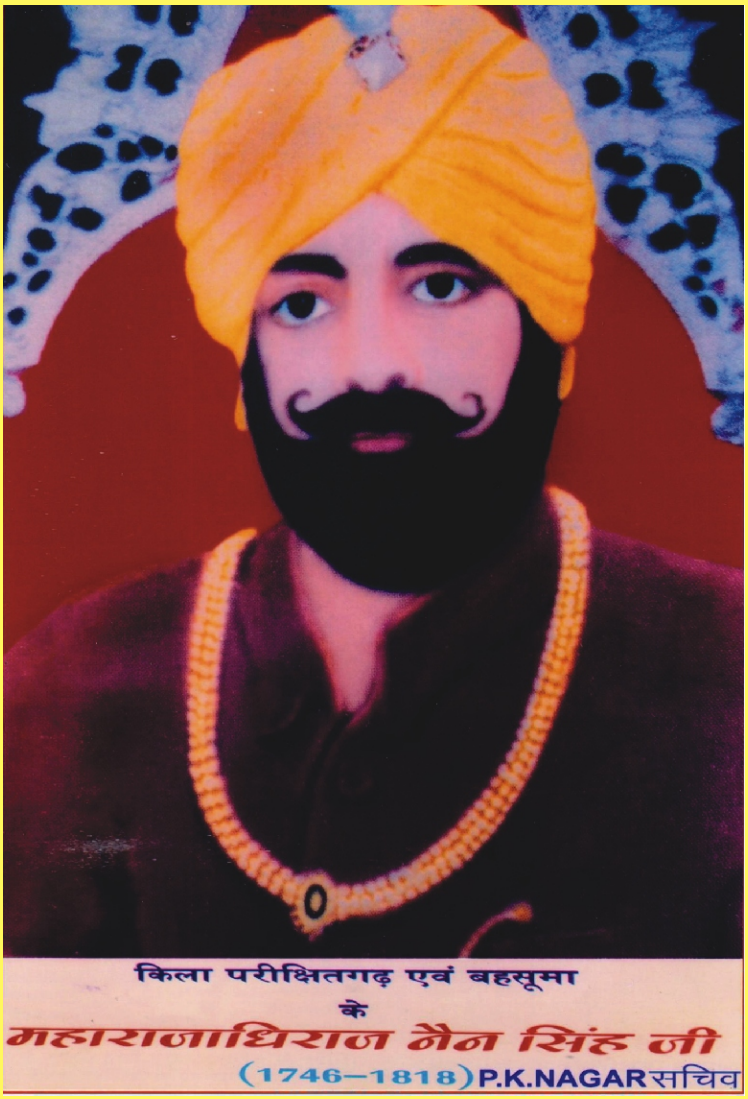

1746-1818

अध्याय 01

त्रैतायुग की सूर्यवंश की वंशावली

प्रस्तावना

गुर्जर प्रतिहार वंश के विषय में पुराणों से लेकर इतिहास के ग्रंथों तक काफी लिखा जा चुका है। इनके सम्बन्ध में दो मत मिलते है।

1. गुर्जर भारतीय क्षत्रियों की संतान है और भारतीय मूल के निवासी है।
2. कुछ इतिहाकार इन्हें आर्य एवं हूणो के साथ आये क्षत्रिय मानते है जिन्हे मध्य एशिया से आना बताया गया है।

इतिहासकारों का एक बड़ा वर्ग यह स्वीकार करता है कि गुर्जर भारतीय है और उनका सम्बन्ध रधुवंशी क्षत्रियों से है। कई इतिहासकारों ने गुर्जर क्षत्रिय वंश को मूल भारतीय निवासी और श्रीराम के वंशज बताया है। **डा. के. एम. मुन्शी, डा. बी. एन. पुरी, सी.बी., वैद्य, डा. सत्यप्रकाश, जी.एच. ओझा, डा. डी.सी. गांगुली, आर.एस. त्रिपाटी, दशरथ शर्मा, डा. डी. आर मकनद, कृष्ण स्वामी आयंकर, आनन्द-स्वरूप मिश्रा, अवध बिहारी त्रिपाटी, डा. चिंत्तामणी, राणा अली चौहान** (पाकिस्तान) **डा. यतेन्द्र कुमार वर्मा** और **रतनलाल वर्मा** आदि इतिहासकार अपने मत की पुष्टी करते हुऐ, उनके उद्धरण प्रस्तुतकर गुर्जर क्षत्रिय वंश को भारतीय मूल के क्षत्रिय सिद्ध करते हुऐ दिखाई देते है।

डा. के. एम. मुन्शी

No one can say, What percentage of Aryan, Dravidian, or say then blood, ran in the veins of any Indian between the 6th and 13th centuries. But at the begining of the 6th century. A.C. when the Brahmana Kshatriyas and Vaisyas of Gurjaradesa the ancestors of the Brahmanas. Rajputs and Banias of modern Rajputana, Malva and Gujarat emerged into history they were steeped in the highest. Traditions of Aryan culture in India and knew no other origin or mother land.

डा. बी. एन. पुरी

The probability seems to be that the Gurjaras like so many other Indian Tribes were living in obesurity some where in Rajputana and it was only the just for power which impelled than to migrate from their homeland. They came into contact with others and carved out a number of kingdoms which eventually formed the nucleus of the big Gurjara empire also one of the name Gurjara in early records or literature is no ground for doubting their indigenous origin.

उपरोक्त इतिहासकारों ने इस प्रकार से उद्धरण प्रस्तुत करके अपने मत की पुष्टी की है।

कुछ इतिहासकारों का मत है कि आर्य एवं श्वेत हुणो के तुरन्त बाद भारत में गुर्जर अकेले या उनके साथ आये। यह बताया गया कि गुर्जर मध्य एशिया से आये परन्तु इतिहासकार इसका प्रमाण प्रस्तुत नही कर सके और मध्य एशिया के किस स्थान से आये इस पर भी प्रश्न चिन्ह लगा है।

बी. ए. स्मिथ

The Gurjaras are believed to have entered India either along with or soon after the white Huns and to have settled in large numbers in Rajputana but there is nothing to show what part of Asia they came from or to what race they belonged.

बी. ए. स्मिथ ने उपरोक्त मत प्रस्तुत किये है। अत: इतिहासकारों ने मध्य एशिया का स्थान नहीं बताया है। इसलिऐ उनका दिया गया तर्क अधूरा प्रतीत होता है।

गुर्जर क्षत्रिय वंश को भारतीय सिद्ध करने में लगभग **25** इतिहासकार शामिल है। जिन्होनें अपने उद्धरण प्रस्तुत कर पुष्टी की है तथा लगभग **5** इतिहासकार (**2** भारतीय तथा अन्य सभी विदेशी) इन्हें विदेशी मूल का क्षत्रिय मानते है। परन्तु ये अपने मत की सही पुष्टी नहीं कर सके है। मैं भी उपरोक्त लिखे गये इतिहासकार डा. के. एम. मुन्शी आदि इतिहासकारों के मत से सहमत हूँ। अन्य इतिहासकारों के मत से सहमत नहीं हूँ। मेरे द्वारा दर्शायी गयी सूर्यवंश की वंशावली उचित प्रतीत होती है। जो मेरे द्वारा सूर्यवंश एवं चन्द्रवंश की वंशावली है।

सूर्य वंश की वंशावली (भगवान श्री राम) का वर्णन

॥ ॐ नमः शिवाय ॥

''ॐ नमौः भगवते वासुदेवाय नमः''

'' ऊँ, स्थिर, स्थाणु, प्रभु, भानू, प्रवर, वरद, वर, सर्वात्मा, सर्व विख्यात, सर्व, सर्वकर, भव, जटी, दण्डी, शिखण्डी, सर्वज्ञ, सर्वभावन, हरि, हरिणाक्ष, सर्वभूतहर, स्मृत, प्रवृत्ति, निवृत्ति, शान्तात्मा, शाश्वत, ध्रुव, श्मशानवासी, भगवान, रक्वर, गोचर, अर्दन, अभिवाध, महाकर्म, तपस्वी, भूतधारण, उन्मत्तवेष, प्रच्छन्न, सर्वलोक, प्रजापति, महाकाल, महारूप, सर्वरूप, महामंश, 11''

उपरोक्त सभी नामों से भगवान शिव की आराधना की जाती है । अराध्य शिव सर्वव्यापी हैं । पुरुषोत्तम राम की वंशावली का वर्णन करता हूँ ।

यह वंश रघुवंश से बदलकर सूर्यवंश हो गया था तथा द्वापर युग में चन्द्रवंश की वंशावली जिसमें योगीराज भगवान कृष्ण का जन्म हुआ । जो निम्न प्रकार है–

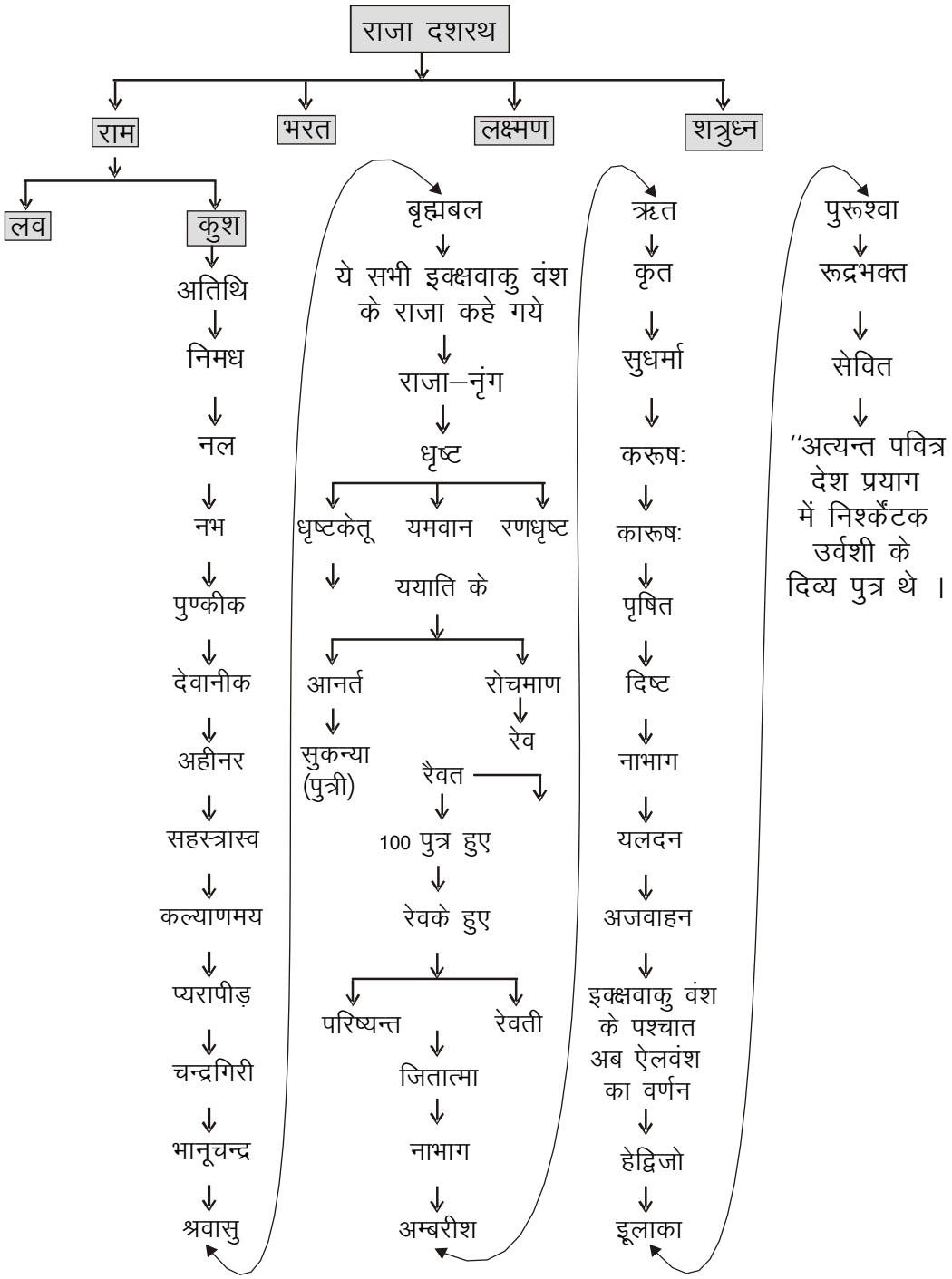
राजा दशरथ
राम
भरत
लक्ष्मण
शत्रुध्न
लव
कुश
अतिथि
निमध
नल
नभ
पुण्कीक
देवानीक
अहीनर
सहस्त्रास्व
कल्याणमय
प्यरापीड़
चन्द्रगिरी
भानूचन्द्र
श्रवासु
बृह्मबल
ये सभी इक्ष्वाकु वंश के राजा कहे गये
राजा–नृंग
धृष्ट
धृष्टकेतू
यमवान
रणधृष्ट
ययाति के
आनर्त
रोचमाण
सुकन्या (पुत्री)
रेव
रैवत
100 पुत्र हुए
रेवके हुए
परिष्यन्त
रेवती
जितात्मा
नाभाग
अम्बरीश
ऋत
कृत
सुधर्मा
करूषः
कारूषः
पृषित
दिष्ट
नाभाग
यलदन
अजवाहन
इक्ष्वाकु वंश के पश्चात अब ऐलवंश का वर्णन
हेद्विजो
इूलाका
पुरूश्वा
रूद्रभक्त
सेवित
''अत्यन्त पवित्र देश प्रयाग में निश्कैंटक उर्वशी के दिव्य पुत्र थे ।

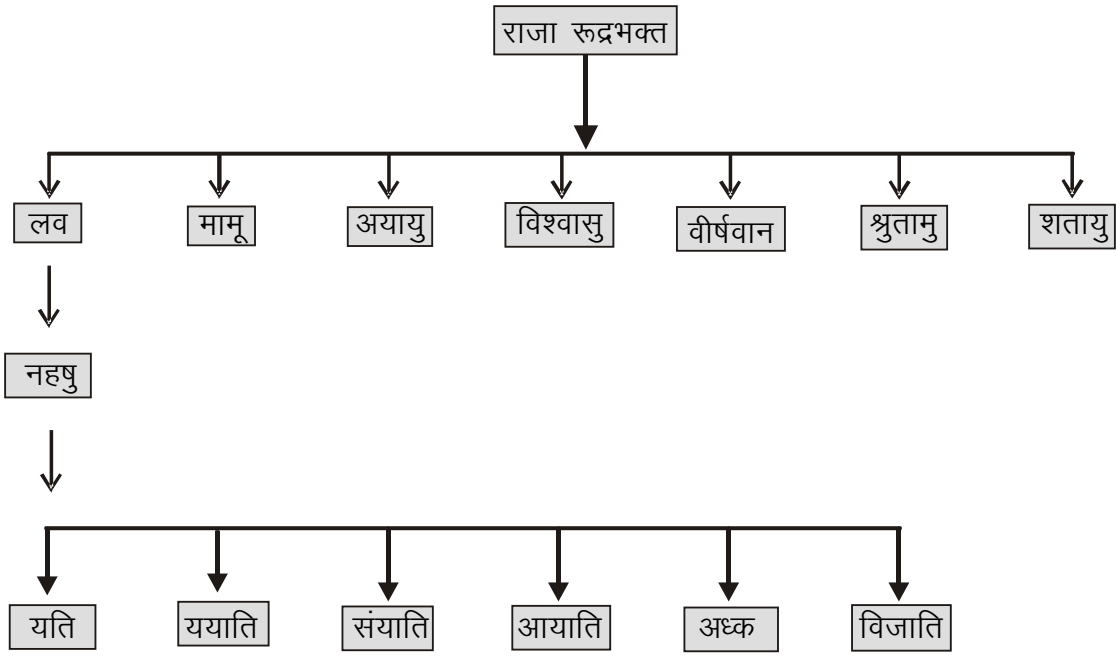

''**नहषु** के बड़े पुत्र **यति** उनके ज्येष्ट पुत्र थे और **ययाति** उनसे कनिष्ट थे। ज्येष्ट पुत्र यति–(मोक्ष) की इच्छा थी। वे ब्रह्मस्वरूप हो गये थे। शेष पाँच पुत्र बचे।

राजा नहषु के शेष पाँच पुत्र बचे। उनमें **यंयाति** महापराक्रमी और बलशाली था। उसने राजा बनने के पश्चात समस्त भूमण्डल पर अपना राज्य स्थापित कर लिया था। राजा यंयाति से ही चन्द्रवंश का उदय होता है। उन्हीं के समय से द्वापर प्रारम्भ होता है।

अध्याय 02

द्वापर युग में चन्द्रवंश की वंशावली

प्रथम भागः चन्द्रवंश की वंशावली प्रारम्भ

राजा नहुष के शेष पाँच पुत्र की वंशावली निम्न प्रकार–

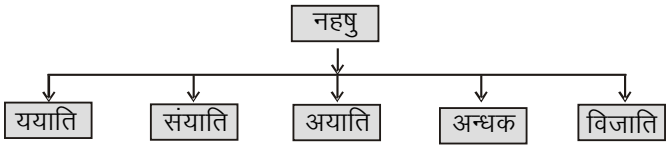

उन पाँचों में से **ययांति** बल और पराक्रम से सम्पन्न था । उसने **उराना** (शुक्राचार्य) की पुत्री देवयानी से शादी की और **वृषपर्वा** की पुत्री आसुरी–**शर्मिष्टा** को भी भार्या रूप में प्राप्त किया।

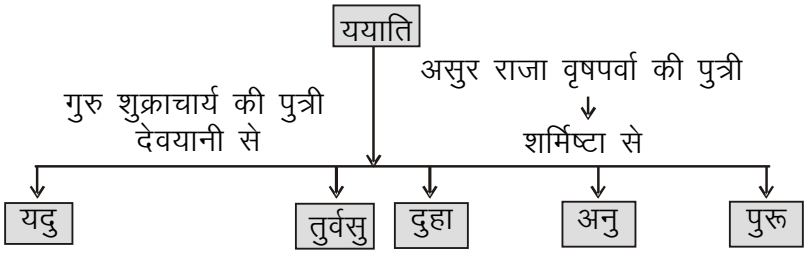

रानी देवयानि के दोनों पुत्र उत्तम कर्म वाले प्रशंसकीय तथा विद्या में प्रवीण थे ।

वृषपर्वा की पुत्री **शर्मिष्टा** ने **द्रुहा, अनु** और **पुरू** को जन्म दिया ''उन ययाति के द्वारा सन्तुष्ट किये गये प्रतापी विप्रेन्द्र शुक्राचार्य ने प्रसन्न होकर उन ययाति को दो अक्षप महान, तरकस और अत्यन्त चमकीला सुन्दरतापूर्वक स्वर्णमय, दिव्य तथा मन के समान वेग वाले घोड़ों से जुता हुआ रथ प्रदान किया । जिससे वह कन्या को (देवयानी, अपने घर) लाया था । उसने उस रथ से छः महीने के भीतर ही (सम्पूर्ण) पृथ्वी को जीत लिया था ।''

राजा ययाति ने ज्येष्ठ पुत्र **यदु** को राज्य नहीं दिया था । अन्य तीन, **तुर्वसु, द्रुहा** और **अनु** को भी राजा नहीं बनाया था। राजा ययाति ने इन चारों पुत्रों को अलग-अलग दिशाओं में भेज दिया था। क्रम से निम्न है–

1. ज्येष्ठ पुत्र **यदु** को दक्षिण दिशा में भेजा ।
2. ज्येष्ठ पुत्र **तुर्वसु** को दक्षिण पूर्व दिशा में भेजा ।
3. ज्येष्ठ पुत्र **द्रुहा** को पश्चिम दिशा में भेजा ।
4. ज्येष्ठ पुत्र **अनु** को उत्तर दिशा में भेजा ।

राजा ययाति ने अपने सबसे छोटे पुत्र **पुरू** को (राज्य पर) अभिषिसक किया था। क्योंकि पुत्र पुरू ने उन पर उपकार किया था । इसलिए उसी को राज्य का उत्तराधिकार दिया था।

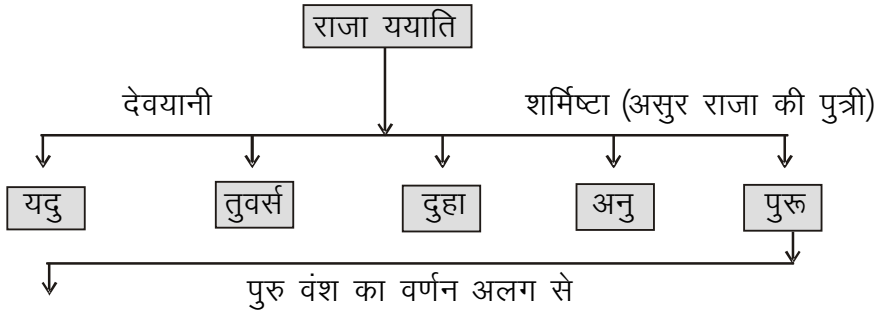

पुरू की पत्नी कौशल्या से जनमेपजय पैदा हुए और जनमेपजय की पत्नी **अजन्ता** से पैदा हुए प्रस्विखान तथा प्रचिन्वान की पत्नी **अशयकी** से **संयाति** हुआ । **संयाति** की **वरागी** नामक पत्नी से **(अहंयातिका)** का जन्म हुआ और अहंयातिका की पत्नी **भानुमति** से **सार्वभौम** पैदा हुए । सार्वभौम की पत्नी **सुनैना** से **जयत्सेन** पैदा हुए । जयत्सेन पत्नी **सुश्रवा** से **अवाचीन** का जन्म हुआ । अवाचीन की पत्नी से अरिह पैदा हुए और अरिह की पत्नी **खल्वागी** से **महायौम** पैदा हुए । महायौम की पत्नी **अपक्षा** से **अयुवनामी** पैदा हुए । अयुतनामी की पत्नी **काया** से **अक्रोधन** पैदा हुए । अक्रोधन की पत्नी **करम्या** से **देवातिथि** पैदा हुए । देवातिथि की पत्नी **मर्यादा** से **अरिह** पैदा हुए । अरिह की पत्नी **सुदेवा** से **ऋक्ष** पैदा हुए ।

ऋक्ष की पत्नी **ज्वाला** से **मतिनार** का जन्म हुआ ''उसने सरस्वती के तट पर बारह वर्ष तक सर्वगुण सम्पन्न यज्ञ किया । यज्ञ समाप्त होने पर सरस्वती ने उससे विवाह कर लिया'' उसके गर्भ से **तंसु** पैदा हुए । तंसु की पत्नी **कालिंगी** से **ईलिन** हुआ । ईलिन की पत्नी **रथन्तरी** से **दुष्यन्त** आदि पाँच पुत्र पैदा हुए । दुष्यन्त की पत्नी **शकुन्तला** से **भरत** पैदा हुआ । ''भरत के नाम से भारतवर्ष नाम पड़ा ।'' भरत की पत्नी **सुनन्दा** से **भुमन्यु** पैदा हुए । भुमन्यु की पत्नी **विजमा** से **सुहोत्र** पैदा हुए । सुहोत्र की पत्नी से **हस्ती** का जन्म हुआ। ''सुहोब के पुत्र **हस्ती ने ही हस्तिनापुर को बसाया**, पहले इस स्थान को **कंजरीवन** के नाम से जाना जाता था। **राजा हस्ती** द्वारा बसाये गये नगर को **हस्तिनापुर कहते हैं।** राजा हस्ती की पत्नी **यशोधरा** के गर्भ से **विकुण्ठन** पैदा हुए । विकुण्ठन की पत्नी **सुदेवा** से **अजमीढ़** पैदा हुए ।

''राजा अजमीढ की कई शादियाँ हुई थीं । जिससे 124 पुत्र पैदा हुए थे । सभी विभिन्न वंशों का वर्णन प्रवर्तक हुए । उनमें भरत वंश के प्रवर्तक का नाम था **संवरण** पैदा हुए थे । संवरण की पत्नी–**तपसी** के गर्भ से **कुरू** का जन्म हुआ ।

कुरू वंश का नाम पड़ा

कुरू की पत्नी–**शुभागी** से **विदूरथ** पैदा हुए थे विदूरथ की पत्नी **सप्रिमा** से **अनश्वा** पैदा हुए । अनश्वा की पत्नी **अमृता** से **परीक्षित** पैदा हुए । परीक्षित की **सुयशा** से **भीमसेन** पैदा हुए। भीमसेन की पत्नी **कुमारी** से **प्रतिश्रवा** पैदा हुए । प्रतिश्रवा की पत्नी से प्रतीप पैदा हुए । प्रतीप की पत्नी **सुनन्दा** के गर्भ से तीन पुत्र पैदा हुए **देवापि**, **शान्तनु** और **बाहीक**।

देवापि बचपन से तपस्या करने चले गये थे । इसीलिए हस्तिनापुर के राजा **शान्तनु** बने । ''राजा शान्तनु की विशेषता थी वे जिस बूढ़े को अपने हाथों से छू देते थे वह फिर जवान और सुखी हो जाता था । इसी से उनका नाम शान्तनु पड़ा ।''

राजा शान्तनु का विवाह **भागीरथी गंगा** से हुआ था । जिससे **देवव्रत** का जन्म हुआ । वे जगत में भीष्म के नाम से प्रसिद्ध हैं । **भीष्म** ने अपने पिता की प्रसन्नता के लिए **सत्यवती** के साथ उनका विवाह करा दिया था ।

उसके गर्भ से **विचित्र वीर्य** और **चित्रांगद** दो पुत्र हुए । चित्रांगद बचपन में ही गन्धर्व के हाथ से मारा गया । विचित्र वीर्य राजा बना । उनके दो पत्नियाँ थीं **अम्बिका** और **अम्बालिका** । वह संतान होने से पहले ही मर गया ।

''उसकी माता सत्यवती ने सोचा कि अब तो दुष्यन्त के वंश उच्छेद हुआ । उसने व्यास का स्मरण किया । उनके आने पर कहा कि ''तुम्हारा भाई'' बिना संतान के मर गया । तुम वंश की रक्षा करो । व्यास जी ने माता की आज्ञा स्वीकार करके **अम्बिका** से **धृतराष्ट्र**, **अम्बालिका** से **पाण्डू** और **दासी** से **विदुर** को उत्पन्न किया ।''

व्यास जी के वरदान से **धृतराष्ट्र** के सौ पुत्र हुए । उनमें से चार प्रधान थे । **दुर्योधन, दुःशासन, विकर्ण** और **चित्रसेन** । **पाण्डु** की पत्नी **कुन्ती** से तीन पुत्र हुए–**युधिष्ठिर**, **भीम** और **अर्जुन** । तथा उनकी दूसरी पत्नी माद्री से दो पुत्र हुए–**नकुल** और **सहदेव** ।

राजा द्रुपराज की पुत्री **द्रोपदी** से पाँचों का विवाह हुआ । द्रोपदी के गर्भ से पाँचों पाण्डवों के क्रमशः **प्रतिविन्धय, सुतसोम, श्रुतकीर्ति, शतन्तिक** और **श्रृवकर्मा** का जन्म हुआ था ।

''युधिष्ठिर की एक और पत्नी थी । उसका नाम **देविका** था उसके गर्भ से **मौर्धय** पैदा हुआ भीम के काशीराज की कन्या बलन्धरा से **सर्वग** नाम का पुत्र हुआ । अर्जुन ने भगवान श्रीकृष्ण की बहन **सुभद्रा** से विवाह करके **अभिमन्यु** नामक पुत्र उत्पन्न किया । वह बड़ा गुणवान और भगवान श्रीकृष्ण का प्रीतिपात्र था ।''

नकुल की पत्नी **करेणुमती** से निरभिदा पैदा हुए और **सहदेव** की **विजया** के गर्भ से **सुहोत्र** का जन्म हुआ । भीम की पत्नी **हिडिम्बा** के गर्भ से **घटोत्कच** नाम का पुत्र पैदा हुआ था परन्तु वंश का विस्तार अभिमन्यु से ही हुआ । इनके अतिरिक्त अर्जुन के दो पुत्र और थे, **उलूपी** से **इरावान** और **चित्रांगदा** से पुत्र **बभ्रवाहन**। वे दोनों अपनी-अपनी माता के साथ नाना के घर रहे और उन्हीं के उत्तराधिकारी हुए। **अभिमन्यु** का विवाह **उत्तरा** के साथ हुआ था । इसके गर्भ से एक मृत बालक का जन्म हुआ जिसे भगवान श्रीकृष्ण ने जीवित किया । उसकी मृत्यु **अश्वत्थामा** के अस्त्र से हो गई थी । इसलिए अश्वत्थामा ने तो कुरूवंश का अन्त कर दिया था। परन्तु भगवान श्रीकृष्ण की कृपा से वह जीवित हो गया । कुरूवंश के परिक्षण होने पर उनका जन्म हुआ । इसलिए वह **परिक्षित** के नाम से प्रसिद्ध हुआ । परीक्षित की पत्नी **माद्रवती** के पुत्र जनमेयजय पैदा हुए । राजा **जनमेयजय** की पत्नी **बहुष्टमा** के दो पुत्र पैदा हुए। **शतानीक** और **शंकुकर्ण**। शतानीक की पत्नी के **अश्वमेघदत्त** पैदा हुए। अश्वमेघदत्त की पत्नी से **अधिसीम कृष्णा** पैदा हुए और अधिसीम कृष्णा के पैदा हुए **निभक्षु**।

''राजा परीक्षित के पश्चात पाँचवीं पीढ़ी, राजा निभक्षु थे। इसके शासनकाल में लाल टिड्डियों का भयानक प्रकोप हुआ जिससे सारी फसल नष्ट हो गई थी तथा भीषण बाढ़ आ गई थी। उससे हस्तिनापुर का विनाश हो गया था। राजा निभक्षु ने अपनी राजधानी हटाकर प्रयाग के निकट कौशाम्बी में बनायी। यह हस्तिनापुर का प्रथम विनाश हुआ था।''

द्वितीय भाग

''इसके पश्चात यह नगर फिर बसा–परन्तु कुरू वंश का अन्त हो गया था । भगवान वेद व्यास जी ने राजा जनमेयजय से कहा था कि जिस नाग वंश की जाति का अन्त कराना चाहता है । उसी वंश का आगे चलकर हस्तिनापुर और परीक्षितगढ़ पर राज्य होगा'' और कुरू वंश का अन्त हो गया था ।

चन्द्रवंश का वर्णन राजा ययाति :–ज्येष्ठ पुत्र यदु के वंश का वर्णन कर रहा है । जिसमें कृष्ण जी का जन्म हुआ।

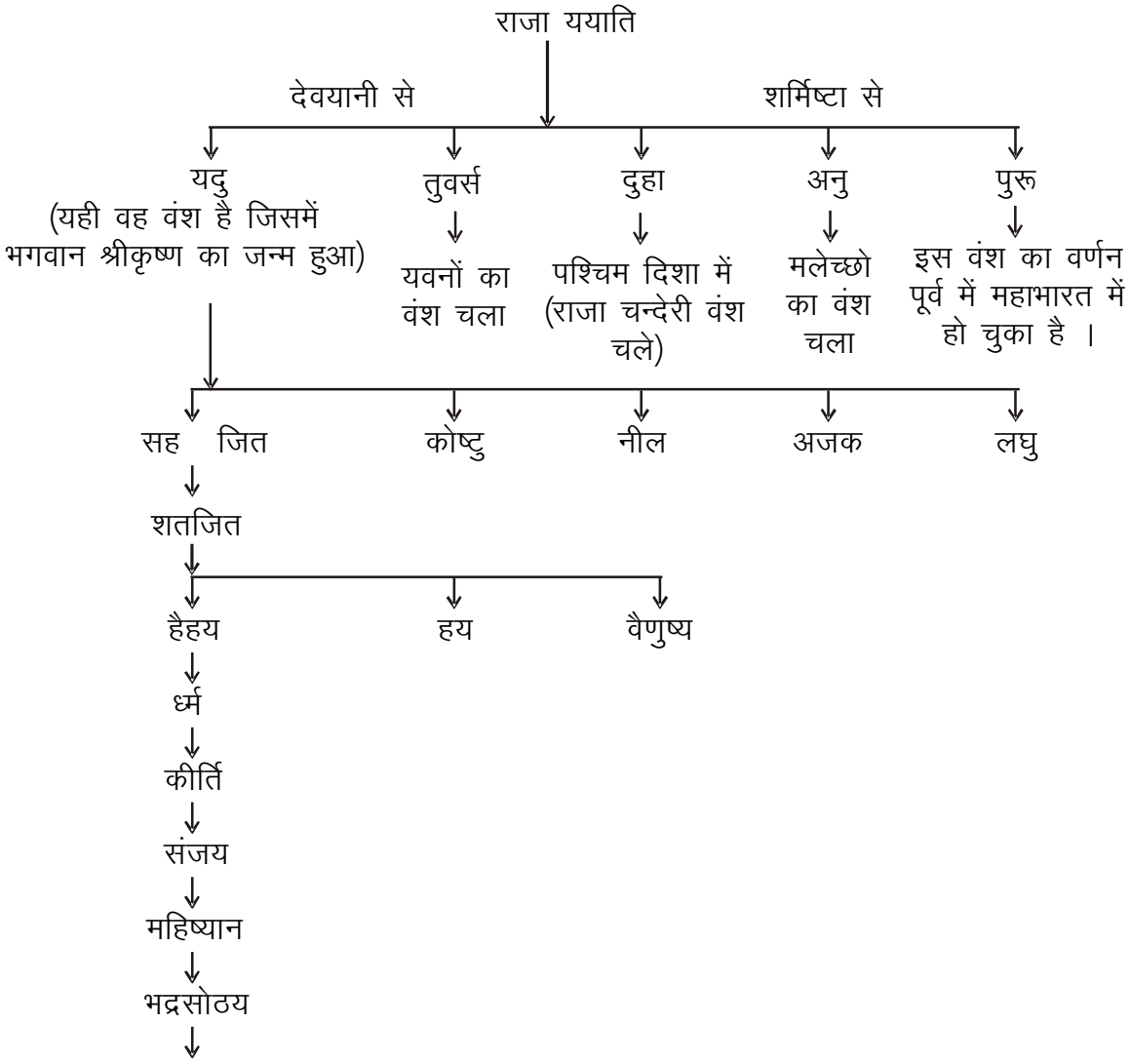

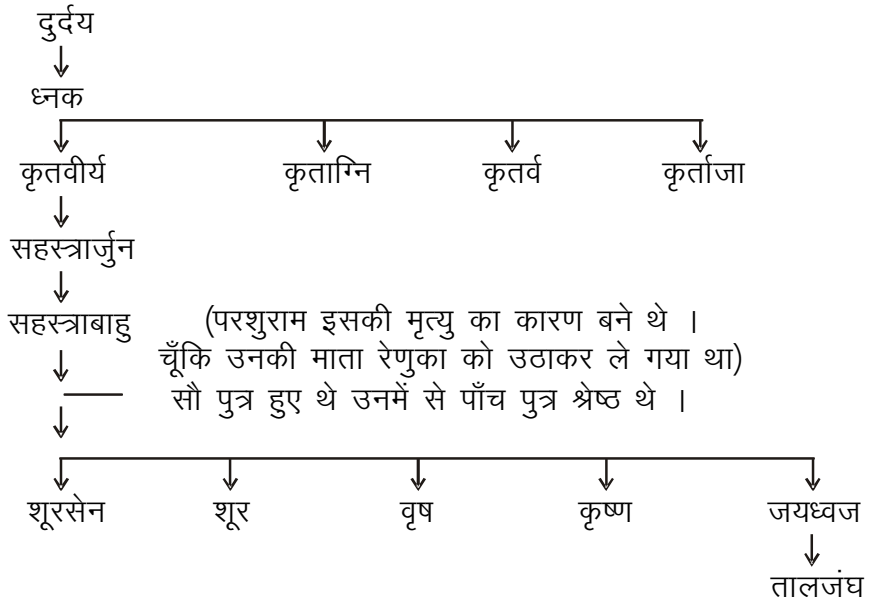

दुर्दय
↓
ध्नक
↓ कृतवीर्य ↓ कृताग्नि ↓ कृतर्व ↓ कृर्ताजा

कृतवीर्य
↓
सहस्त्रार्जुन
↓
सहस्त्राबाहु (परशुराम इसकी मृत्यु का कारण बने थे । चूँकि उनकी माता रेणुका को उठाकर ले गया था)
↓
—— सौ पुत्र हुए थे उनमें से पाँच पुत्र श्रेष्ठ थे ।
↓
↓ शूरसेन ↓ शूर ↓ वृष ↓ कृष्ण ↓ जयध्वज

जयध्वज
↓
तालजंघ

''तालजँघ के सौ पुत्र हुए थे । तालजँघ नाम से प्रसिद्ध हुए तथा उनमें वीतिहोदा ज्येष्ठ पुत्र थे ।

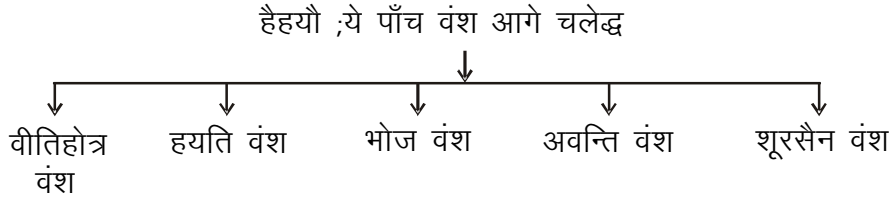

वृष–वंश कहलाये गये ।

मधु–सौ पुत्र पैदा हुए (वृण्णि वंश तथा मधु के वंश में भी माधव कहे गये)

वृण्णि–''वृण्णि वंश तथा मधु वंश में भगवान कृष्ण ने जन्म लिया ।''

हैहयौ ;ये पाँच वंश आगे चलेद्ध
↓
↓ वीतिहोत्र वंश ↓ हयति वंश ↓ भोज वंश ↓ अवन्ति वंश ↓ शूरसैन वंश

(शूर, शरसैन, ब्र्मा, कृज़्ण, जयध्वज आदि ये उत्तम हैहय कह गये)

शूर तथा शूरसैन वंशज बड़े शूरवीर वाले थे । हेहय अनध (ऋषियों) उन महात्माओं नाम वाले थे ।

वीतिहोत्र का पुत्र **अवर्त** नाम से प्रसिद्ध हुआ तथा **कृष्ण** का **दुर्जम** नामक पुत्र हुआ । वह शत्रुओं का दमन करने वाला था ।

अब राजर्षि क्रोण्ठू के उत्तम पौरुष वाले वंश का वर्णन कीजिए । जिनके कुल में वृण्णि वंश को चलाने वाले विष्णु–(भगवान कृष्ण) उत्पन्न हुए ।

क्रोष्टू का एक ही–**वृजिनीवान** नामक माध्यशस्वी पुत्र हुआ उसका पुत्र **स्वाती** हुआ । उस स्वाती का पुत्र **कुशकु** हुआ । अनेक प्रकार से महायक्षों के द्वारा भजन के परिणामस्वरूप उसका **चित्ररथ** नामक पुत्र हुआ तथा चित्ररथ का पुत्र पराक्रमशाली **शशबिन्दू** था वह चक्रवर्ती राजा हो गया। शशबिन्दू के हजार पुत्र उत्पन्न हुए। उनके पुत्रों में श्रेष्ठ पुत्र **'अनन्तक'** सबसे उत्तम पुत्र कहे जाते थे । अनन्तक के पुत्र हुए **यक्ष** और यक्ष का पुत्र **धूति** पैदा हुआ और धूति का पुत्र हुआ **उशना**। राजा उशना ने (सौ अश्वमेघ यज्ञ किए) उशना का पुत्र **सितेषु** नामक पुत्र पैदा हुआ **सितेषु** का पुत्र **मरूत** था ।

मरुत का **कम्बलवर्हि** नामक पुत्र पैदा हुआ । कम्बलवर्हि का पुत्र रूकमकवन पैदा हुआ । उसने समस्त पृथ्वी को जीत लिया था । उसने भी ऋषियों को पृथ्वी का दान किया । रूकमकवल से परावृत नामक पुत्र हुआ । **परावृत** के पाँच शक्तिशाली पुत्र हुए ।

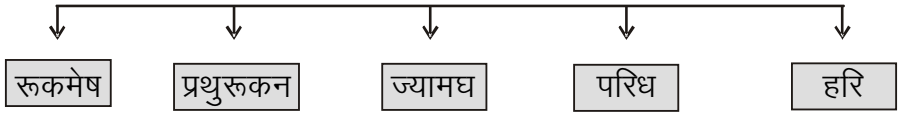

राजा परावृत ने अपने पुत्रों को विभिन्न जगह भेजा, **परिध** और **हरि** को विदेह देशों में स्थापित किया । **रूकमेष** को राजा बनाया गया। **प्रथुरूकन** उनके आश्रम बना दिये वहीं पर रहने लगे तथा राजा **ज्यामघ** भी आश्रम में निवास करने लगे । बाद में अपनी भार्या को लेकर नर्मदा नदी के तट पर अकेला निवास करने लगा ।

ज्यामघ की पत्नी **शैव्या** ने **विदर्भ** नामक पुत्र को जन्म दिया। विदर्भ के **क्रथ** और **कैशिक** नामक दो पुत्र हुए तथा तीसरा पुत्र **रोमपाद** था। रोमपाद के पुत्र **ब्रभ्र** (बभु) भी कहते हैं। उसका पुत्र **सुधृति** पैदा हुआ। विदर्भ के **कैशिक** नामक पुत्र से **वैधवंश** पैदा हुआ और विदर्भ के क्रम के पुत्र **कुन्ति** पैदा हुआ तथा कुन्ति से **वृत** नामक पुत्र हुआ और वृत से **रणधृष्ट** प्रतापी पुत्र पैदा हुआ।

रणधृष्ट के पुत्र **निधृति** था और निधृति के **दर्शाह** नामक पुत्र हुआ और दर्शाह के व्यास्त पैदा हुआ और व्यास्त के **जीमुत** पैदा हुआ । जीमुत के पैदा हुए विकृति पैदा हुआ और विकृति से **भीमरथ** नामक पुत्र पैदा हुआ और भीमरथ के **नवरथ** पैदा हुए । उसका पुत्र **हदरथ** पुत्र हुआ और हदरथ के पैदा हुए **शकुनि** और शकुनि के **करम्भ** पैदा हुए । करम्भ के **देवरात** नामक पुत्र पैदा हुए। देवरात के **देवराति** उत्पन्न हुए । देवराति के **देवश्रत्र** नामक पुत्र उत्पन्न हुआ । देवश्रत्र के **मधु** नामक पुत्र पैदा हुए । मधु महायशस्वी राजा हुए, मधु वंश के नाम कहे जाते हैं । इसलिए भगवान कृष्ण माधव भी कहे जाते हैं । मधु के **कुरूवंश** पैदा हुए और कुरू वंश के **अंशु** पैदा हुए । अशु ने **ऐक्ष्वासी** कन्या से विवाह किया । उसके पुत्र **सत्तव** और **सान्तवत** पैदा हुए और सान्तवत के चार पुत्र पैदा हुए–

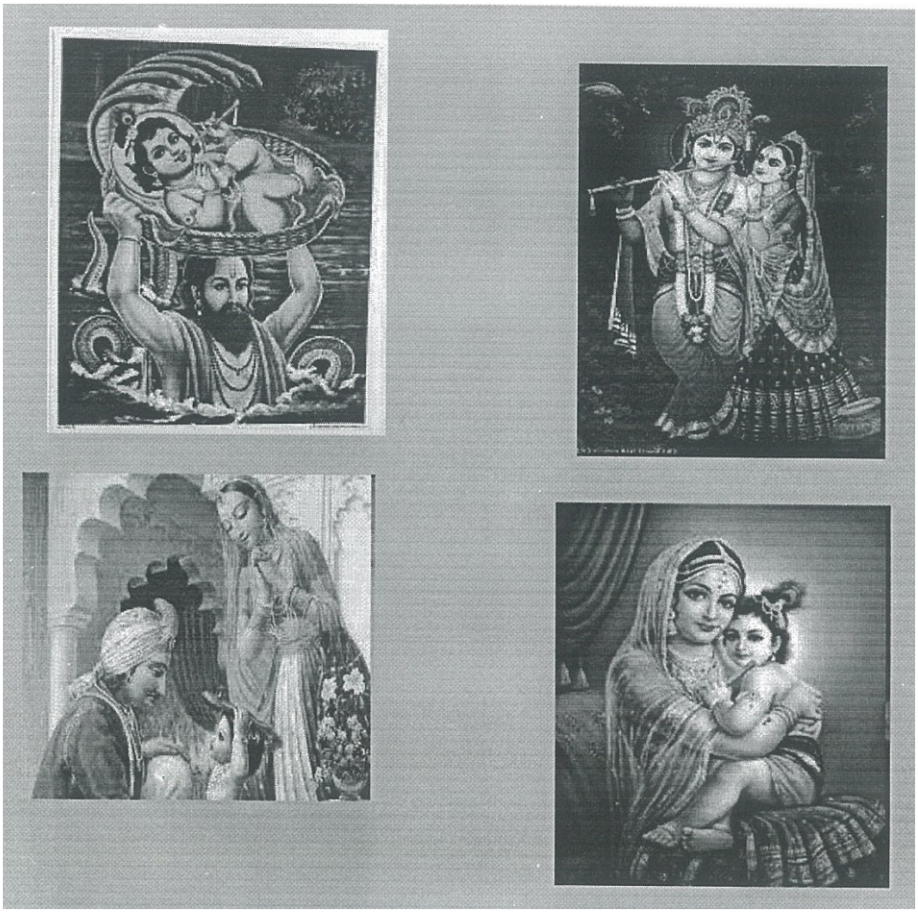

भगवान श्रीकृष्ण को मथुरा से वासुदेव गौकुल में ग्वालवंशी नन्दबाबा जो वासुदेव जी के घनिष्ठ मित्र थे के यहाँ माता यशोदा की गोद से कन्या को उठाकर ले गये और भगवान श्रीकृष्ण को माता यशोदा की गोद में लिटाकर चले गये। यही ग्वालवंशी आगे गुर्जर वंश कहलाये।

सम्राट सात्यकी महाभारत युद्ध के अजेय यौद्धा थे

यदु वंश के 56 करोड़ यदुवंशियों का विनाश हो जाने के पश्चात भगवान श्रीकृष्ण के वंश में भोजवंश के चौदह हजार पैंसठ भौजवंशी जो धार्मिक थे, वे ही यदुवंशी बचे थे। सम्राट सात्यकी के पुत्र सारवर्द्धन से यह वंश आगे चलकर कलयुग में गुर्जर प्रतिहार वंश के नाम से प्रसिद्ध हुआ । इसी वंश में आगे चलकर सम्राट विक्रमादित्य, सम्राट कनिष्क, सम्राट महिपाल, सम्राट नागभट्ट प्रथम, नागभट्ट द्वितीय, सम्राट मिहीरभोज, सम्राट महिपाल, सम्राट राज्यपाल, सम्राट भीमदेव सौलंकी, सम्राट सूर्य देव सौलंकी तथा सम्राट जयपाल सौलंकी जिन्होंने मुहम्मद गजनवी को 1026 ई. में गुजरात सौमनाथ के मन्दिर से पराजित कर वापस किया तथा 1018 में कन्नौज में मुहम्मद गजनबी को सम्राट मीहिर भोज के पोते सम्राट राजपाल ने पराजित कर मुहम्मद गजनबी को वापस भेजा था।

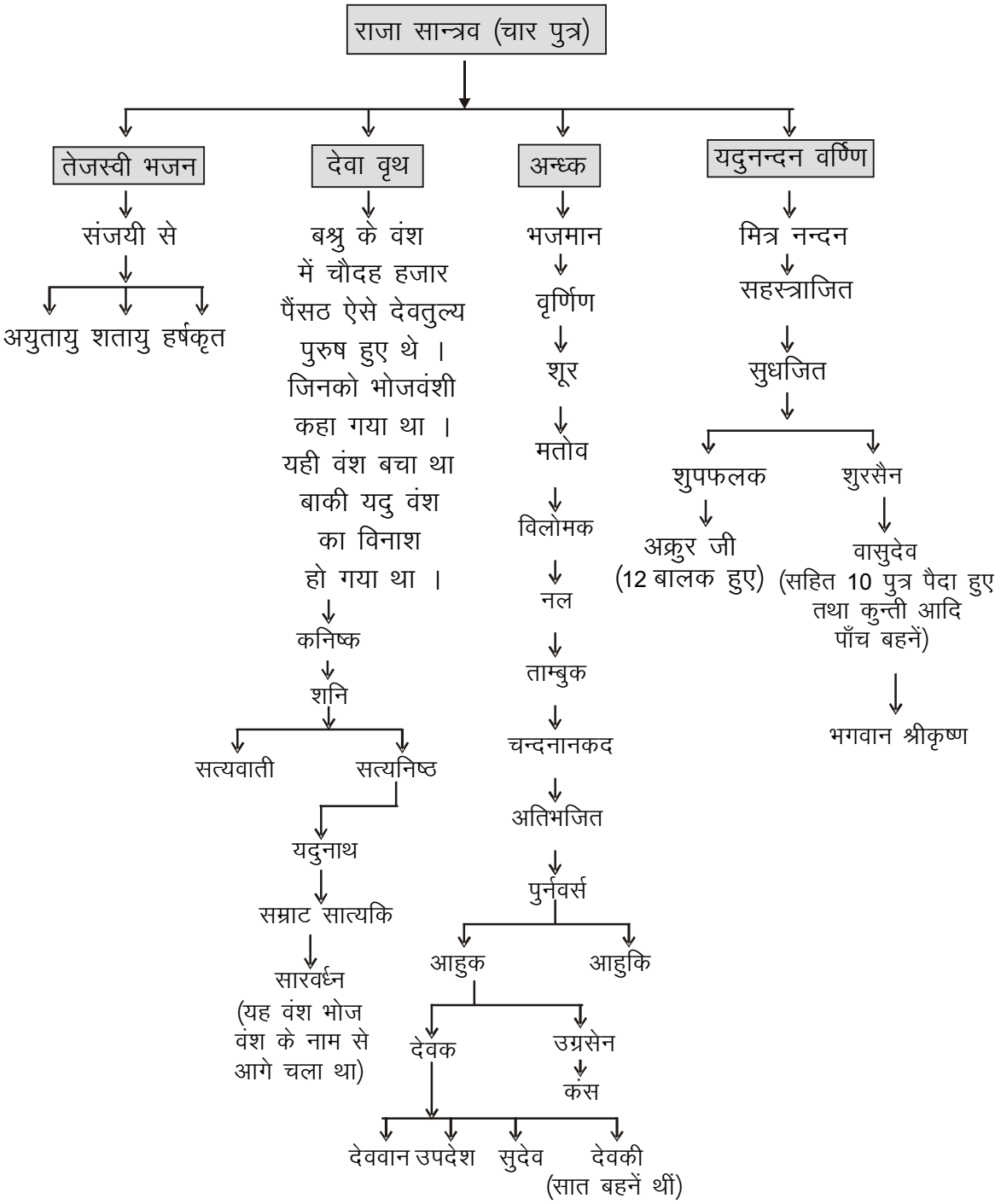

जब यदु वंश का विनाश हुआ था तब देवतुल्य भोजवंशी ही बचे थे।

पाँचाल नरेश **शूरसैन** बड़े प्रतापी राजा थे और उनकी पत्नी **(मरियापजान)** से वासुदेव सहित 10 पुत्र पैदा हुए थे । सबसे पहली संतान के रूप में **पृथा** नामक पुत्री पैदा हुई । राजा शूरसैन अपने फूफेरे भाई अन्त:पुर के राजा भोजवंशी **कुन्तिभोज** से बड़ी प्रिति रखता था । कुन्तिभोज संतानहीन था । उसने पहली संतान पुत्री पृथा को अपने भाई को गोद दे दी थी । अन्त:पुर के राजा कुन्तिभोज ने पृथा का लालन-पालन किया। उसका नाम कुन्ती रख दिया । पांचाल नरेश शूरसैन की चार पुत्रियाँ निम्न प्रकार हैं–

1. **सत्यदेवी** का विवाह कारूषदेश राजा **धर्म** से हुआ उसके पुत्र **कार्तिक** पैदा हुआ ।
2. **श्रुर्तिकीर्ति** का विवाह **धृष्टकेतू** के साथ हुआ जिनके पुत्र **शदावन** आदि पैदा हुए थे ।
3. **राजदेवी** का विवाह अवन्तीपुर के राजा **जयसैन** से हुआ था ।
4. **श्रुतिश्रवा** का विवाह दमघोष चन्देली राजा के यहाँ हुआ जिसके पैदा हुए **शिशुपाल** जो कि तीन नेत्र थे । इन्हीं को भगवान श्रीकृष्ण ने 100 गालियाँ देने के बाद वध किया था । तथा राजा शूरसैन के 10 पुत्र पैदा हुए उसमें वासुदेव सबसे बड़े पुत्र थे । उनकी 18 शादियाँ हुईं पहली शादी राजा रोहण की पुत्री **रोहिणी** से हुई जिसके **बलराम** जी थे तथा राजा **देवक** के सात पुत्री थीं सातों की शादी वासुदेव से की। **देवकी** सबसे छोटी थी । इसकी शादी सबसे बाद में हुई थी । देवकी के छ: पुत्र कंस द्वारा मारे गये और 6 वे बच्चे का गर्भ को रोहिणी के गर्भ से होना बताया गया तथा आठवीं संतान के रूप, भगवान श्रीकृष्ण जी पैदा हुए ।

जब कंस द्वारा देवकी और वासुदेव को कारागार में डाल दिया था । तब रोहिणी को अपने मित्र (नन्द) के यहाँ भेज दी थी । इसलिए गोकुल में बलराम जी और सुभ्रदा पैदा हुई थी ।

नन्द बाबा–ग्वाल वंशी थे। जो आगे चलकर गुर्जर वंश के नाम से जाना जाता था। गोकुल और बरसाना मुखिया वृषभानु की पुत्री राधा ये सभी ग्वाल वंशी थे। सभी गुर्जर वंश में आते हैं । भगवान श्री कृष्ण की सभी गोपियाँ गुर्जर कन्याएँ थीं। इसलिए मीरा और रसखान जैसे कवियों ने वर्णन में गोपियों को गुर्जरी कहकर पुकारा है। इसलिए भगवान श्रीकृष्ण वृण्णी वंश में पैदा हुए तथा ग्वाल वंश में लालन-पालन हुआ। माता देवकी के जन्म हुआ और माता यशोदा के लालन-पालन हुआ।

''भगवान कृष्ण ने कंस का वध करके अपने नाना **अग्रसैन** को मथुरा का राजा बनाया और मगध देश के राजा **जरासन्ध** से आमने-सामने के युद्ध में रण छोड़कर चले गये थे । जरासंघ को वरदान था कि सामने से कोई नहीं हार सकता । उन्होने गुजरात में द्वारकापुरी बसा कर नया राज्य बनाया वहीं राज्य किया। प्राचीनकाल में वेन पुत्र भृंगू के द्वारा गोरूप पृथ्वी के दोहन तथा देवासुर संग्राम में कृष्ण के द्वारा प्राप्त किये गये, भृंगू-प्रदत्त, शाप, द्वारकापुरी में कृष्ण रूप में विष्णु के निवास, लोककल्याण के लिए विष्णु के द्वारा स्वीकार किये गये तथा दुर्वासा प्रदत्त शाप का वर्णन लिंग पुराण किया गया । यदु वंश में चार वंश थे। **वृष्णि वंश, अन्धक वंश, भोजवंश, ककुर**

वंश थे । यदुवंशियों को दिये शाप के अनुसार **मूसल तथा एराकीघास उत्पत्ति को लेकर आपस में एक-दूसरे पर प्रहार करने लगे थे ।** भगवान श्रीकृष्ण के सामने उनके वंश वृष्णि वंश, अन्धक वंश, कुकर वंश सभी का विनाश हो गया । भोजवंश के युदुवंशी कुछ चौदह हजार पैसठ देवतुल्य थे । भजन पूजन लगे रहते थे बाकी यदुवंशी शराब पीकर उत्पात करते थे । अपने सामने यदुवंशियों का विनाश देखकर लगभग छप्पन करोड़ यदुवंशी आपस में नष्ट हो गये । केवल भाजवंशी बचे थे वे (चौदह हजार पैंसठ) थे ।

''भगवान श्रीकृष्ण ने बलराम जी से कहा कि हम दोनों भाईयों को भी वैकुण्ठ को चला जाना चाहिए । बलराम जी तो पीन बाँधकर सिन्ध के तीर बैठकर अर्न्तधान हो गये तथा भगवान श्रीकृष्ण समुद्र के किनारे पीपल के वृक्ष के नीचे जा बैठे और लेट गये उसी समय वसुदेव नन्दन की इच्छानुसार **जरा नामक** का केवट (जो कि बाली वानर का अवतार था) उसने मुरली मनोहर का पैर दूर से देखा, चमकता हुआ दिखाई दिया । हिरण समझकर धोखे में बाण मारा था । भगवान कृष्ण परम धाम को अपनी इच्छानुसार चले गये ।'' यदुवंशी में भोजवंश के चौदहे हजार पैंसठ यदुवंशी बचे थे । इसी वंश में मरुदूगण के अश के, वीरवर सम्राट **सात्यकि** थे ।

''जब अर्जुन हस्तिनापुर से द्वारकापुरी गये तो वहाँ का हाल उनसे नहीं देखा गया । अपने मामा वासुदेव से मिले उन्होंने कहा कि ऋषियों के शाप से यदुवंशी का विनाश हो गया । इसमें प्रधुम्न, सात्यकि, कृतवर्मा, अंकुर आदि दोषी हैं । या परमात्मा को ऐसा करना था । मेरे पुत्र रूप में अवतीर्ण हुए । जगदीश्वर ने गन्धारी एवम् ऋषियों के वचन को निभाया ।'' भोज वंश की बची स्त्रियों को सम्राट सात्यकि के पुत्र **सारवर्धन** के तटवर्ती क्षेत्र का राज्य सौंप दिया था और शेष भोजवंशी स्त्रियाँ कृत वर्मा के पुत्र **मर्तिकावत** का राज्य दे दिया था तथा भगवान कृष्ण के पौत्र **वज्र** को इन्द्रप्रस्थ राज्य का राजा बना दिया था। इस प्रकार अर्जुन ने शेष बची बच्चे, नारियों को लेकर हस्तिनापुर चले गये । तब रास्ते में भील तथा डाकू मिले उन्होंने वष्णि वंश तथा अन्धक वंश की सुंदर नारियों को उठाकर ले गये। अर्जुन की उनके सामने हार हो गई थी ।''

जब अर्जुन हस्तिनापुर पहुँचे, धर्म युधिष्ठिर ने वष्णि वंश, अन्धक वंश और कुकर वंश सभी यदुवंशी का विनाश हो गया था । शेष भोज वंश के चौदह हजार पैसठ (देवतुल्य) यदुवंशी बच्चे थे । इनका वंश सम्राट सत्यकि के पुत्र सास्म्र्धन और कार्ति वर्णन से आगे चला था । जो भारतवर्ष सम्वत् से जाति प्रथा उत्पन्न हुई थी । सम्वत् वर्ष के प्रथम शासक रूप में सम्राट विक्रमादित्य जो कि उज्जैन के सम्राट थे । यह वंश आगे चलकर गुर्जर प्रतिहार वंश के नाम से प्रसिद्ध हुआ । गुर्जर भूमि (गुजरात) मध्य प्रदेश, उज्जैन, कन्नौज वंश भी गुर्जर प्रतिहार वंश से विख्यात राजा रहे थे ।

कुंवर प्रताप सिंह नागर
(सचिव)

अध्याय 03

कलयुग में राजा परीक्षित सर्प द्वारा डसना एवं राजा जनमेयजय का सर्पनाशक यज्ञ करना

राजा परीक्षित का श्रीमद भागवत का व्याख्यान सुनना और राजा जनमेयजय द्वारा सर्पनाशक यज्ञ करना

सतयुग में दक्ष प्रजापति की 13 पुत्रियाँ महर्षि कश्यप ऋषि से ब्याही थी । उन 13 स्त्रियों के अलग-अलग संताने हुई हैं । उनमें से दो स्त्रियों से उत्पन्न संतानों का वर्णन कर रहा हूँ । उन दोनों का नाम–(1) कद्रु तथा (2) विनीता था।

बड़ी बहन कद्रु के गर्भ से अण्डे के रूप में उत्पन्न हुए तथा दूसरी विनीता के गर्भ से दो अण्डे उत्पन्न हुए । बड़ी बहन कद्रु के अण्डे को लगभग पाँच सौ वर्ष बीत गये । उस अण्डे को कद्रु ने पूरा समय होने के पश्चात ही अण्डे को फोड़ा तो उससे एक हजार तेजस्वी नाग पैदा हुए । सबसे बड़े वासूकि नाग और शेष नाग, तक्षक, एलापत्र नामक नागों की उत्पत्ति हुई । छोटी बहन विनीता के दो अण्डे थे । उनमें से एक अण्डे को समय से पूर्व फोड़ दिया गया । तो उससे अधूरापन (अरूण) सूर्य की लालमी पैदा हुई तथा दूसरे अण्डे पूरा समय होने पर फोड़ा गया । उस अण्डे से तेजस्वी गरूड़ जी पैदा हुए ।

सतयुग में देवताओं और दैत्यों ने मिलकर समुद्रमंथन के समय 14 रत्न उत्पन्न हुए थे । समुद्रमंथन में उच्चै श्रवा घोड़े के उत्पन्न होने की बात भी है । उस घोड़े का रंग सफेद था । इसी घोड़े की पूँछ के ऊपर ही दोनों बहनें कद्रु और विनीता में बाजी लग गई थी । कि बड़ी बहन कन्द्रु का कहना था कि घोड़े का रंग सफेद है । परन्तु उसी की पूँछ काली है और छोटी बहन विनीता का कहना था कि घोड़े का रंग सफेद है और उसकी पूँछ भी सफेद है । इस पर दोनों बहनों की बाजी लग गई । जो भी हार जायेगी वह एक हजार वर्ष तक दासी के रूप में रहेगी । इसलिए बड़ी बहन कन्द्रु ने अपने एक हजार सर्पों को आदेश दिया कि आप सभी सर्प तुरन्त उच्चैश्रवा घोड़े को देखने जाये। बड़ी बहन कन्द्रु की जीत हो गई और छोटी बहन विनीता की हार हो गई थी । इसलिए छोटी बहन विनीता बड़ी बहन कन्द्रु की दासी रूप में रही ।

जिन सर्पों ने माता कन्द्रु का आदेश नहीं माना था उन्हें माता कन्द्रु ने श्राप दे दिया था कि कलयुग के समय सर्पनाश्क यज्ञ होगा । उस यज्ञ में तुम्हारे वंशों के सर्प जलकर भस्म हो जायेंगे । ऐसा श्राप स्वयं सर्पो की माता कन्द्रु ने अपने जहरीले सर्पों को सतयुग में दिया था। इस श्राप को स्वयं ब्रह्मा जी एवं देवताओं ने भी नहीं रोका था । देवता भी चाहते थे कि पृथ्वी पर जहरीले सर्पों का नाश हो । इसलिए माता कन्द्रु को श्राप देने से परमपिता ब्रह्मा जी और देवताओं ने नहीं रोका था। इसलिए सर्पनाशक यज्ञ तो देवताओं द्वारा तय किया गया था । देवताओं द्वारा यह यज्ञ कलयुग में राजा जनमेयजय के शासन में हुआ ।

राजा परीक्षित की उत्पत्ति

महाभारत के अन्तिम समय में अश्वत्थामा और अर्जुन में भयंकर युद्ध हुआ अश्वत्थामा ने द्रोपदी के पाँच पुत्रों को मार डाला था । तब अर्जुन और अश्वत्थामा का भयंकर युद्ध हुआ । अश्वत्थामा कुरू वंश का अन्त कराना चाहते थे । इस उद्देश्य से अश्वत्थामा ने अभिमन्यु की पत्नी उत्तराकुमारी के गर्म में पल रहे नवजात शिशु पर ब्रह्मास्त्र (अग्निहोत्र) नामक शस्त्र का मुँह उत्तरा के गर्भ की ओर किया ताकि गर्भ में ही बच्चा नष्ट हो जाये । जब भगवान श्रीकृष्ण को पता चला कि अश्वत्थामा (अग्नीहोत्र) नामक अस्त्र का प्रयोग करके उत्तरा के गर्भ को क्षीण कर रहा है तो भगवान श्रीकृष्ण ने अश्वत्थामा को ऐसा करने से रोका था । परन्तु अश्वत्थामा क्रोध में थे उन्होने उस शस्त्र का प्रयोग कर दिया था । तो भगवान कृष्ण ने अश्वत्थामा के मस्तक से मणी को निकाल लिया जिससे अश्वत्थामा बलहीन हो गये थे । भगवान कृष्ण ने तब यह भी कहा उत्तरा के गर्भ में पल रहे बच्चे का विनाश होता है तो मैं अपनी योगमाया से उसे जीवित कर दूँगा ।

ऐसा ही हुआ जब उत्तरा के गर्भ से चेष्टाहीन, लाश के रूप में बच्चा उत्पन्न हुआ । इसी बीच श्रीकृष्ण जी बलराम, आदि वर्णिक वंश यदुवंशी को लेकर हस्तिनापुर आये थे । जब कुन्ती को पता चला कि उत्तरा गर्भ से चेष्टाहीन लाश के रूप में बच्चा उत्पन्न हुआ तो बार-बार भगवान श्रीकृष्ण जी को याद करने लगी । उसी समय भगवान श्रीकृष्ण जी सात्यकि को लेकर महल में गये । तो देखते हैं कि बुआ कुन्ती और बहन सुभद्रा ने रो-रो कर बुरा हाल कर रखा है। तब सुभद्रा ने अपने भाई भगवान श्रीकृष्ण जी को उनका वह वचन याद दिलाया कि तुमने युद्ध के मैदान में वचन दिया था कि अगर अश्वत्थामा अपना (अग्नीशस्त्र) शस्त्र को नहीं रोकता है तो मैं उत्तरा के गर्भ की रक्षा करके उसके प्राणों को वापस कर दूँगा । सुभद्रा के वचन याद दिलाने पर परम पिता परमेश्वर श्रीकृष्ण ने हंसकर कहा हे सुभद्रे तेरी बात नहीं गिराऊँगा । और ऐसा ही हुआ चेष्टाहीन लाश में पुनः साँसों का संचार शुरू हुआ । भगवान श्रीकृष्ण जी की कृपा से पुनः बच्चे में साँस आने लगी ।

बच्चे में साँस चलने से महलों में मातम की जगह खुशी का माहौल हो गया । परीक्षा घढ़ी में परीक्षित का जन्म हुआ इसलिए उस बच्चे का नाम **परीक्षित** रखा गया ।

इसलिए राजा परीक्षित को कुरू वंश के साथ-साथ वण्णि वंशी भी कहते हैं । भगवान श्रीकृष्ण का वंश वण्णि वंश था ।

महर्षि भ्रंगु, दुर्वाशा और गान्धारी श्राप से यदुवंशी का विनाश 35 वर्ष पूरे होने पर और 36 वर्ष लगते ही। आपस मूसल और पराभास उत्पन्न होने से सभी यदुवंशी आपस में लड़कर मर गये थे । तब धर्म युधिष्ठर ने समय की पुकार को देखते हुए धृतराष्ट्र के एक मात्र पुत्र युयुत्सु को बुलाकर हस्तिनापुर सेना की बागडौर सौंप दी तथा अपने (पौत्र) **परीक्षित** को हस्तिनापुर का राज्याभिषेक किया उसके पश्चात जनता से विदा लेकर वनों को चले गये थे।

जरत्कारू ऋषि का नाम कैसे पड़ा । उन दिनों में राजा परीक्षित का शासनकाल था । पहले उनका शरीर हट्टा-कट्टा था परन्तु बाद में घोर तपस्या करने के पश्चात उनका शरीर पतला हो गया था । इसलिए उन्हें जरत्कारू ऋषि नाम से जानते थे । जरत्कारू ऋषि वंश का नाश हो गया था । उनके पूर्वज पितृदोष के कारण उलटे थे । जब जरत्कारू ऋषि अपने पूर्वजों को पित्तर दोष से मुक्ति दिलाने की वजह से अपनी शादी करने के लिये राजी हो गये थे । उनकी एक शर्त थी–जो भिक्षा में कन्या देगा, उसी का पानी ग्रहण करेंगे । और अपने नाम राशि कन्या से शादी विवाह करेंगे।

वासूकिनाग

वासूकिनाग नागों के राजा थे। कलयुग का प्रारम्भ हो गया था। अपनी माता कद्रु द्वारा दिये गये श्राप से चिंतित थे। निकट भविष्य में शर्पनाशक यज्ञ होना है। उसका कोई उपाय होना चाहिए। सभी नागवंशियों को बुलाया गया। और पूर्व में दिये गये माता के श्राप से बचने का उपाय सोचने लगे। उसमें एक एलापत्र नाम का नाग था। उसने कहा कि जब माता हमें श्राप दे रही थीं तो मैं उठकर माँ जी की गोद में छिप गया था। तब मैंने जो सुना उसे बता रहा हूँ। जब माता जी हमें श्राप दे रही थीं। देवताओं ने ब्रह्मा जी से पूछा कि आपको माता कद्रु को अपने बेटों को श्राप देने से रोकना चाहिए था।

ब्रह्माजी ने उत्तर दिया कि देवताओं मैंने इसलिए श्राप देने से नहीं रोका कि पृथ्वी पर नागों का आतंक हो गया था। उनके विनाश के लिए यह श्राप जरूरी था। जो धर्मात्मा नाग होंगे वह इस सर्पनाशक यज्ञ में बच जायेंगे ''कि मायावर वंश में जरत्कारू नाग के ऋषि होंगे वे अपने नाम राशि कन्या से विवाह करेंगे उनसे जो संतान पैदा होगी। वह सर्पनाशक यज्ञ को बंद करा देगा''–यह बात सभी नागों ने ध्यानपूर्वक सुनी और वासुकिनाग इस उपाय में लग गये।''

राजा परीक्षित के शासन में मायावर वंश में जरत्कारू नाम के ऋषि थे। वह पितृ दोष मुक्ति के लिये अपने नाम राशि कन्या से विवाह करना चाहते थे। उधर जरत्कारू ऋषि वनों में घूम रहे थे। कोई भिक्षा में उनके नाम राशि कन्या दे तो मैं शादी करूँ। कुछ सर्प ऋषि की बात सुनकर वासुकिनाग के पास गये। उनसे सारी बात बताई और तुम्हारी बहन का नाम भी जरत्कारू है। आप भिक्षा में अपनी बहन को ऋषि को दे दो। ताकि उनसे जो संतान उत्पन्न होगी वह सर्पनाशक यज्ञ को बंद करा देगा।

आस्तिक नाग

''सर्पों की बात मानकर वासूकिनाग तुरन्त ऋषि जरत्कारू के पास गये। उनसे भिक्षा में अपनी बहन जरत्कारू को देने को कहा। दोनों का एक ही नाम था। उनकी राशि भी एक थी। यही ऋषि जरत्कारू चाहते थे। राजा वासूकिनाग ने अपनी बहन जरत्कारू को भिक्षा में ऋषि जरत्कारू को दे दी।''

''इस प्रकार से वासूकिनाग ने अपनी बहन जरत्कारू का विवाह कर दिया। कुछ समय बीत जाने के पश्चात सायंकाल के समय जरत्कारू ऋषि पत्नी की गोद में सौए हुए थे। तो सायंकाल का समय हो गया। सूर्यास्त का समय हो गया। ऋषि की पत्नी ने सोचा कि पति को जगाना धर्म के अनुकुल होगा या नहीं परन्तु धर्म का पालन करते हुए। उन्होंने ऋषि को जगा दिया। जगते ही ऋषि जरत्कारू पत्नी से नाराज हो गये। तब पत्नी ने कहा कि मैंने धर्म का पालन किया है। ऋषि अपना आश्रम छोड़कर घने जंगल में चले गये। परन्तु उनकी पत्नी जरत्कारू गर्भवती हो गईं थीं। पत्नी जरत्कारू अपने भाई वासूकिनाग के पास चली गयी और वहां पर रहने लगी। समय आने पर दिव्य बालक का जन्म हुआ। यह बालक दो वंशों का उद्धार करने के लिए पैदा हुआ था। पिता के यायांवर वंश तथा माता का नागवंश के लिए जन्म हुआ।''

इस बालक का नाम **आस्तीक** रखा गया। जब बालक गर्भ में था तो तभी पिता ऋषि ने (अस्ति है) मंत्र का उच्चारण किया था। इस बालक ने बड़ा होने पर च्यवन मुनि से वेदों का सांगोपान अध्ययन किया। चूँकि आस्तीक का लालन-पालन मामा वासूकिनाग के घर हुआ।

राजा परीक्षित को श्राप

कलयुग का समय आ गया था । तो राजा परीक्षित शिकार खेलते हुए **शमीक ऋषि** के आश्रम आ गये । राजा को प्यास लगी राजा ने आवाज दी हमको प्यास लगी है, पानी पिलाओ । परन्तु ऋषि गहन मुद्रा में ब्रह्मलीन थे । राजा के मुकुट में सोना था । कलयुग आ गया था। वे पास पड़े हुए मरे सर्प को शमीक ऋषि के गले में डालकर चले गये । जब उनके पुत्र **श्रृंगी ऋषि** को पता चला कि तुम्हारे पिता के गले में मृत सर्प को डाल गये तो ऋषि पुत्र ने राजा परीक्षित को श्राप दे दिया कि यही सर्प सात दिन बीतने के पश्चात राजा परीक्षित को डस लेगा । उनकी मृत्यु हो जायेगी ।''

इसके पश्चात जब राजा परीक्षित को पता चला कि मेरे से बहुत बड़ी गलती हुई, मेरे से अपराध हो गया । इस अपराध का पश्चयाताप करते हुए राजा पाठ छोड़कर **शुक्रताल** आ गये । वहाँ पर **सुखदेव मुनि** से सात दिन लगातार बैठकर भगवान के चरणों में ध्यान लगाकर श्रीमद् भागवत का यशोज्ञान प्राप्त किया ।

सर्पनाशक यज्ञ का वर्णन

लगातार सात दिन भगवान के चरणों में लीन होने के पश्चात सुखदेव मुनि से आज्ञा लेकर हस्तिनापुर की ओर चले अब गंगा जी में स्नान करके भगवान हरि चरणों में वास करें ।

सातवें दिन धर्मात्मा राजा परीक्षित का विष उतारने के लिए कास्यथ, ब्राह्मण हस्तिनापुर की ओर चले । तो नागों के राजा तक्षक को मालूम हुआ तो ब्राह्मण रूप बनाकर कास्यथ ब्राह्मण को रास्ते में आने को कहने लगे । कि आप कहां जा रहे हैं कि कायस्थ ब्राह्मण ने कहा धर्मात्मा राजा परीक्षित का विष उतारने जा रहे हैं । तक्षक ने ब्राह्मण की परीक्षा ली जिसमें ब्राह्मण खरे उतरे । तब राजा तक्षक ने स्वर्ण मुद्रा देकर कायस्थ ब्राह्मण को हस्तिनापुर आने से रोक दिया । स्वयं छुपकर फूलों में जाकर बैठ गया । जब राजा परीक्षित गंगा जी स्नान करने के पश्चात जैसे ही फूल की डलिया लेकर माली ने आकर राजा को फूल दिये तो तक्षक उन्हीं फूलों में छिपा बैठा था । तक्षक ने तुरन्त राजा परीक्षित को डस लिया । गंगा किनारे ही राजा परीक्षित का शरीर पूरा हो गया ।''

राजा जनमेयजय ने राज्य की बागडोर संभाली

राजा जनमेयजय को राज्य करते हुए 12 वर्ष बीत गये । एक दिन राजा जनमेयजय के दरबार में कायस्थ ब्राह्मण आये । तो उसने 12 वर्ष पुरानी उस वृतान्त का वर्णन किया हे राजन् आपके पिता राजा परीक्षित धर्मात्मा राजा थे । हम नहीं चाहते थे कि सर्प डंसने से धर्मात्मा राजा परीक्षित का स्वर्गवास हो । हमको स्वर्ण मुद्रा देकर वापस कर दिया । इस प्रकार से राजा जनमेयजय तक्षक से नाराज हो गये । तब राजा जनमेयजय ने अपने मंत्रीगणों और पुरोहित को बुलाकर दुरात्मा नागों के राजा तक्षक से बदला लेने की ठान ली ।

''ऋषिजनों ने कहा राजन देवताओं ने आपके लिए पहले से ही महायज्ञ का निर्णय कर रखा है ।'' इस यज्ञ का पुराणों में उल्लेख है ।

उस यज्ञ का अनुष्ठान आपके अतिरिक्त और कोई नहीं करेगा । ऐसा पौराणिकों ने कहा और हमें उस यज्ञ की विधि मालूम है । ऋषिजनों की बात सुनकर जनमेयजय को विश्वास हो गया कि निश्चित ही अब तक्षक जलकर भस्म हो जायेगा ।

सर्पनाशक यज्ञ की तैयारी

''वेदज्ञ ब्राह्मणों ने शास्त्रविधि के अनुसार यज्ञ मण्डप बनाने के लिए जमीन नाप ली । यज्ञशाला के लिए श्रेष्ठ मण्डप तैयार कराया तथा राजा जनमेयजय यज्ञ के लिए दीक्षित हुए ।

''सर्प यज्ञ में च्यवन वंशी चण्डभार्गव ऋषि होते थे । कौत्स उदमाता, जैमिनी ब्रह्मा तथा शार्ङ्गश्व और पिंगल अध्यर्थ थे । एवं पुत्र और शिष्यों के साथ व्यास जी उद्दालक, प्रभतक, श्वेतकेतु, अजितदेवल आदि सदस्य थे ।'' सर्पनाशक यज्ञ प्रारम्भ हो गया । बड़े-बड़े भयानक सर्प आकर अग्निकुण्ड में गिर जाते थे । सर्पों की चर्बी और मेदकी धाराएँ बहने लगीं । बड़ी तीखी दुर्गन्ध चारों ओर फैल गई थी तथा सर्पों की चिल्लाहट से आकाश गूँज उठा । इससे वासूकिनाग को बड़ा कष्ट हुआ ।

तब वासूकिनाग ने अपनी बहन जरत्कारू से कहा, बहन सर्प जलकर भस्म हो रहे हैं। ब्रह्मा जी कथानुसार तुम्हारा पुत्र आस्तीक इस सर्प यज्ञ को बंद कर देगा। तब ऋषि पत्नी जरत्कारू ने सब बातें बताकर नागों की रक्षा के लिए अपने पुत्र आस्तीक को प्रेरित किया। माता की आज्ञानुसार आस्तीक नागवंशी सर्पों की रक्षा के लिए यज्ञशाला में जाने के उद्देश्य से चल पड़े। यज्ञशाला पहुँचते ही आस्तीक यज्ञ में अन्दर जाने लगे, परन्तु द्वारपालों ने उन्हें भीतर जाने से रोक दिया। आस्तीक यज्ञ की स्तूति करने लगे, उनके द्वारा यज्ञ स्तूति से प्रभावित होकर राजा जनमेयजय ने उन्हें यज्ञ में अन्दर आने की अनुमति दी। आस्तीक यज्ञ मण्डप में जाकर, यजमान, ऋषित्व और सभासद तथा अग्नि की ओर भी स्तूति करने लगे।

''आस्तीक के द्वारा की हुई स्तूति को सुनकर राजा जनमेयजय, यजमान, सभासद और ऋषित्व और अग्नि को प्रभावित कर सभी प्रारम्भ हो गये। जब आस्तीक बाल्य अवस्था में थे। सबके मनोभाव को समझकर राजा जनमेयजय ने कहा–यद्यपि यह बालक है परन्तु विद्वान है। मैं इस बालक को वर देना चाहता हूँ। इस पर सभी यज्ञमण्डल में उपस्थित यजमानों ने सहमति दे दी।''

राजा की आज्ञानुसार आस्तीक ने कहा समय आने पर वर माँग लूँगा।

राजा जनमेपजय ने सभासदों से कहा कि मुख्य दुश्मन तक्षक अभी नहीं आया है। तब ऋषियों ने कहा कि तक्षक इन्द्र की शरण में चला गया है। तब राजा ने कहा कि आप मंत्रों का जाप करें ताकि इन्द्र के साथ-साथ तक्षक आ जाये। सभी सभासदों ने ऐसे मंत्रों का जाप किया कि तक्षक और इन्द्र दोनों ही यज्ञमण्डल की ओर चल पड़े। यज्ञ में अन्तिम आहूति देनी थी। जिससे तक्षक यज्ञ में जलकर भस्म हो जाते । तभी आस्तीक ने सभी ब्राह्मणों की ओर इशारा किया और समय का लाभ उठाते हुए तब आस्तीक ने वर माँग ने की याचना की । तब राजा ने कहा कि आप क्या चाहते हो? तब आस्तीक ने यज्ञ बंद करने का वर माँगा । तब राजा ने कहा कि अन्य दूसरा वर माँग करें । तब सभी ब्राह्मण खड़े हो गये और आस्तीक का साथ देते हुए यज्ञ में मंत्र पढ़ने बंद कर दिये ।''

सर्प नाशक यज्ञ का वर्णन

सभी यजमानों ने आस्तीक वर का समर्थन किया और समस्त ब्राह्मण खड़े होकर आस्तीक के वर की माँग करने लगे । राजा जनमेयजय ने कहा कि आप और कोई वर माँग लें । परन्तु आस्तीक अन्य वर माँगने पर राजी नहीं हुए । राजा जनमेयजय न विवश होकर सर्पनाशक यज्ञ को बंद करने का आदेश दिया । इस प्रकार से यज्ञ बंद हुआ और बाद में राजा जनमेयजय ने सभी ब्राह्मणों को धन तथा स्वर्ण मुद्राएँ दीं । और जाते समय जनमेयजय सभी ब्राह्मणों से कहा आप सभी ब्राह्मण अश्वमेघ यज्ञ में सभासद होने के लिये आमंत्रित हैं । विशेषकर आस्तिक को भी उस यज्ञ के लिए आमंत्रित किया । जो उन्होंने स्वीकार कर लिया था ।

यज्ञ आस्तिक के प्रयास से बंद हो गया था । और नागों के राजा तक्षक भस्म हो जाने से बच गये थे । सर्वनाशक यज्ञ समाप्त होने के पश्चात भगवान वेदव्यास जी अपने शिष्यों के साथ हस्तिनापुर में पधारे । अचानक महर्षि वेदव्यास जी को देखकर राजा जनमेयजय ने दण्डवत प्रणाम किया तथा गद्दी पर बैठकर उनकी पूजा करके अतिथि स्वीकार किया और उन्होंने राजा जनमेयजय को सर्पनाशक यज्ञ बंद करने के लिए आशीर्वाद दिया और कहा कि किसी वंश को समाप्त नहीं करना चाहिए। राजा जनमेयजय ने महर्षि वेदव्यास जी से प्रश्न किया और कहा–हे भगवन, आपके सामने समस्त महाभारत हुआ और कुरू वंश का विनाश हुआ आपके रहते यह सब कैसे हुआ मुझे बताने की कृपा करें । तब महर्षि वेदव्यास जी ने अपने शिष्य, **वैथ्यापन** जी का दूसरा नाम (द्विपीयन व्यास) भी कहते हैं । शिष्य वैथ्यापन को कहा कि मैंने तुमको प्रत्येक भाग का विवरण पढ़ा रखा है । तुम राजा जनमेयजय को विस्तार से महाभारत का उल्लेख करें । महाभारत लगभग 3 वर्ष तक लिखाया गया यानि महाभारत क्रमबद्ध करने में 3 वर्ष लगे थे ।

महर्षि वेदव्यास जी से आज्ञा लेकर उनके शिष्य वैथ्यापन जी ने महाभारत सुनाना प्रारम्भ किया । हे राजन, क्रम से क्रम आपको मैं महाभारत का व्याख्यान करूँगा । इस प्रकार से सबसे पहले महाभारत को राजा जनमेयजय ने भगवान वेदव्यास जी के शिष्य वैथ्यापन जी से सुना था । उससे पहले श्रीमद्भागवत पुराण को शुक्रताल में महर्षि सुखदेव मुनि से राजा परीक्षित ने सुना था । राजा परीक्षित ऐसे श्रोता थे लगातार सात दिन तक अन्न जल त्यागकर सुना था । श्रीमद्भागवत का सात दिन तक लगातार श्रवण किया। राजा जनमेयजय द्वारा सम्पूर्ण महाभारत को वैथ्यापन जी द्वारा श्रवण किया । तत्पश्चात जनमेयजय ने भगवान वेदव्यास जी से प्रश्न किया । हे भगवन आप मुझे अश्वमेघ यज्ञ के लिए निर्देशित करें। मुझे अश्वमेघ यज्ञ में क्या नियम का पालन करना है और सर्पनाशक यज्ञ का अभिप्राय भी बताएँ । ''महर्षि वेदव्यास जी ने कहा, हे राजन् सर्पनाशक यज्ञ देवताओं की इच्छा से हुआ । जो आपके यहाँ हुआ । इस यज्ञ में अनेकों लाखों सर्प जलकर भस्म हो गये हैं । इसका अभिप्राय यह है कि पाँचवीं पीढ़ी के पश्चात कुरूवंश का अन्त हो जायेगा ।

हस्तिनापुर का विनाश हो जायेगा । यहाँ पर जलमग्न भूमि हो जायेगी । पशु-पक्षी, मनुष्य की हानि होगी । कुछ समय पश्चात भगवान श्रीकृष्ण जी के बचे हुए वंश **भोजवंशी**, अन्य प्रांतों से आकर बसेंगे । यह हस्तिनापुर पुनः आबाद होगा और तुम्हारा पिता **राजा परीक्षित** द्वारा बसाया नगर **परीक्षितगढ़ राज्य** के रूप में आबाद होगा। नागवंशी का शासन होगा और भारतवर्ष में विदेशी शक्ति के रूप में शासन होगा । तब आपके पिता के द्वारा बसाया नगर (परीक्षितगढ़) पर भोजवंशी के शासन को समाप्त करके उसी धर्म का (मुसलमान) का शासन होगा । तब भोजवंश के नागवंश में नवजात शिशु का जन्म होगा । वह नवजात शिशु पर (भगवान शिव की छत्र छाया पड़ेगी) वहीं पुनः विदेशी शासक हो हराकर राजा बनेगा ।''

महर्षि वेदव्यास जी के मुख से इस वाणी को सुनकर राजा जनमेयजय पश्चाताप करने लगे । इस पर महर्षि वेदव्यास जी ने कहा कि तुम्हारे दादा धर्म युधिष्ठिर जब इन्द्रप्रस्थ के राजा थे । उन्होंने भी अश्वमेघ यज्ञ किया था । उस यज्ञ में समस्त देश तथा विदेश के राजा पधारे थे । उस यज्ञ करने से पूर्व पाण्डवों ने मगध नरेश जरासंघ का वध करके उसकी कैद में बंदी सभी राजाओ को छुड़ाया था । तब इन्द्रप्रस्थ में राजसू यज्ञ किया था । उस यज्ञ में चंदेशी राजा शिशुपाल भी आये थे । शिशुपाल पाण्डवों का मौसेरा भाई तथा भगवान कृष्ण का फुफेरा भाई था । इसी यज्ञ में शिशुपाल ने भगवान श्रीकृष्ण को 100 गाली दी थीं । शिशुपाल जरासंघ के बध से अपने ममेरे भाई श्रीकृष्ण जी से नाराज था । इसीलिए उसने भगवान श्रीकृष्ण को 100 बार गालियाँ दी थीं । भगवान ने अपनी बुआ की मर्यादा के लिए 100 गालियों की माफी दे रखी थी । जैसे ही शिशुपाल ने 101 गालियाँ आरम्भ की तो तुरन्त भगवान श्रीकृष्ण ने अपने सुर्दशन चक्र से शिशुपाल का बध किया । मै उस राजसूय यज्ञ में भी उपस्थित था । तब तुम्हारे दादा धर्म युधिष्ठिर ने मेरे से प्रश्न किया था । तब मैंने धर्म युधिष्ठिर को आगाहा कर दिया था । इसका भयंकर परिणाम होगा जो कि 13 वर्ष बीतने के बाद होगा । उस यज्ञ के 13 वर्ष बीतने के पश्चात महाभारत हुआ । जिसमें सम्पूर्ण विनाश हो गया था । इस प्रकार से राजा जनमेयजय को बहुत सी बातें, भगवान वेदव्यास जी ने बताई थीं । इसके पश्चात वे अपने आश्रम चले गये ।

इस प्रकार से जनमेयजय के पश्चात हस्तिनापुर का महाविनाश हो गया था । यहाँ पर बाद में शेषनाग के वंशजों का आधिपत्य हो गया था ।

प्राचीन काल से ही गुर्जर प्रदेश (गुजरात) वहाँ पर भगवान श्रीकृष्ण के वंश में भोजवंशी बचे थे । उन्हीं का शासन रहा है । भगवान श्रीकृष्ण के अभिन्न मित्र सम्राट सात्यकि का वंश उनके पुत्र **सास्वर्धन** तथा **मर्तिकावर्धन** से आगे चला । वही वंश (भोजवंशी) जो कि गुजरात, मध्यप्रदेश, कन्नौज, उज्जैन आदि पश्चिमी उत्तर प्रदेश सभी शासक गुर्जर प्रतिहार वंश के राजा थे । गौपालन से गुर्जर और गुर्जरी शब्द इस प्रकार जुड़े हुए हैं।

अध्याय 04

कलयुग में प्राचीन भारत में गुर्जर प्रतिहार वंश

गुर्जर साम्राज्य के महानायकों ने विदेशी शासकों को हराकर विदेशों में वापस भेजा

मेसीडोनिया के क्षत्रिय फिलिप (द्वितीय) का पुत्र एलकजैण्डर (सिकन्दर) महान के नाम से जाना जाता है। सिकन्दर ने अपनी विश्वविख्यात विजय की रणनीति के अन्तर्गत 20 वर्ष की आयु में ''हखामणी साम्राज्य का विधवंश कर दिया था इस विजय से सिकन्दर का मनोबल बढ़ गया और वह विश्व विजय की सोचने लगा।

ईसा से 326 वर्ष पूर्व सिकन्दर महान बल्ख (बैकिट्रया) से होता हुआ भारत की ओर बढ़ा। सिकन्दर काबूल को जीतते हुए तथा हिन्दुकुश पर्वत को पार करते हुए तक्षशिला पहुँचा। तक्षशिला के राजा आम्भी ने सिकन्दर की सेना के सामने आत्मसमर्पण कर दिया तथा राजा आम्भी ने सिकन्दर को सहयोग भी दिया। इस प्रकार से सिकन्दर का मनोबल और भी बढ़ गया।

सिकन्दर महान अनेक राजाओं को हराता हुआ आगे बढ़ने लगा। इस विश्वविख्यात शासक सिकन्दर को रोकने के लिये गुजरावाला के महान राजा पोरस ने सिकन्दर से युद्ध करने का ऐलान किया। ''इस युद्ध को ''वितस्ता का युद्ध'' के नाम से जाना जाता है। यह युद्ध झेलम नदी के तट पर हुआ। इस युद्ध में राजा पोरस की हार का कारण यह था कि हिन्दू राजाओं ने पोरस महान का साथ नहीं दिया था इस युद्ध में पोरस ने बड़ी वीरता के साथ युद्ध किया। परन्तु आपसी राजाओं के पोरस को धोखा देने से उनकी हार हुई। ''जब सिकन्दर का सेनापति सेलयुकेस राजा पोरस को पकड़कर सिकन्दर के सामने ले गया। तो सिकन्दर महान ने राजा पोरस से प्रश्न किया। आपके साथ कैसा व्यवहार किया जाये। राजा पोरस ने जवाब दिया कि जैसा एक राजा को दूसरे राजा के साथ व्यवहार करना चाहिये। इस उत्तर से पोरस की वीरता और साहस को देखते हुए सिकन्दर महान गद्‌गद् हो गये। सिकन्दर महान इस गुर्जर सम्राट पोरस की वीरता को देखते हुए भारत से वापस जाने का निर्णय लेता है।''

ईसा से 78 ई० से 1192 ई० तक कनिष्क ने नया सम्वत् चलाया जिसे शक सम्वत् कहा जाता है। राजा कनिष्क की पहली राजधानी पेशावर उसके बाद मथुरा राजधानी रही। इसके समय कश्मीर के कुण्डल वन में आचार्य वसुमित्र की अध्यक्षता में चौथी बौद्ध संगति हुई।

इसकी प्रथम राजधानी पेशावर (पुरुषपुर) एवं दूसरी राजधानी मथुरा थी इसने 78 ई० में नया सम्वत् चलाया । जिसे शक सम्वत् के नाम से जाना जाता है । महाराजा कनिष्क ने कश्मीर को जीतकर वहाँ पर 'कनिष्कपुर' नामक नगर बसाया । उसने काशगर, यारकन्द व खोतान पर विजय प्राप्त की ।''

नागभट्ट (प्रथम) ने गुर्जरों की सभी शाखाओं को एक सूत्र में बाँधकर राजा की स्थिति मजबूत की । इसने मालवा से गुजरात तक अपने राज्य का विस्तार किया ।

वत्सराज

राजस्थान के मध्य भाग तथा उत्तर भारत के पूर्वी भाग पर भी अधिकार किया ।
आंध्र, सिंध, विदर्भ और कलिंग को पराजित किया तथा तुर्को को पराजित कर उसने कन्नौज पर आक्रमण किया । गोविन्द द्वितीय ने कन्नौज पर आक्रमण कर कन्नौज को राजधानी बनाया ।

इस वंश के सर्वाधिक प्रतापी **राजा भोज** (प्रथम) था जिसे **मिहिर (भोज)** के नाम से जाना जाता है । राष्ट्रकूट शासक कृष्ण (द्वितीय) को पराजित कर उत्तर भारत का स्वामी बन बैठा । इनके साम्राज्य के अन्तर्गत, काठियावाड़ा, पंजाब, मालवा, राजपूताना तथा मध्यप्रदेश भी सम्मिलित थे । कन्नौज में गुर्जर प्रतिहार वंश के 12 शासक हुए । गुर्जर प्रतिहार वंश के कन्नौज शासक **महेन्द्रपाल (द्वितीय)** का पुत्र **राजा-राज्यपाल** गद्दी पर बैठा । वह गुर्जर प्रतिहार वंश का 12वाँ राजा था ।

राजा राज्यपाल के शासन के समय महमूद गजनबी ने वर्ष 1018 ई० में भारत पर आक्रमण किया । महमूद गजनवी लूट-पाट करता हुआ कन्नौज पहुँचा । वहाँ के शासक राजा राज्यपाल ने गजनवी से युद्ध किया । उस युद्ध में गजनवी की हार हो जाती है । वह वापस अपने देश चला गया ।

महमूद गजनवी ने पुनः 1026 ई० में भारत पर आक्रमण करके गुजरात प्रांत में प्रवेश किया । वहाँ पर महमूद गजनवी का सिंध के मैदान में गुर्जर प्रतिहार वंश के शासक राजा जयपालसिंह के साथ युद्ध हुआ यहाँ महमूद गुजनवी की पराजय हुई । इससे पूर्व महमूद गजनवी ने सोमनाथ के शिव मन्दिरों को लूट लिया था । राजा जयपाल सिंह से सिंध के मैदान में हारने के पश्चात महमूद गजनवी को वापस अपने देश चले गये थे ।

इसी प्रकार महाराजा रणजीत सिंह के प्रधान सेनापति वीर **हरिसिंह नलवा** पर यवनों ने भारत में आक्रमण कर दिया । इस आक्रमण को अकेले वीर हरिसिंह नलवा ने विफल कर यवनों को भारत में घुसने नहीं दिया । इस वीर ने भी इस महान क्षत्रिय गुर्जर जाति में ही जन्म लिया था ।

वीर हरिसिंह नलवा की वीरगाथा अफगानिस्तान तक गूंज रही है । इसी समय वीर शिवाजी ने जन्म लेकर मुगल शासकों को लोहे के चने चबवा दिये । वीर शिवाजी न होते तो हिन्दुत्व नष्ट हो जाता ।

गुर्जर प्रतिहार वंश के (नागर वंश) में दो बार भगवान शिव अदृश्य दर्शन देकर अद्वितीय शक्तियों का जन्म हुआ। जब भारतवर्ष में मुगल सल्तनत चर्म सीमा पर थी। औरंगजेब के बेटे बहादुशाह (प्रथम) का शासन था तभी मुगल सल्तनत सेनापति पर **बल्ले सिंह नागर** (नीम का तिगाव) आसीन थे। बहादुशाह (प्रथम) हिन्दू सेनापति बल्ले सिंह नागर की मृत्यु करा देते हैं और उनकी जगह (मुगल सल्तनत) में सेनापति का पद मुसलमान को दिया गया था।

भारतवर्ष 17वीं शताब्दी के अंत में तथा 18वीं शताब्दी के शुरू में पूरे भारतवर्ष में धर्म परिवर्तन चर्म सीमा पर था । उसी समय जब नवजात शिशु जैतसिंह को लेकर माता तेजकौर ने बम्बावड होते हुए बहसूमा की ओर प्रस्थान किया तभी रास्ते में सैफपुर ग्राम पड़ता है वहाँ माता तैजकोर को अंधेरा हो जाता है। उसने सैय्यद मीर कासिम के यहाँ पर रात्रि विश्राम किया परन्तु माता तैजकोर को यहाँ पर ऐसा महसूस हुआ कि मीर कासिम का घर भी अपना घर ही है। संकट के समय माता तैजकोर ने कुछ समय यहीं बिताने का निर्णय लिया था।

''महर्षि वेदव्यास जी ने सर्पनाशक यज्ञ के पश्चात जब वे हस्तिनापुर आये थे। तब राजा जनमेयजय से कहा था। जब भारतवर्ष में विदेशी राजाओं के हाथ में सत्ता होगी तभी भगवान शिव की कृपा से किसी नवजात शिशु दर्शन देंगे और वह बालक तुम्हारे पिता द्वारा हस्तिनापुर के पास बसाये गये नगर के राजा होंगे।''

18वीं शताब्दी के शुरू में ही जब माता दर-दर के धक्के खाते हुए ग्राम सैफपुर आई तो मीर कासिम के घर को अपना समझते हुए उनकी महिलाओं के साथ भादों में (खेतों में बाड़ी के फूल) यानि (कपास) को चुनने लगी थी । तभी नवजात शिशु जैतसिंह को पेड़ के नीचे लुटा दिया था तो माता अपना कार्य करने लगी। भादो चिलचिलाती धूप जब नवजात **शिशु जैतसिंह** पर पड़ी तो भगवान शिव ने सुपुत्र (नाग के रूप) धारण करके उस बच्चे को छाया कर देते हैं।

''इस दृश्य को देखने सब लोग इकट्ठे हो जाते हैं। नवजात शिशु के रूप बालक जैतसिंह किलकारी के साथ हँस रहे थे। **माता तेजकौर** चिल्ला रही थी। मेरे बच्चे को बचाव परन्तु इस कौतूहल को देखकर क्षेत्रवासी यह संदेह कर रहे थे कि यह नाग नहीं है बल्कि स्वयं शक्ति रूप में कोई देवता है। ऐसा मानकर सभी क्षेत्रवासी शांत होकर बैठ जाते हैं। भगवान वासुदेव नन्दन

को याद करते हैं । कुछ समय पश्चात वह दिव्यशक्ति अपने आप अर्न्तध्यान हो गई।'' सभी क्षेत्रवासीयो के देखते-देखते भगवान शिव गायब हो गये। यह बालक आगे चलकर परीक्षितगढ़ का राजा बना।

दूसरी बार–राजा जैतसिंह की पाँचवीं पीढ़ी में रानी लाड़कौर को पुरा महादेव में भगवान शिव ने दर्शन दिये । किला परीक्षितगढ़ के **राजा नत्थासिंह** की **पुत्री लाड़कौर** की शादी लण्डौरा **राजा खुशहाल सिंह** से हुई । राजा खुशहाल सिंह के पश्चात जब रानी लाड़कौर दिल्ली से लण्डौरा जा रही थीं तब रास्ते में एक जगह उनका हाथी आगे नहीं बढ़ रहा था पीलवान ने बहुत कोशिश की थी । रानी ने आदेश दिया कि पूरी सेना ही रूक जाये। तब रात्रि में सुबह 4 बजे भगवान शिव आये और 'दिव्य ज्ञान' के माध्यम से रानी लाड़कौर को स्वप्न दिखाई दिया । स्वपन में भगवान शिव ने कहा कि सतयुग के समय से ही इस स्थान पर मेरा शिवलिंग है । यहीं पर उसको खोदकर यहाँ मंदिर का निर्माण कर ऐसा कहकर भगवान शिव चले गये । रानी लाड़कौर की आँखें खुल गईं । रानी ने उस स्थान पर खुदाई कराई । सफेद शिवलिंग प्राप्त हुआ और वहाँ मन्दिर बनाया । यही पुरा महादेव के नाम से विख्यात है।

अन्त में आपसे अनुरोध करता हूँ। अपने पूर्वजों की सम्पूर्ण वंशावली भी पेश की। उनके किये कार्य का वर्णन कर रहा हूँ । जो निम्न प्रकार से है।

नागौर से नीम का तिगाँव

गुर्जरों की एक शाखा, नागौर के राजा तुंग के पुत्र अनंगपाल ने 1045 ई० में नागौर से प्रस्थान किया और नीम का तिगाँव के निकट बल्लभगढ़ (हरियाणा) पहुँचे। यह गुर्जरों का पुराना केन्द्र रहा है। राजा अनंगपाल की संतान परम्परा में ही हमारे चरित्रनायक रूप में नागर वंश के अनेक राजा हुए जिनको क्रम स: संक्षेप में चार्ट में दर्शाया गया है।

गुर्जर प्रतिहार वंश के **सम्राट नागभट्ट (द्वितीय)** के पुत्र राजा तुंग नागौर से चलकर 1045 ई० में नीम के तिगाँव आ गये थे । राजा तुंग के पुत्र **अनंगपाल** के दूसरे पुत्र थे **विशम्बर सिंह नागर** जो कि नीम के तिगाँव से चलकर बहसूमा आ गये थे ।

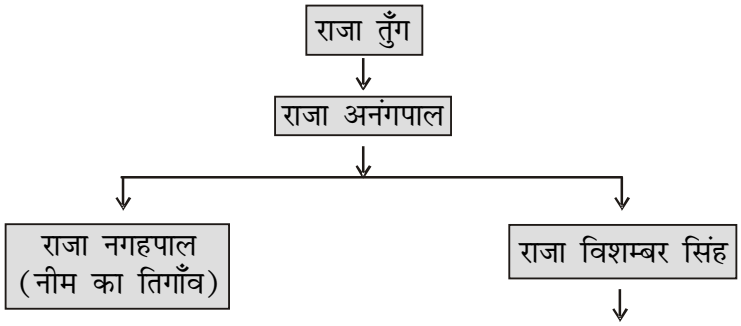

नीम के तिगाँव से बहसूमा

महाभारत काल 3500 वर्ष से अधिक प्राचीन माना जाता है । विभिन्न इतिहासकारों के अनेक मत हैं । इतिहासकारों के अनेक मत होने के कारण महाभारत काल के बारे में सही सम्वत् की जानकारी नहीं है । पितामह भीष्म ने हस्तिनापुर राजमहल से लगभग 1 कोस (2 किमी.) दूर हटकर अपनी कुटी बनाई थी । ऐसा महाभारत काल में लिखा महाभारत पुस्तक में उल्लेख नहीं मिलता है । यह उल्लेख अवश्य मिलता है । राजमहलों से अलग अपना निवास बनाया था । यह अनुमान लगाया जाता है कि वह स्थान बहसूमा हो सकता है ।

सम्वत् 1145 में गुर्जर प्रतिहार वंश के राजा तुंग के पुत्र राजा अनंगपाल के दो पुत्र हुए (1) राजा नगहपाल (2) राजा विशम्बर सिंह नागर । जो नीम के तिगाँव से चलकर बहसूमा आ गये । महाभारत के कुछ समय पश्चात यह स्थान विरान पड़ा था । जिसे आज बहसूमा कहते हैं ।

इसी स्थान को पुनः आबाद किया । तब इसका नाम भीष्मपुरी से पुनः आबाद किये गये स्थान को बहसूमा कहते हैं । इस स्थान का नाम बहसूमा किया गया ।

महाभारत के पश्चात कुरू वंश (क्षत्रिय वंश) का अन्त हो जाता है। शेष राजा गुर्जर प्रतिहार वंश के बच जाते हैं। इसका उल्लेख महाभारत के अंतिम पर्व (शान्ति पर्व में उल्लेख है) इसलिए राजा अनंगपाल के पुत्र राजा विशम्बर सिंह नागर की एक जिज्ञासा थी। उनके पूर्वज महाभारत काल में समाप्त हो गये थे। उन्होंने सम्वत् 1145 में आकर विरान पड़े स्थान को पुनः बहसूमा को आबाद किया। यह उल्लेख ज्ञानप्रकाश भट्ट एवं कैलाश भट्ट रहौती के यहाँ उल्लेखित है। जो राज परिवार के राजकीय भाट थे।

नीम के तिगाँव में नागर वंश संक्षेप में चार्ट में दर्शाया गया है। यहाँ से इनके वंशज कुड़ी खेड़ा तथा बम्बावड़ और बहसूमा में आकर बस गये थे।

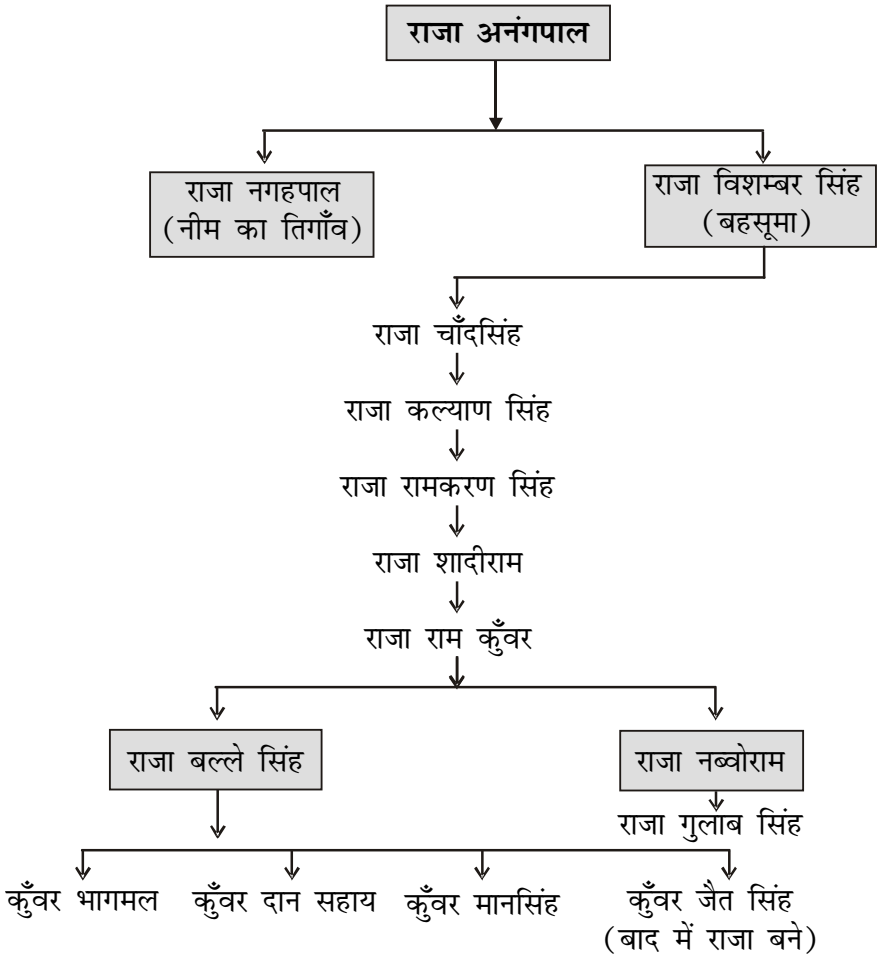

भवदीय

कुँवर प्रताप सिंह नागर

(सचिव)

राजा नैन सिंह स्मारक समिति

बहसूमा (मेरठ)

अध्याय 05

राजा जैत सिंह नागर द्वारा परीक्षितगढ़ राज्य की पुनः स्थापना करना

मुगल सेनापति बल्ले सिंह नागर

रामकुँवर के बड़े पुत्र **बल्ले सिंह** का विवाह जनपद (बुलन्दशहर) के बम्बावड़ ग्राम में बोकन गौत्र के **विजय सिंह** की पुत्री **तेजकौर** से सम्पन्न हुआ। बल्ले सिंह मुगल शासन में पहले कोतवाल बनाये गये, बाद में उन्हें सेनापति बनाया गया। औरंगजेब के पुत्र बहादुर शाह (प्रथम) ने सनापति बल्ले सिंह का विरोध किया था कि हम बल्ले सिंह को सेनापति नहीं चाहते हैं। उन्हें धोखे से मार डाला। तब मुगल सल्तनत ने राजपूत जाति के प्रताप सिंह को सेनापति बनाया था। बाद में कुँवर अली को सेनापति बनाया था। मुगल शासन में 1705 ई० में बल्ले सिंह सेना में कोतवाल थे। बाद में औरंगजेब के पुत्र बहादुशाह (प्रथम) की सेना में सेनापति बने थे। जिसका घोर विरोध हुआ था। वर्ष 1711 ई० में फर्रूखसिपार ने धोखे से बल्ले सिंह को मार डाला था।

समय-क्रम को समझने के लिए औरंगजेब के बाद के मुगल बादशाहों के शासन का संक्षेप में चार्ट दर्शाया गया है–

शासक	शासनकाल वर्ष
औरंगजेब या आलमगरि (प्रथम)	(1658-1707)
बहादुरशाह (प्रथम)	(1707-1712)
जहाँदार शाह	(1712-1713)
फर्रूखसियार	(1713-1719)
मुहम्मद शाह	(1719-1748)
अहमद शाह	(1748-1754)
आलमगीर (द्वितीय)	(1754-1758)
शाह आलम (द्वितीय)	(1758-1806)
अकबर (द्वितीय)	(1806-1837)
बहादुर शाह जफर	(1837-1857)

कुँवर बल्ले सिंह ने हमेशा मुगल शासन काल में हिन्दुओं पर किये गये अत्याचारों का विरोध किया । जिसके लिए उन्हें अपने प्राणों की आहुति देनी पड़ी ।

कुँवर जैत सिंह नागर

बचपन

कुँवर जैत सिंह मुगल सेनापति बल्ले सिंह के सबसे छोटे पुत्र थे। **जैत सिंह** का जन्म वर्ष 1711 ई० में हुआ था। बल्लेसिंह की मृत्यु के समय कुँवर जैतसिंह 2 माह के थे। नीम का तिगाँव और बम्बावड़ दिल्ली सल्तनत के निकट होने के कारण बल्ले सिंह की पत्नी तेजकौर अपने छोटे पुत्र कुँवर जैत सिंह को लेकर बहसूमा की ओर प्रस्थान किया। चूँकि बहसूमा में पहले से परिवार रहता था। दिल्ली सल्तनत से दूर था।

जब माता तेजकोर नीम के तिगाँव से बहसूमा को जा रही थीं, तो रास्ते में (सैफपुर) गाँव पड़ा था यहाँ पर माता तेजकोर को अंधेरा हो जाता है । बहसूमा कुछ मील दूर था । रात्रि विश्राम के (सैयद मीरकासिम) के यहाँ माता रूकी थीं। सैयद मीरकासिम ने माता का आदर-भाव किया । तभी उनके परिवार के साथ जंगल में काम करने चली गयी थीं । नवजात शिशु कुंवर जैतसिंह को भी साथ ले गई । दोपहर के समय वृक्ष के नीचे लेट रहे कुंवर जैत सिंह के पास अचानक भगवान शिव के रूप में नाग देवता आये । उनकी छाया कर ली ।

परन्तु जब माता ने यह दृश्य देखा तो चिल्लाने लगीं और आस-पास की भीड़ इकट्ठी हो गई और सभी ने भगवान शिव की अराधना की, अचानक नाग देवता चले गये । यह दृश्य उस बात का प्रतीक है कि जब सर्पनाशक यज्ञ के पश्चात भगवान वेदव्यास हस्तिनापुर में राजा जनमेयजय को पूर्वजों का इतिहास बता रहे थे । तब उन्होंने कहा था कि नाग वंश में कलयुग के मध्यान्त में जब भारतवर्ष पर विदेशी शासक राजा होंगे तब इसी नाग वंश में नवजात शिशु का जन्म होगा । वह नवजात शिशु विदेशी ताकत को हराकर आपके पिता द्वारा बसाये गये परीक्षितगढ़ नगर का राजा बनेगा। यह नवजात शिशु वही है । जिसका वर्णन महर्षि वेदव्यास ने हस्तिनापुर में किया था । सर्पनाशक यज्ञ के पश्चात वर्णन किया था ।

मार्ग में रात्रि विश्राम

सैफपुर ग्राम में अंधेरा हो जाता है। माता तेजकौर ने सैय्यद मीर कासिम के यहाँ रात्रि विश्राम किया। यहाँ माता तेजकौर को इतना सम्मान मिला था तो माता मन में एक भाव उभर आया कि कुछ समय यहाँ पर बिताना चाहिये कि यहाँ पर मुगल सल्तनत को कोई संदेह भी नहीं होगा। यह भाव माता तेजकौर के मन में पैदा हुआ। माता तेजकौर सैय्यद मीर कासिम के परिवार के साथ उनके कार्य में भी हाथ बटाना भी शुरू कर दिया।

भादो के मास में एक दिन **माता तेजकौर** खेतों में काम करने चली गईं । वहीं एक वृक्ष की छाया में बालक जैतसिंह को सुला दिया । धीरे-धीरे बालक पर धूप आ गई । अचानक एक नाग ने आकर बालक के सिर पर फन फैलाकर छाया की । माता वापस लौटी तो नाग (देवता) को देखकर चिल्लाने लगी । माता की चिल्लाने की आवाज सुनकर आसपास अनेक लोग इकट्ठे हो गये । सभी ने भगवान शिव की आराधना की । चूँकि वह तो भगवान शिव (दिव्य दृष्टि) रूप में छाया थी। फिर नाग (देवता) धीरे-धीरे चला गया । सैय्यद मीर कासिम और अन्य गणमान्य व्यक्तियों ने माता तेजकौर को कहा कि यह दृश्य सूचित करता है कि यह बालक एक दिन राजा बनेगा।

कलयुग के शुरू में राजा परीक्षित के पुत्र जनमेयजय ने सर्पनाशक यज्ञ किया था तभी महर्षि वेदव्यास जी परीक्षितगढ़ आये थे और जनमेयजय को समझाया था कि समस्त नाग वंश समाप्त नहीं किया जा सकता है । गलती तक्षक नाग से हुई है । समस्त नागवंश से नहीं हुई है । आपका सर्पनाशक यज्ञ किया जाना गलत है ।

महर्षि वेदव्यास ने राजा जनमेयजय को समझाया कि जब भारतवर्ष में दूसरे धर्म के राजा राज्य करेंगे तब इसी वंश में (नागवंश) में भगवान शिव की छाया इसी कुल के बालक पर आयेगी । वह बालक पुनः इस राज्य (किला परीक्षितगढ़) को मुक्ति दिलवायेगा ।

दिल्ली सल्तनत बादशाह मुहम्मद शाह के सेनापति प्रताप सिंह (राजपूत) को पराजित करना

वर्ष 1734 ई० में कुँवर जैतसिंह 23 वर्ष के थे । अपने पिता की मृत्यु का बदला लेने के लिए उन्होंने सेना का गठन किया। यह सब क्षेत्र दिल्ली सल्तनत के अधीन था। किला परीक्षितगढ़, पूर्व परगना के नाम से रियासत थी । कुँवर जैतसिंह ने अपना कार्य क्षेत्र यमुना व गंगा नदियों के घाटों पर बनाया । अपनी सैनिक चौकियाँ स्थापित कीं यही से मुगल साम्राज्य के खिलाफ विद्रोह शुरू किया । रूहेलखण्ड के तमाम प्रमुख स्थानों पर अपना प्रभुत्व कायम कर लिया था । इससे दिल्ली का मुगल साम्राज्य (मुहम्मद शाह) बौखला उठे। कुँवर जैतसिंह का

दमन करने के लिए मुगल बादशाह ने अपने राजपूत सेनापति प्रताप सिंह को भारी सेना देकर भेजा । कुँवर जैतसिंह (गुर्जर सेना) के सामने प्रतापसिंह की मुगल सेना न टिक सकी । युद्ध में प्रताप सिंह सेनापति की मृत्यु हो जाती है । कुँवर जैतसिंह की सेना के सामने पराजित हो गये ।

दिल्ली सल्तनत के बाद शाह मुहम्मद शाह ने दूसरे सेनापति कुँवर अली को जैतसिंह का मुकाबला करने भेजना

प्रताप सिंह की मृत्यु के पश्चात दिल्ली सल्तनत के मुगल बादष्ठाह ने कुँवर अली शाह को भारी फोर्स लेकर कुंवर जैत सिंह की सेना का मुकाबला करने के लिये भेजा । भयंकर युद्ध हुआ और इस युद्ध में भी कुँवर जैत सिंह की भारी सेना के सामने कुँवर अली शाह की सेना नहीं टिक सकी और इस युद्ध में की कुँवर अली शाह को मार गिराया । कुँवर जैतसिंह सेना के सामने मुगल सेना पराजित हो गई।

अन्ततोगत्वा मौहम्मद शाह ने कुँवर जैतसिंह के पारिवारिक भाई गुलाब सिंह को दिल्ली बुलाया और कहा कि आप कुँवर जैतसिंह से सन्धि करा दें । तत्पश्चात गुलाब सिंह जैतसिंह से मिले दोनों शूरवीरों ने आपस में गुप्त मन्तृणा की और अपनी सेना को एक करके फिर से मार-धाड़ शुरू कर दी थी और रूहेलखण्ड तक कुंवर जैतसिंह ने तहलका मचा दिया था और दिल्ली सल्तनत के बादशाह मुहम्मद शाह की सेना नहीं टिकी । चूँकि, मुहम्मद शाह के दोनों सेनापति प्रतापसिंह (राजपूत) और कुंवर अली शाह को पराजित होना पडा और दोनों सेनापति की मौत। यह संकेत देता है कि कुंवर जैतसिंह साधारण मनुष्य नहीं थे । वह तो देवपुरूष होना प्रतीत होते है।

अहमदशाह से सन्धि

मौहम्मद शाह के निधन के बाद अहमदशाह दिल्ली की गद्दी पर बैठा । एक बार अहमदशाह की बेगम शाही फौज के साथ (हल्दौर) जनपद बिजनौर जा रही थी । मार्ग में लुटेरों ने बेगम को घेर लिया । राजा जैतसिंह को पता लगने पर उन्होंने बेगम को छुड़ाया और उनके गन्तव्य दिल्ली तक पहुँचाया । उन्होंने बेगम से कहा कि हमारे क्षेत्र में कोई आपका अपमान करें तो हमारे लिए लज्जा की बात है । जब बेगम दिल्ली लौटीं तो कुँवर जैतसिंह के चरित्र की सराहना सुनकर अहमदशाह ने पुनः जैतसिंह को सन्धि के लिये बुलाया । और पूर्वी परगना (परीक्षितगढ़) का राज्य राजा मान लिया ।

दिल्ली के बादशाह ने उन्हे मेरठ जिले अर्थात पूर्वी परगने (परीक्षितगढ़) का राजा मान लिया । परीक्षितगढ़ (नागड़ी) नागर वंश के राजा की राजधानी स्थापित हो गई । महर्षि वेदव्यास के उस कथन की पुष्टि हो गई जो कथन महर्षि ने राजा जनमेयजय को बताई थी कि नागवंश (नागड़ी) वंश राज्य के रूप में स्थापित हुआ ।

पूर्वी परगने परीक्षितगढ़ राज्य की स्थापना

माह नवम्बर 1749 ई० में कुँवर जैतसिंह परीक्षितगढ़ राज्य के राजा बने । और कुँवर गुलाब सिंह को सेनापति बनाया । इस प्रकार महाभारतकालीन राज्य परीक्षितगढ़ की राजधानी पुनः आबाद हुई । अपने अद्वितीय शौर्य के द्वारा जैतसिंह ने अपने कुल का नाम रोशन किया और नागर वंश के राज्य की स्थापना की । उन्होंने मुगलों से जो लोहा लिया उसी का परिणाम है कि आज गंगा जमुना के दोआब में हम उनके वंशज आबाद हैं । ऐसे अपने शूरवीर पूर्वजों को जो लोग भूल जाते हैं उनका जीवन व्यर्थ है ।

परीक्षितगढ़ का पुर्ननिर्माण एवं पुर्नवास

राजा जैतसिंह ने 1752 ई० में परीक्षितगढ़ में किले का निर्माण कराया तभी से इस नगर परीक्षितगढ़ का नया नामकरण ''किला परीक्षितगढ़'' हुआ। उस समय से आज तक यह नगर किला परीक्षतगढ़ के नाम से जाना जाता है। कुछ लोग तो इसे किला कहकर भी पुकारते हैं । किला परीक्षितगढ़ एक भव्य सुदृढ़ (सौन्दर्य) किला था । जिसमें राजमहल, कचहरी, सैनिक छावनी तथा राज्य कर्मचारियों के लिए उनके पदानुसार मकान बनाये गये थे । राजा जैतसिंह ने दूर-दूर से सुयोग्य राजपुरोहित, राजवैद्य तथा शिल्पकारों को राजकीय सहायता देकर बसाया । यह पूर्वी परगने की परीक्षितगढ़ के नाम से राजधानी थी।

शासन की विशेषताएँ

राजा जैतसिंह ने राज्य में शान्ति, सुरक्षा, व्यापार आदि की सुचारू रूप से व्यवस्था की । राज्य से दस्यु (लुटेरे) भाग गये थे और प्रजा सुख-शान्ति से अपना जीवन यापन करती थी । प्रत्येक नागरिक को राजा से मिलने की छूट थी । राजा जैतसिंह स्वयं राज्य में घूम-घूमकर प्रजा का दुःख-दर्द पूछते थे । प्रतिवर्ष वे अपनी जन्मभूमि (बम्बावड़) तथा 'नीम का तिगाँव' में भी जाते थे । वहाँ ग्राम के बाहर एक 'हिंगोटा' का वृक्ष था। यही वृक्ष के नीचे एक विशाल चतबूरा था। जहाँ बैठकर वे क्षेत्र की समस्याओं को सुनते तथा उनका निवारण करते थे।

राज्य विस्तार

मुगल सल्तनत द्वारा निर्धारित किये गये ग्रामों के अतिरिक्त भी राजा जैतसिंह ने अपने राज्य की सीमाओं का विस्तार किया । पहले गंगा पार बिजनौर जिले का भाग उनके अधीन नहीं था । उन्होंने यह भू भाग तथा हरिद्वार तक (कनखल) क्षेत्र जोतकर अपने राज्य में सम्मिलित किया । इधर दिल्ली सीमा तक इनका राज्य था । उधर उन्होंने मुरादाबाद तक अपना अधिपत्य बना लिया था।

पानीपत का तीसरा युद्ध

वर्ष 1761 ई० में पानीपत युद्ध का उल्लेख हुआ है । यह युद्ध मराठों एवं मुगल बादशाह अहमदशाह के बीच हुआ था परन्तु तीसरे मौर्चे के रूप में राजा जैतसिंह भी थे चूँकि राजा जैतसिंह एवं मराठों का युद्ध कनखल में हुआ था । इस युद्ध में मराठों को हार का मुँह देखना पड़ा था । राजा जैतसिंह की जीत हुई थी । इस वजह से दिल्ली के बादशाह अहमदशाह ने परीक्षितगढ़ राजा जैतसिंह से सहायता माँगी थी। पानीपत युद्ध शाह आलम (द्वितीय) तथा राजा जैतसिंह और मराठों के बीच हुआ था इस युद्ध में मराठों को हार का मुँह देखना पड़ा । शाह आलम तथा राजा जैतसिंह की जीत हो गई थी । चूँकि राजा जैतसिंह पानीपत लड़ाई से पहले दो युद्ध जीत चुके थे। मौहम्मद शाह की सेना को तथा मराठों को पराजित कर चुके थे तथा पानीपत की तीसरी लड़ाई भी राजा जैतसिंह की वजह से अहमद शाह अब्दाली यह युद्ध जीते । चौथा युद्ध काबुली पठानों से हुआ ।

पठानों से दूसरा युद्ध

वर्ष 1772 ई० में दिल्ली सल्तनत के शाह आलम (द्वितीय) को काबूली पठानों ने लगान देना बंद कर दिया था । अत: उसने किला परीक्षितगढ़ राजा जैतसिंह से सहायता माँगी । राजा जैतसिंह और सेनापति गुलाब सिंह ने काबूली पठानों से भयंकर युद्ध किया और उन्हें मार भगाया । काबूली पठानों ने भारत से भागना शुरू कर दिया। इस युद्ध से राजा जैतसिंह का मुगल सल्तनत एवं भारत में दबदबा हो गया । दिल्ली सल्तनत के बादशाह शाह आलम (द्वितीय) ने इन दोनों शूरवीरों को दिल्ली दरबार में सम्मानित किया ।

उत्तराधिकारी

राज जैतसिंह की **रानी रूपकौर** के कोई संतान नहीं थी । उन्हें सैफपुर गाँव के निकट एक नवजात शिशु पड़ा मिला । इस नवजात शिशु को उन्होंने गोद ले लिया और इसका नाम कुँवर किशन सिंह रखा ।

कुँवर किशनसिंह सरल प्रवृत्ति का था । बड़ा होकर भी वह धर्म ध्यान में लगा रहता था जब उसे समझाने पर भी उसने राज्य संचालन में रुचि नहीं दिखाई । तो उनके लिए परीक्षितगढ़-हस्तिनापुर मार्ग पर स्थित गाँव गणेशपुर में एक गढ़ी का निर्माण कराया गया वहाँ **कुँवर किशनसिंह** पूजा अर्चना में निमग्न रहते थे।

प्रतिदिन कुँवर किशनसिंह गणेशपुर से हस्तिनापुर भी जाते थे । वहाँ पर उन्होंने श्रीकृष्ण मन्दिर तथा पाण्डेश्वर मन्दिर का निर्माण सेनापति गुलाबसिंह के सहयोग से कराया था ।

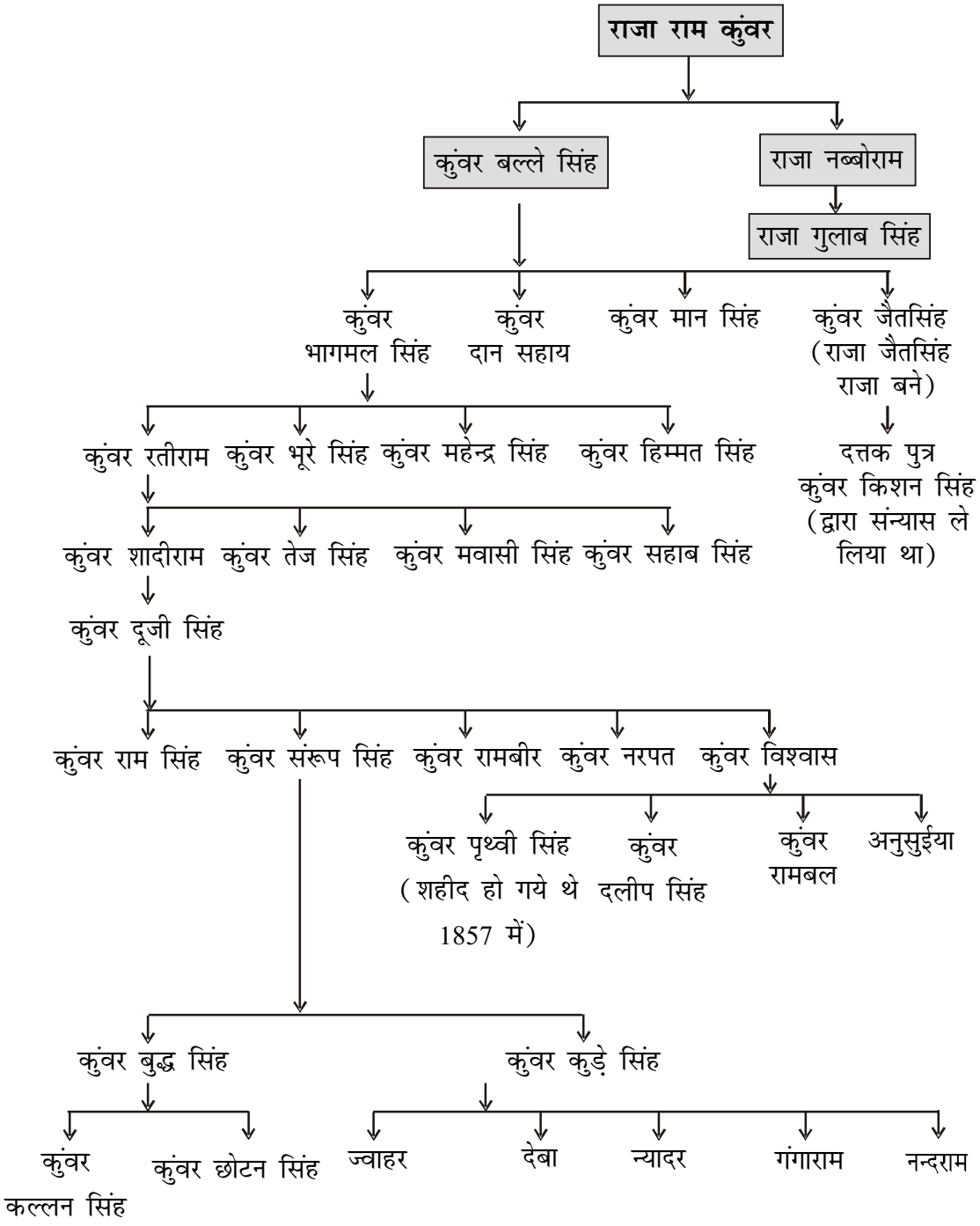
राजा राम कुंवर
कुंवर बल्ले सिंह
राजा नब्बोराम
राजा गुलाब सिंह
कुंवर भागमल सिंह
कुंवर दान सहाय
कुंवर मान सिंह
कुंवर जैतसिंह (राजा जैतसिंह राजा बने)
कुंवर रतीराम
कुंवर भूरे सिंह
कुंवर महेन्द्र सिंह
कुंवर हिम्मत सिंह
दत्तक पुत्र कुंवर किशन सिंह (द्वारा संन्यास ले लिया था)
कुंवर शादीराम
कुंवर तेज सिंह
कुंवर मवासी सिंह
कुंवर सहाब सिंह
कुंवर दूजी सिंह
कुंवर राम सिंह
कुंवर संरूप सिंह
कुंवर रामबीर
कुंवर नरपत
कुंवर विश्वास
कुंवर पृथ्वी सिंह (शहीद हो गये थे 1857 में)
कुंवर दलीप सिंह
कुंवर रामबल
अनुसुईया
कुंवर बुद्ध सिंह
कुंवर कुड़े सिंह
कुंवर कल्लन सिंह
कुंवर छोटन सिंह
ज्वाहर
देबा
न्यादर
गंगाराम
नन्दराम

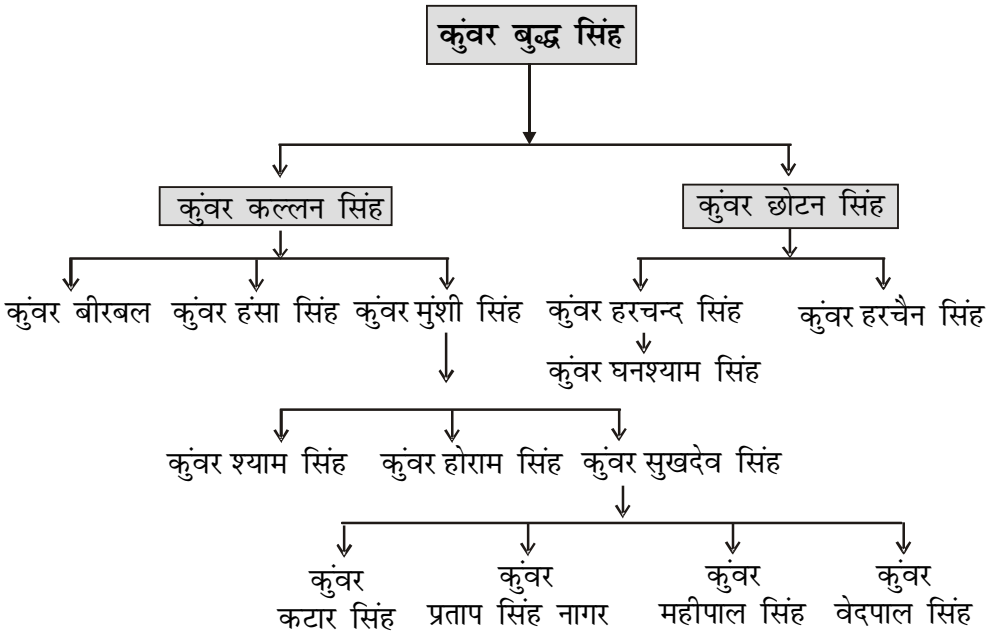

(सचिव)
राजा नैन सिंह स्मारक समिति
(रानी का महल) कस्बा, बहसूमा
जिला मेरठ (उ.प्र.) मो.-7467856455

उपसंहार

उस समय भारतवर्ष में 556 रियासतें थीं। राजा जैतसिंह इनके अग्रणी राजाओं में से एक माने जाते थे। इस महान शासक का स्वर्गवास 27 मार्च 1780 ई० होली के दिन (पूर्णिमा के दिन) हो गया तथा राजा जैतसिंह इस संसार से विदा हो गये। अगले दिन उनके शव के साथ रानी रूपकौर सती हो गयीं। जिनकी स्मृति में सती भवन बनाया गया। आज भी (किला परीक्षितगढ़) के अन्दर रानी रूपकौर सती मन्दिर मौजूद है।

इस कारण किला परीक्षितगढ़ रियासत एवं बहसूमा राजपरिवार और जहाँ तक उनका राज्य था सभी क्षेत्रवासी (गुर्जर एवं अन्य लोग) भी होली के दिन कच्चा भोजन से होलिका का पूजन: करते हैं। अगले दिन अन्तिम संस्कार के पश्चात सेनापति गुलाबसिंह के अनुरोध पर पकवान बनाते हैं। यह परम्परा गुर्जर एवं राजपरिवार आज तक निभाते आ रहे है तथा उस दिन का इंतजार कर रहे हैं जब आराध्य भगवान शिव इस जाति एवं राज परिवार को दिव्य ज्योति का प्रकाश करेंगे। और वह कौन-सी होली की (पूर्णिमा) होगी।

जब राज परिवार एवं गुर्जर जाति होली का पूजन पक्के पकवान से करेंगे। इस प्रकार से किला परीक्षितगढ़ राज्य के सामने मुसीबत आ गई कि परीक्षितगढ़ राज्य की गद्दी पर कौन बैठे। राजा जैतसिंह के (दत्तक) पुत्र कुँवर किशनसिंह को काफी समझाया परन्तु वे नहीं माने। सेनापति गुलाबसिंह ने भी कुँवर किशनसिंह को काफी समझाया परन्तु उन्होंने साफ मना कर दिया कि मुझे राजगद्दी नहीं चाहिए। मुझे शिव भक्ति चाहिए।

इस प्रकार से हस्तिनापुर में **कृष्ण मन्दिर**, **पाण्डेश्वर मन्दिर**, **द्रौपदी घाट, कर्ण मन्दिर** सभी का जीर्णोद्धार **कुँवर किशन** के अनुरोध पर किया गया था । हस्तिनापुर ऐतिहासिक नगरी के ये सभी मन्दिर आज भी विद्यमान हैं। जिनके चित्र भी दिए जा रहे हैं तथा राजकीय भाट द्वारा प्राप्त वंशावली चार्ट भी दिया जा रहा है।

अध्याय 06

राजा नैन सिंह का शासन

राजा गुलाब सिंह द्वारा राजा नैन सिंह नागर को राज्य की बागडौर सौंपना

कुँवर किशन सिंह के राजगद्दी पर बैठने से मना करने पर। दिल्ली सल्तनत के बादशाह शाह आलम (द्वितीय) ने **गुलाब सिंह** को मार्च 1780 ई० में पूर्वी परगने (परीक्षितगढ़) का राजा बना दिया। **राजा जैतसिंह** के सगे भाई **कुँवर भागमल सिंह** गुलाब सिंह से छोटे थे। **कुँवर गुलाब सिंह** बड़े थे। चूँकि गुलाब सिंह राजा जैतसिंह के साथ मराठों एवं काबुली पठानों से जब युद्ध हुआ तो गुलाब सिंह ही सेनापति थे।

राजा गुलाब सिंह की तीन शादियाँ हुई हैं । बड़ी **रानी मायाकौर** से पाँच पुत्र हुए **भूपसिंह, जहाँगीर सिंह, नैन सिंह, बीरबल सिंह**, **सेठू सिंह**। तथा दूसरी **रानी शीशकौर** से चार पुत्र हुए । **अजब सिंह, चमन सिंह, खुशहाल सिंह** और **भवानी सिंह** । तीसरी **रानी सदाकौर** से कोई संतान नहीं थी । **खुशहाल सिंह** और **भवानी सिंह** की अकाल मृत्यु हो गई थी । इस प्रकार राजा गुलाब सिंह के सात पुत्र बचे । चूँकि गुलाब सिंह वृद्ध हो चुके थे । राज्य की गद्दी पर अपने सामने ही अपने पुत्रों में से एक को गद्दी देना चाहते थे।

राजा गुलाब सिंह जी, किला परीक्षितगढ़, मेरठ।

कुँवर नैन सिंह

नैन सिंह का जन्म 21 नवम्बर, 1746 ई० को बहसूमा में हुआ था । रानी मायाकौर की तीसरी संतान **नैन सिंह** बचपन से ही बड़े चतुर स्वभाव के थे । वे बचपन में अपने पिता के साथ युद्ध में जाया करते थे । जब राजा जैतसिंह का दूसरा युद्ध काबूली पठानों से हुआ तो नैन सिंह लगभग 25 वर्ष के थे । वे अपने पिता (गुलाब सिंह) के साथ युद्ध में गये।

इस युद्ध के पश्चात नैन सिंह पंजाब चले गये। वहाँ उन्होंने सिक्ख धर्म अपना लिया तथा सिक्ख धर्म का प्रचार भी करने लगे। सिखों के दसवें गुरु गोविन्द सिंह (1666-1708) ने खालसा सेना का गठन किया था। हिन्दुओं पर बढ़ते अत्याचारों के विरोध में उदासीन भजन करने वाले सिक्खों ने अस्त्र उठा लिये थे। पिता के मना करने पर भी नैन सिंह खालसा के पाँच चिन्ह धारण करते थे। केश, कंघा, कच्छा, कड़ा और कटार। हमेशा धारण किये रहते थे। यहाँ यह उल्लेखनीय है कि गुरू गोविन्द सिंह की माता (गूजरी माता थी) जिसका सिक्ख समाज शबद कीर्तन करते थे।

राजा नैन सिंह

राजा गुलाब सिंह वृद्ध हो चुके थे । उन्होंने अपने ज्येष्ठ पुत्र **भूप सिंह** से राजगद्दी संभालने के लिए कहा परन्तु उन्होंने मना कर दिया । **नैन सिंह** वैसे तो बुलाने पर भी नहीं आते थे । किन्तु पिता के काफी अनुरोध करने पर पंजाब से वापस आ गये ।

राजा गुलाब सिंह कुँवर नैन सिंह को लेकर शाह आलम (द्वितीय) से मिले और कहा कि यह तो सिक्ख धर्म अपना रहा है। शाह आलम (द्वितीय) ने कुँवर नैन सिंह को समझाया और जब वे नहीं माने तो अन्त में कहा कि अगर आप नहीं मानते हो तो फाँसी पर चढ़वा दूँगा। तब कुँवर नैन सिंह भड़क गये और म्यान से कटार निकालकर कहा, आप मुझे हिन्दुत्व से अलग नहीं कर सकते और न ही मैं सिक्ख धर्म को छोड़ूँगा। आज चाहे मैं राजा बनूँ या नहीं। इस बहादुरी पर बादशाह शाह आलम (द्वितीय) चकित रह गये। तभी बादशाह ने राजा गुलाब सिंह को बताया कि आपके सब सातों पुत्रों में कुँवर नैन सिंह सबसे बहादुर बेटा है। आप इन्हीं को राजा बनाये। कुँवर नैन सिंह आपके नाम को चारों ओर रोशन करेगा। नागर वंश में राजा नैन सिंह का नाम उसी प्रकार से लिखा गया। जिस प्रकार से सूर्य वंश में राजा रघु का था। नागर वंश में राजा नैन सिंह का नाम सूर्य के समान है। राजा गुलाब सिंह ने राजा नैन सिंह को राजगद्दी सौंप दी।

राजा नैन सिंह के शासनकाल की विशेषताऐं

सैन्य एवं शस्त्र भण्डार

राजा नैन सिंह ने सेना में नई भर्ती की और पैदल तथा घुड़सवार दोनों प्रकार के सैनिकों का पूरा प्रशिक्षण दिलाया। किले के समीप ही सेना की छावनी थी जिसमें घुड़सवार एवं पैदल

सैनिकों का पृथक-पृथक प्रबंध था। परम्परागत अस्त्र-शस्त्रों के अतिरिक्त नई तकनीकी के अस्त्र-शस्त्रों का भी एक बड़ा भण्डार स्थापित किया। सैनिकों को वेतन के अतिरिक्त अन्य सुविधाएँ भी उपलब्ध कराई जाती थीं। इनकी सेना, साहस, शौर्य, युद्ध-कौशल और देशभक्ति से ओतप्रोत थी। इस वीर सेना की ख्याति पूरे देश में फैल चुकी थी।

राजकोष की स्थापना

राजा नैन सिंह ने एक राजकोष की स्थापना किला परीक्षितगढ़ और दूसरे राजकोष की स्थापना बहसूमा में की । इसके कोषाध्यक्ष उन्हीं के वंशज कहलाये जाने वाले भाई **दर्शनलाल भटनागर** नियुक्त किये गये थे । उनके बाद 1814 ई० में **नन्दलाल भटनागर** नियुक्त हुए । कोषाध्यक्ष के पैतृक भवन आज भी किले बहसूमे राजमहल के निकट खण्डहर के रूप में पड़े हुए हैं। इन्हीं के वंशज आज भी मेरठ में मौजूद हैं । लोकप्रिय अस्पताल एवं सुभारती मेडिकल विश्वविद्यालय, बाईपास (दिल्ली रोड) मेरठ, के संस्थापक एवं अध्यक्ष प्रसिद्ध समाजसेवी माननीय **डॉ. अतुल भटनागर जी** इसी वंश से ताल्लुक रखते हैं ।

सुरंगों का निर्माण

राजा नैन सिंह ने अपने शासनकाल में सुरंग बनवाईं । क्योंकि दुश्मन पर सुरंग के रास्ते जाकर हमला करते थे । यही कारण हुआ कि राजा नैन सिंह मराठों से विजय हासिल कर पाये । सबसे पहले राजा नैन सिंह ने बहसूमे में 'सुरंग' ''दीवाने आम'' से हस्तिनापुर के रास्ते तक बनवाई । यह सुरंग आज भी बहसूमे में राजा नैन सिंह के 'दीवाने आम' महल में मौजूद है । दूसरी सुरंग राजधानी (किला परीक्षतगढ़) के राजमहल से गुढ़मुक्तेश्वर तक जहाँ ''नका कुँआ'' है । इसी सुरंग के रास्ते से जाकर राजा नैन सिंह मराठों पर हमला किया करते थे । इसी कारण मराठे बुरी तरह पराजित हुए थे । राज नैन सिंह ने अपने राज्य का विस्तार मुरादाबाद तक कर लिया था ।

घुड़सवार सेना

राजा नैन सिंह ने अपनी सेना में घुड़सवारों की भर्ती की और घुड़सवार सेना का गठन किया। घुड़सवार सेना की छावनी बहसूमे में बनाई, वहीं पर आज घुड़सवार सेना की छावनी खण्डहर के रूप में विद्यमान है । इस खण्डहर छावनी का चित्र भी साथ में संलग्न है।

तोपखाना

राजा नैन सिंह ने अपनी सेना के लिए तोपों का निर्माण कराया । तौपों का रख-रखाव राजधानी किला परीक्षितगढ़ में किया गया। यही कारण था कि 1857 ई० लार्ड डलहौजी की नीतियों का विरोध करते हुए **राव कदमसिंह** एवं ब्रिटिश सैनिकों से संघर्ष लम्बे समय तक चला इसी तोपखाने की वजह से गौरी सेना घबराती थी। अत: ब्रिटिश सैनिकों को भी तोपों का इस्तेमाल करना पड़ा।

राजमार्गों का निर्माण

अच्छे राजमार्ग, राज्य की सुरक्षा, व्यापार एवं निर्बाघ शासन के लिए अपने शासनकाल में राजा नैन सिंह ने किला परीक्षितगढ़ से गढ़मुक्तेश्वर तक गढ़मुक्तेश्वर से हापुड़ तक सड़क निर्माण कराया तथा एक सड़क किला परीक्षितगढ़ से मवाना होते हुए बहसूमे तक बनवाई । बहसूमे से कनखल हरिद्वार तक भी उन्होंने सड़क बनवाई । सड़कों के किनारे उन्होंने कुँए भी बनवाये ताकि यात्री पानी पी सकें। उन्होंने राजधानी किला परीक्षितगढ़ से हस्तिनापुर तक सुरंग का निर्माण भी कराया तथा दूसरी सुरंग का निर्माण बहसूमे के राजमहल से हस्तिनापुर तक कराया ।

राज्य में गढ़ियों की स्थापना/महलों का निर्माण

राजा नैन सिंह ने राज्य की सुरक्षा एवं राजस्व प्राप्ति के लिए पाँच गढ़ियों का निर्माण कराया। जिनके अवशेष आज भी खण्डहर के रूप में पड़े हैं। गढ़ी/छोटे किले के कप में होती थी।

इनके अधीन गढ़ियाँ इस प्रकार हैं–

1. **पुष्ठी**–बड़े भाई **जहाँगीर सिंह** के अधिकार में
2. **ठिकौली**–छोटे भाई **बीरबल सिंह** के अधिकार में
3. **गोहरा**–छोटे भाई **चमन सिंह** के अधिकार में
4. **कनखल**–छोटे भाई **अजब सिंह** के अधिकार में
5. **फतेहपुर सीकरी**–छोटे भाई **सेन्सरपाल सिंह** के अधिकार में

बहसूमा को राज्य का रूप

बहसूमे का अधिकार एवं जिम्मेदारी सबसे बड़े भाई **भूपसिंह** को सौंपी गईं । भूपसिंह का समस्त परिवार आज भी बहसूमा में रहता है ।

राजा नैन सिंह ने बहसूमा को दिल्ली सल्तनत से राज्य का अधिकार दिलाया था। वर्ष 1792 ई० में उन्होंने यहाँ किले का निर्माण कराया। साथ ही सैनिक भवन भी बनवाया। उनकी घुड़सवार सेना बहसूमे में रहती थी। उन्होंने राजमहल तथा दीवाने आम का निर्माण भी कराया। दूर-दूर से राजपुरोहितों, राजवैद्यों तथ शिल्पकारों को राजकीय सहायता देकर यहाँ बसाया गया।

इस प्रकार किला परीक्षितगढ़ राज्य की उप-राजधानी बहसूमा को बनाया गया। जब राजा नैन सिंह पंजाब से वापस आये तो उनके साथ पश्चिमी सिक्ख जाट समुदाय भी आया जिसे उन्होंने बहसूमे तथा गढ़मुक्तेश्वर के पास बसा दिया और खेती के लिये जमीन प्रदान की। जाटों ने खेती तथा युद्ध दोनों ही कार्यों में राजा नैन सिंह का साथ दिया। पाँच ग्राम सिक्ख गुर्जरों के भी राजा नैन सिंह ने ही बसाये थे। इन सभी ग्राम में सिक्ख गुर्जर रहते हैं।

कृषकों की सहायता

राजा नैन सिंह ने खेतों के बीच तालाब, कुएँ एवं रास्ते बनवाये । कृषकों की समस्या का समाधान वे तुरन्त करते थे । कृषकों से मालगुजारी बहुत कम ली जाती थी । वर्ष 1798 ई० में सूखा पड़ जाने पर कृषकों की मालगुजारी माफ कर दी । किन्तु शाह आलम (द्वितीय) के माँगने पर दो लाख की मालगुजारी स्वयं जमा की थी । जिसमें से कुछ धन **लाला हरसुखराय जैन**, दिल्ली से लिया था । धन वापस करने पर लाला हरसुखराय ने मना कर दिया और जैन मन्दिर बनवाने के लिए जमीन देने का अनुरोध किया । जिसे राजा नैन सिंह ने स्वीकार किया ।

राज्य का विस्तार

पुष्पावतीपुर से लेकर ऋषिकेश तक और दिल्ली के निकटवर्ती क्षेत्र से लेकर रूहेलखण्ड तक इन्होंने अपने राज्य का विस्तार किया । अधिक विस्तार करने का लाभ इसलिए नहीं था क्योंकि इनका राज्य दिल्ली सल्तनत के अन्तर्गत था।

विवाहित जीवन

राजा नैन सिंह का विवाह ग्राम रोडरपुर के मावी गौत्र के **प्रधान रतीराम** की पुत्री **जैनकोर** के साथ सम्पन्न हुआ। जैनकोर से दो पुत्र हुए (1) **नत्थासिंह** और **गुरूनानी सिंह** राजा नैन सिंह का दूसरा विवाह अघाने गौत्र में, **साहबकौर** से हुआ । तीसरा विवाह रहमापुर–माखनागर की **दरयावकौर** के साथ हुआ । राजा नैन सिंह की दूसरी और तीसरी रानियों से कोई संतान नहीं थी।

धार्मिक नीति

राजा नैन सिंह सभी धर्मों का सम्मान करते थे । वे धार्मिक प्रवृत्ति के थे तथा मघ, शराब, माँस के विरोधी थे । उन्होंने हिन्दू, जैन तथा सिख धर्मों के कार्यों में भी सहयोग दिया ।

हिन्दू मन्दिरों का निर्माण

राजा नैन सिंह ने बहसूमा में किले के पास **शिव मन्दिर** का निर्माण कराया । हस्तिनापुर में कुँवर किशन सिंह द्वारा बनावाये गये, **पाण्डेश्वर मन्दिर** तथा **श्रीकृष्ण मन्दिर** को बनवाया तथा **शिव मन्दिर**, **कर्ण मन्दिर, द्रौपदी घाट** का निर्माण कराया । उन्होंने गढ़मुक्तेश्वर स्थित महाभारत काल के उस नक्के कुओं का भी जीर्णोद्धार कराया। कहा जाता है कि यह वही कुँआ है जिसके जल से स्नान करने पर राजा जनमेयजय का कोढ़ दूर हुआ था। इस **नक्के कुँए** का जीर्णोद्धार भी राजा नैन सिंह ने कराया।

हस्तिनापुर का दिगम्बर जैन मन्दिर (प्राचीन बड़ा मन्दिर)

पावन जैन तीर्थ हस्तिनापुर नामक पुस्तक से प्राप्त जानकारी के अनुसार–18 व 19वीं शताब्दी में यहाँ मन्दिर एवं निधियों की हालत बड़ी जीर्ण-शीर्ण थी । सभी लोगों की इच्छा थी कि यहाँ मन्दिर अवश्य बनना चाहिए । लोगों की प्रार्थना पर सम्वत् 1858 (सन् 1801) ज्येष्ठ वदी 13 के मेले में दिल्ली निवासी **हरसुख राय जैन** जो मुगल बादशाह शाहआलम (द्वितीय) के खजांची थे। उन्होंने मन्दिर के निर्माण के लिए अपनी स्वीकृति दे दी । यह इलाका उस समय, बहसूमे के

गुर्जर सम्राट नैन सिंह के अधीन था। शाहपुर के गुर्जर यहाँ जैन मन्दिर निर्माण के अकारण विरोधी थे।

राजा नैन सिंह के एक मित्र शाहपुर निवासी **लाला जयकुमार** मल थे। लाला हरसुखराय ने उनसे अनुरोध किया कि आप राजा नैन सिंह से कहकर यह कार्य करा दीजिए। उसी रात को लाला जी ने राजा साहब से इसकी चर्चा की और कहा कि लाला हरसुखराय ने इसके लिए भरी पंचायत में अपनी पगड़ी सबके समक्ष उतारकर रख दी है। राजा नैन सिंह, हरसुखराय के भी बड़े कृतक्ष थे, क्योंकि वे एक बार शाही खजाने के कर्ज के एक लाख रुपये समय पर अदा नहीं कर सके थे। जिसको लाला हरसुखराय ने स्वयं अदा किया था। बस, उन्होंने मन्दिर निर्माण की स्वीकृति दे दी, इतना ही नहीं लाला जय कुमार मल के अनुरोध पर उन्होंने मन्दिर का शिलान्यास भी अपने हाथों से स्वीकार कर लिया।

दूसरे दिन लाला हरसुखराय, लाला जयकुमार मल और सैंकड़ों जैन व्यक्तियों की उपस्थिति में राजा नैन सिंह ने धरातल से चालीस फुट ऊँचे टीले पर दिगम्बर जैन मन्दिर की नींव में अपने हाथों से पाँच ईंट रखीं। इसके बाद लाल हरसुखराय के धन से लाला जयकुमार मल की देख-रेख में विशाल शिखरचन्द्र दिगम्बर जैन मन्दिर का निर्माण हुआ।

सिक्ख धर्म का प्रचार

राजा नैन सिंह के शासन में वर्ष 1804 ई० में सिक्ख धर्म का कुछ प्रचार हुआ। किला परीक्षितगढ़ और किठौर के पास के गाँवों के गुर्जर सिक्ख तथा जाट सिक्ख, को राजा नैन सिंह पंजाब से स्वयं अपने साथ लाये थे । हस्तिनापुर के निकट ग्राम सैफपुर निवासी, **भाई धर्मसिंह** (गुरु गोविन्द सिंह) के पंच प्यारे में से एक थे । वे भी राजा नैन सिंह के परिवार के थे । आज भी सैफपुर ग्राम के समस्त ग्राम गुर्जर समुदाय का है और उनमें राजा नैन सिंह के वंशज ही पँच प्यारे हैं । किन्तु राजा नैन सिंह के भाईयों ने सिक्ख धर्म नहीं अपनाया । अतः प्रचार सीमित रहा। प्रत्येक व्यक्ति को उन्होंने सिक्ख धर्म अपनाने पर जोर नहीं दिया।

मराठों से युद्ध

वर्ष 1786 ई० में मराठों ने कनखल पर आक्रमण किया । मराठा अपनी सैन्य शक्ति को बढ़ाते हुए कनखल हरिद्वार तक चले आये । जब मराठों ने हरिद्वार पर आक्रमण किया । उसके पहले पानीपत का तीसरा युद्ध वर्ष 1761 में हुआ था । इस युद्ध में मराठों की हार हुई थी । चूँकि राजा जैतसिंह ने अहमद शाह अब्दाली के साथ मिलकर लड़ा था । उसके पश्चात मराठों ने उत्तर भारत में वर्ष 1786 ई० में पुनः आक्रमण किया था यह युद्ध राजा नैन सिंह और मराठों के बीच हुआ था।

यह युद्ध कनखल-हरिद्वार के बीच हुआ था। इस युद्ध में लण्डौरा राजा रामदयाल सिंह और राजा नैनसिंह के बीच प्रतिद्वन्दिता चल गई थी। इस युद्ध में राजा नैन सिंह के दो भाई चमन सिंह और सेठू सिंह शहीद हो गये थे। इस युद्ध में राजा नैन सिंह की विजय हुई थी। तो मराठों ने चुपके से राजा नैन सिंह के राज्य पर भी आक्रमण कर दिया। इस युद्ध में राजा नैनसिंह और उनके छोटे भाई बीरबल सिंह अपने सैनिकों के साथ आगे बढ़े और मराठा सैनिक शक्ति को चुनौती दी। राजा नैन सिंह की सेना प्रशिक्षित और नई तकनीक के शस्त्रों से सुसज्जित थी। भयंकर युद्ध हुआ जिसमें मराठों की पराजय हुई। किन्तु इस युद्ध में राजा नैन सिंह के दो छोटे भाई चमन सिंह और सेठू सिंह शहीद हो गये। इस युद्ध में पराजय के बाद मराठों ने कभी भी पश्चिमी उत्तर प्रदेश की और मुड़कर नहीं रेखा।

किला परीक्षितगढ़ (माता कात्यानी देवी) मन्दिर का निर्माण

परीक्षितगढ़ का प्राचीन ऐतिहासिक (माता) **कात्यानी देवी मन्दिर** का निर्माण से सम्बन्धित मान्यता है कि होली की रात (पूर्णिमा) को राजा नैन सिंह को देवी ने सपने में बताया कि तीन दिन बाद शत्रु उनके राज्य पर आक्रमण करेगा । रक्षा करनी है तो महल की पूर्व दिशा में मेरा मन्दिर बनाने का प्रण करने पर शत्रु पराजित होगा । सुबह ही राजा ने उक्त स्थान की खुदाई कराई तो प्राचीन शिला मिली । राजा नैन सिंह ने मन्दिर निर्माण का प्रण लिया ।

वही दुश्मनों द्वारा (मराठा सेना) पश्चिम उत्तरी द्वार घेरने की सूचना मिली । उस युद्ध में राजा नैन सिंह को विजय प्राप्त हुई थी।

इसी चैत्र मास के नवरात्र में षष्ठी रात की सुबह सप्तमी की स्वपन दिखाई दिया था। तब से आज तक सप्तमी के दिन माता का मेला लगता है। तभी माता कात्यानी देवी की शक्ति के चलते दुश्मन को पराजय का मुँह देखना पड़ा। तभी राजा ने मन्दिर निर्माण सम्वत् 1845 से शुरू कराया जो सम्वत् 1846 (सन् 1789 से 1790) में पूरा हुआ।

इस मन्दिर में उनके शासनकाल का संस्कृत भाषा की जननी (प्राकृत भाषा) का शिलालेख में वर्णन किया गया है। राजा नैन सिंह अपने राज्य को रूहेलखण्ड तक बढ़ाते चले गये।

मराठा युद्ध के बाद

कुँवर बीरबल सिंह ने मराठों से युद्ध में बड़ी बहादुरी से युद्ध किया अतः उनकी गढ़ी ठिकौली के अतिरिक्त उन्हें पाँच ईनाम दिये थे। मराठे युद्ध के समय की तलवार आज भी गढ़ी ठिकौली में अवशेष हैं। इसी तलवार से मराठों से युद्ध किया था।

उपसंहार

राजा नैन सिंह ने अपने भाईयों को समस्त अधिकार सौंप दिये थे । उन्होंने किसी धर्म, जाति का कोई पक्षपात नहीं किया । मुगल सल्तनत के अन्तर्गत होने पर भी उनके राज्य के क्षेत्र में किसी भी हिन्दू का धर्म परिवर्तन नहीं हुआ । जिस प्रकार नागर वंश के प्रतापी राजा नागभट्ट (तृतीय) ईसा की 8वीं शताब्दी में थे । उसी प्रकार राजा नैन सिंह ईसा की 18वीं शताब्दी में प्रतापी राजा थे । उनके आदर्श आज भी अनुकरणीय हैं । इस महान शासक की मृत्यु 21 मार्च, 1818 ई० को हो गई थी किन्तु आज भी लोग राजा नैन सिंह को बड़े सम्मान के साथ याद करते हैं। जैसे सूर्य वंश में राजा रघु को याद किया जाता है ।

महाभारत काल के पश्चात गुर्जर एवं यदुवंश को चन्द्रवंश कहा जाता है । क्योंकि 1192 ई० के पश्चात राजपूत एवं गुर्जर राजा अलग-अलग विभक्त हो गये थे । इसलिए 18वीं शताब्दी में चन्द्रवंश के नागर गौत्र में राजा नैन सिंह सूर्य के समान हैं।

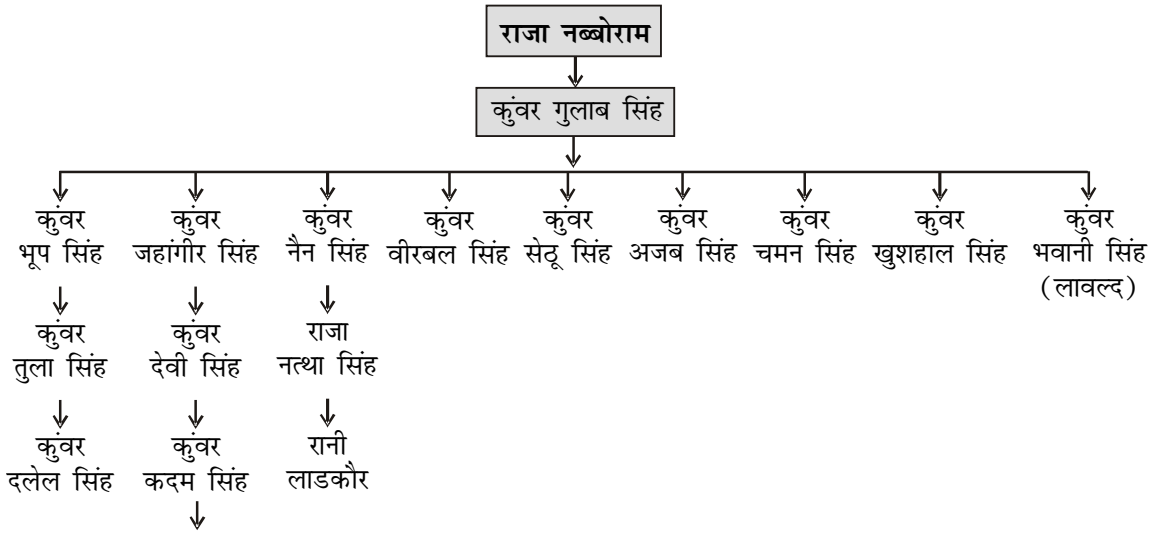

10 मई, 1857 की क्रांति का नेतृत्व किया इनके कोई संतान नहीं थी क्षेत्र की जनता ने इन्हें क्षेत्र का राजा घोषित कर दिया था परन्तु ब्रिटिश शासन के गर्वनर जनरल लार्ड डलहौजी द्वारा राज हड़प नीति का कानून बनाने के कारण इन्होने मेरठ क्रांति का नेतृत्व किया। चौदह महीने संघर्ष करने के बाद लगभग 28 जुलाई, 1858 को पूरे बहसूमा परिवार को फांसी दी गयी और राव कदम सिंह जी की अस्थियों को लार्ड डलहौजी विदेश (लंदन) में ले गये थे।

परीक्षितगढ़ में स्थित राजा जैत सिंह का किला

परीक्षितगढ़ में स्थित राजा जैत सिंह का किला जो 1752 ई. में बनवाया था। उसी दिन से परीक्षितगढ़ का नाम बदलकर किला परीक्षितगढ़ किया गया।

राजा जैत सिंह का राजमहल, स्थित किला परीक्षितगढ़

परीक्षितगढ़ में स्थित कात्यानी देवी मन्दिर

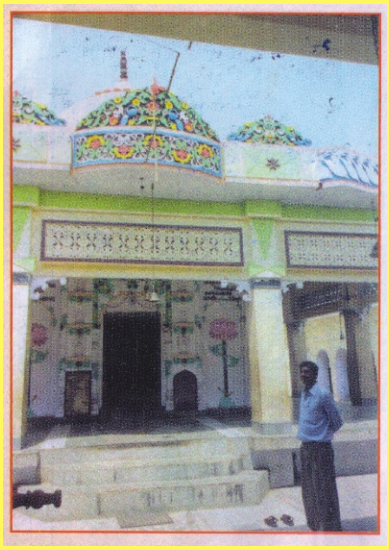

किला परीक्षितगढ़ स्थित कात्यानी देवी मन्दिर जिसे राजा नत्था सिंह ने अपने पूर्वजों की मराठा विजय के गौरव में 1828 ई. में बनवाया।

किला परीक्षितगढ़ स्थित कात्यानी देवी के मन्दिर में प्राकृत लिपि में उत्कीर्ण शिलालेख जिसमें तीनों राजाओं के शासनकाल का वर्णन है।

बहसूमा में राजा नैन सिंह के महल

राजा नैन सिंह का बहसूमा स्थित राजमहल

राजा नैन सिंह का बहसूमा स्थित दीवाने खास

बहसूमा में राजा नैन सिंह के महल

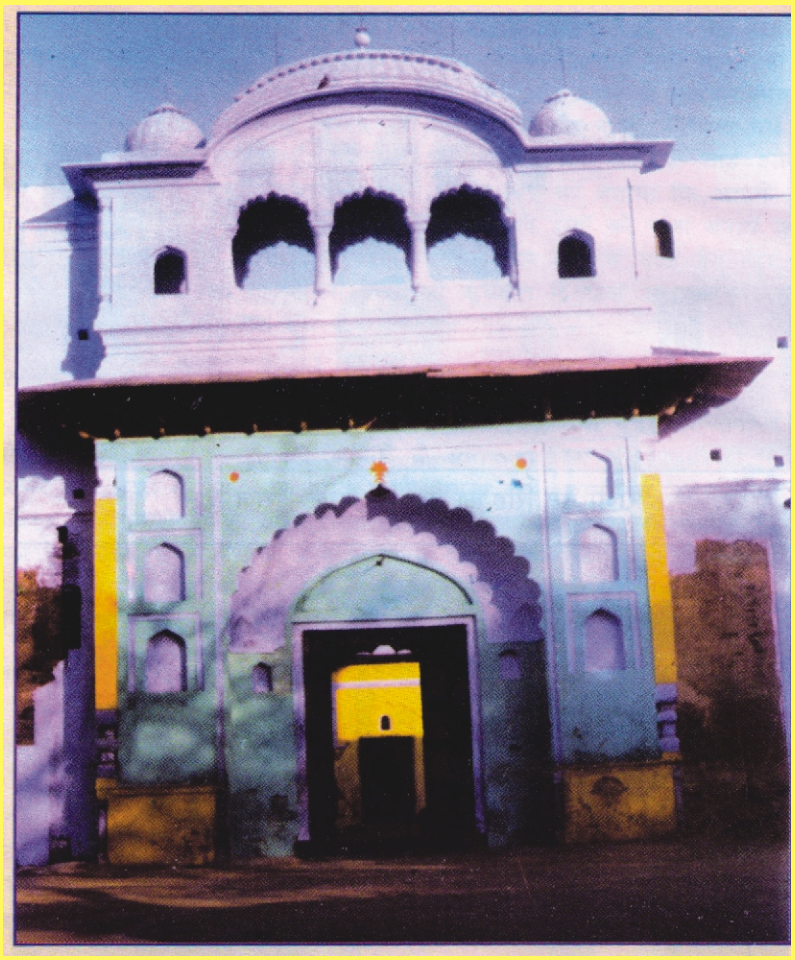

राजा नैन सिंह का बहसूमा में दीवाने आम
इसी दीवाने आम से एक सुरंग पाण्डेश्वर मन्दिर, हस्तिनापुर पहुँचती है।

बहसूमा में राजा गुलाब सिंह द्वारा बनवाया गया शिव मन्दिर

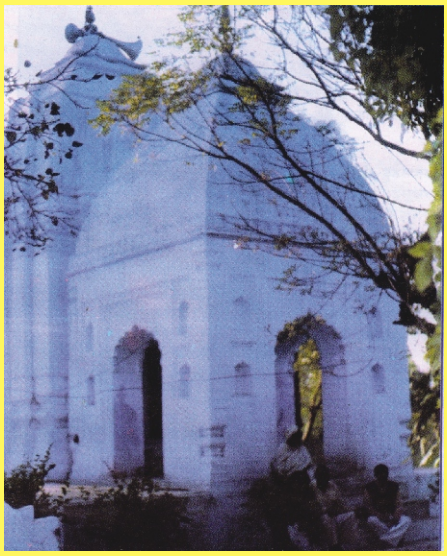

राजा नैन सिंह का बहसूमा में स्थित शिव मन्दिर जो उनके पिता राजा गुलाब सिंह ने बनवाया था, राजमहल के निकट है।

बहसूमा में स्थित सैनिक भवन

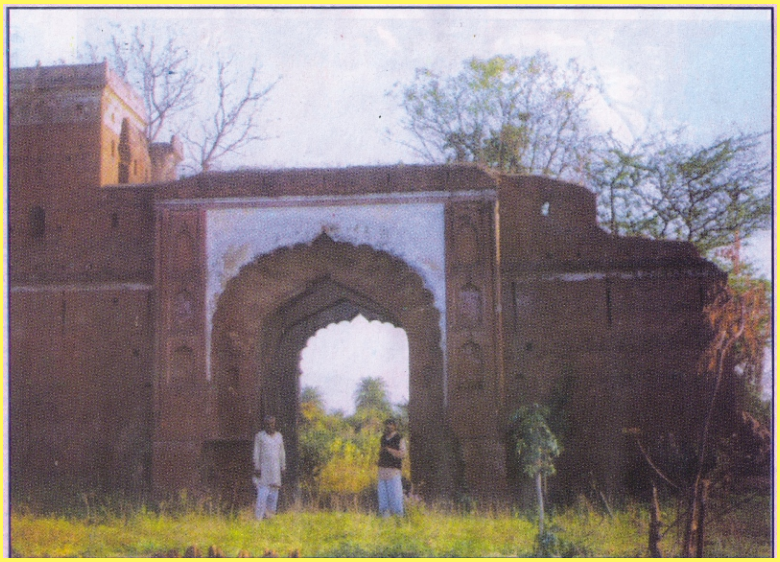

राजा नैन सिंह का बहसूमा में स्थित सैनिक भवन जिसमें राजा नैन सिंह की सेना रहती थी।

नवजीवन इण्टर कॉलिज बहसूमा में राजा नैन सिंह की 255वीं जयन्ती के अवसर पर शिलालेख की स्थापना

उक्त शिलालेख नवजीवन इण्टर कॉलिज बहसूमा में राजा नैन सिंह की 255वीं जयन्ती के अवसर पर तत्कालीन संसदीय कार्यमंत्री श्री हुकम सिंह जी मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित हुए। उक्त कार्यक्रम में राजा नैन सिंह कार्य समिति ने विद्यायल को लगभग 4 लाख रूपये में से 51 हजार समिति के सचिव प्रताप नागर द्वारा तथा लगभग 3.5 लाख मंत्री जी द्वारा विद्यालय को विधायक निधि से दिलाये। उक्त प्रबन्ध समिति ने वायदे के अनुसार राजा नैन सिंह के नाम पर बने लैब का नाम नहीं रखा है। उक्त समिति के पदाधिकारीयों द्वारा इसकी घोर निंदा की गयी।

हस्तिनापुर स्थित पाण्डेश्वर मन्दिर व कर्ण मन्दिर

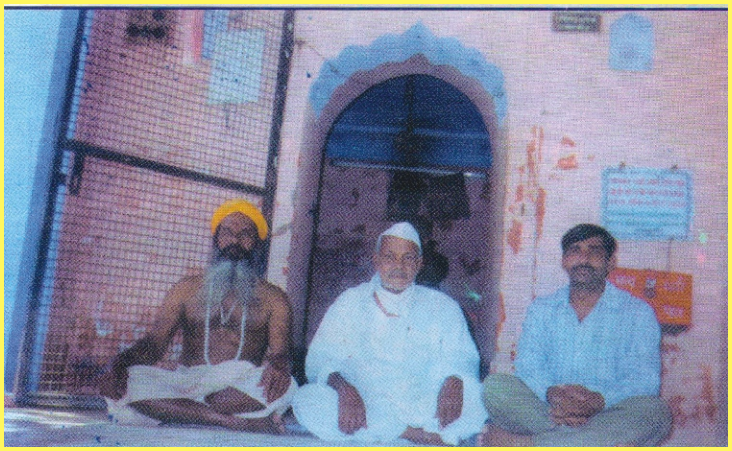

हस्तिनापुर स्थित पाण्डेश्वर मन्दिर जिसे राजा नैन सिंह ने सन् 1798 ई. में बनवाया।

हस्तिनापुर स्थित बड़ा जैन मन्दिर

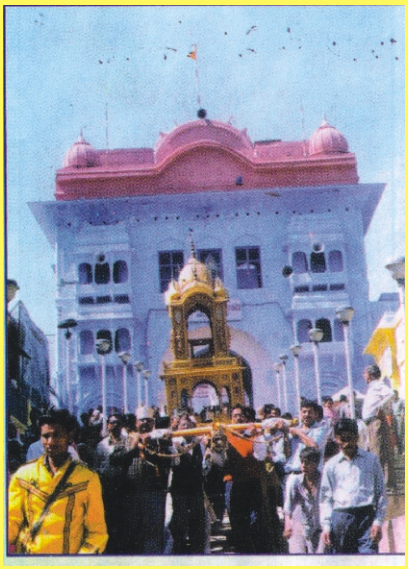

हस्तिनापुर स्थित श्री दिगम्बर जैन बड़ा मन्दिर जिसकी आधारशिला राजा नैन सिंह ने सन् 1801 ई. में रखी थी।

श्रीमती गीता प्रधान ब्लाक-प्रमुख (मवाना) व डा. योगेश प्रधान-पूर्व-निदेशक मिल्क बोर्ड (मेरठ)

मुकुल गोयल
(I.P.S.)
पुलिस महानिदेशक (उ.प्र.)
लखनऊ

पुलिस हैडक्वाटर,
9 वां तल, टावर-2
गोमतीनगर एक्सटेंशन
शहीद पथ, लखनऊ

शुभकामना संदेश

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि ''**राजा नैन सिंह स्मारक समिति बहसूमा, मेरठ**'' द्वारा राजा नैन सिंह स्मारिका पुस्तक का प्रकाशन किया जा रहा है। इस स्मारिका द्वारा मेरठ क्रान्ति के महानायक कुँवर कदम सिंह जी की 1857 की महाक्रान्ति में ब्रिटिश शासन के खिलाफ बिगुल बजाने की घटनाओं का विशेष रूप से वर्णन है। साथ ही हजारों क्रांतिकारियों के योगदान व शहादत का प्रेरणापूर्ण वर्णन है। इससे भारत की नयी पीढ़ी को देश भक्ति एवं समाज सेवा की प्रेरणा मिलेगी। स्मारिका के प्रकाशन की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ।

प्रेषित:
राजा नैन सिंह समिति,
कस्बा-बहसूमा, जनपद-मेरठ

मुकुल गोयल

अध्याय 07

राजा नत्थासिंह नागर एवं रानी लाडकौर

राजा नत्था सिंह नागर

राजा नैन सिंह की मृत्यु के पश्चात उनके ज्येष्ठ पुत्र **नत्थासिंह** गद्दी पर बैठे। राजा नत्थासिंह के छोटे भाई **गुरुनामी सिंह** की अकाल मृत्यु हो गई थी। जब राजा नत्थासिंह गद्दी पर बैठे तो उन्होंने पूर्वजों की विजय स्मृति में किला परीक्षितगढ़ में **''माता कात्यायनी देवी''** के मन्दिर का निर्माण कराया। उसमें जो शिलालेख लगा है वह वर्ष सन् 1829 ई० का है। शिलालेख में बोलचाल की भाषा प्राकृत और संस्कृत भाषा लिखित है। शिलालेख में राजा जैतसिंह और राजा नैन सिंह के शासन की विशेषताओं का वर्णन है।

वर्ष 1827 ई० में राजा नत्थासिंह ने मेरठ शहर के अन्दर **किला हाऊस** का निर्माण कराया था। जिसका नाम बाद में **राजा बलवन्त सिंह** ने वर्ष 1899 ई० में **''लण्डौरा हाऊस''** कर दिया था। लण्डौरा हाऊस से सटे मार्किट का नाम राजा नत्थासिंह की पुत्री **लाडकौर** के सम्मान में **गुजरी मार्किट** रखा गया था। जो आज बदलते-बदलते **गुदड़ी मार्किट** हो गया है।

राजा नत्था सिंह जी, किला परीक्षितगढ़, मेरठ।

राजा नत्थासिंह का विवाह नवल ग्राम में हुण गौत्र के **बसन्ता सिंह** की पुत्री **दरयावकौर** से हुआ था । इनके केवल एक पुत्री हुई लाड़कौर । पुत्र कोई नहीं था । पुत्र न होने से परीक्षितगढ़ राज्य के सामने उत्तराधिकारी का प्रश्न खड़ा हो गया।

राजा नैन सिंह ने अपना दबदबा कनखल हरिद्वार तक बना लिया था। निकटवर्ती रियासत लण्डौरा के राजा रामदयाल सिंह का उनके सामने कहीं कुछ स्थान नहीं था। राजा रामदयाल सिंह, राजा नैन सिंह को नीचा दिखाने की कोशिश में लगे रहते थे। किन्तू नैन सिंह के जीते जी उनकी एक न चली। इसी सनक में वे कनखल में राजा नैन सिंह से युद्ध भी कर बैठे पर उन्हें कुछ लाभ न हुआ।

राजा नत्थासिंह अपने पिता की भाँति कुशल प्रशासक थे। किन्तु उनके अनुसार दूरदर्शी और साहसी नहीं थे। जाने कैसे राजा नत्थासिंह ने अपनी इकलौती पुत्री लाड़कौर का विवाह लण्डौरा के राजा रामदयाल सिंह के ज्येष्ठ पुत्र खुशहाल सिंह से कर दिया। 11 मार्च, 1829 ई० में (फाल्गुन की फुलेरादोज) को यह विवाह सम्पन्न हुआ। राजा नैन सिंह होते तो कभी भी यह सम्बन्ध न होने देते। राजा नत्था सिंह ने पुत्री को दहेज स्वरूप लगभग 183 गाँव और राजकोष भी लण्डौरा राज्य को दे दिये।

इस प्रकार राजा नत्थासिंह का परीक्षितगढ़ राज्य में कोई योगदान नहीं रहा। बल्कि बहसूमा और परीक्षितगढ़ रियासत राज्य दोनों छोटे हो गये। इसके बाद कुल 354 गाँव शेष रहे। उन्होंने अपने पिता की विरासत का पूरी जिम्मेदारी से निर्वाह नहीं किया। राजा नत्थासिंह शीघ्र ही 15 अगस्त वर्ष 1833 ई० में इस संसार से विदा हो गये।

रानी लाड़कौर

राजा नत्थासिंह की वर्ष 1833 ई० में मृत्यु हो जाने पर उनके राज्य का पूरा स्वामित्व रानी लाड़कौर को मिला। उनके पति **राजा खुशहाल सिंह** ने अपने छोटे भाई **हरवंश सिंह** को

परीक्षितगढ़ का केयर टेकर बना दिया तथा रानी लाड़कौर ने अपने चचेरे भाई **कुँवर दलेल सिंह** को बहसूमा और **कुँवर देवी सिंह** को किला परीक्षितगढ़ का सेनापति बना दिया।

कुँवर दलेल सिंह

राजा नैन सिंह के बड़े भाई **भूप सिंह** का विवाह अघाने गौत्र में **किशन सहाय** की पुत्री **धर्मकौर** से हुआ था। धर्मकौर से दो पुत्र **तुला सिंह** व **लक्ष्मण सिंह** हुए। कुँवर तुला सिंह का विवाह ''रोहले'' के **बालकिशन सिंह** की पुत्री **कवलकौर** से हुआ और इसके पुत्र **दलेल सिंह** हुए। इसी दलेल सिंह को रानी लाड़कौर ने बहसूमा का कार्यभार सौंपा। कुँवर दलेल सिंह का विवाह ग्राम पांचली में चपराना गौत्र के **जयपाल सिंह** की पुत्री **जैनकौर** से हुआ था। जिनके पुत्र **निहाल सिंह** हुए।

राजा खुशहाल सिंह ने (कार्यभार) छोटे भाई **कुँवर हरवंश सिंह** को सौंप दिया था। **कुँवर हरवंश सिंह**, कुंवर दलेल सिंह, कुंवर देवी सिंह व कुंवर कदम सिंह के प्रभाव को जानते थे। अतः वे अंग्रेजों से मिल गये। अंग्रेजों का उस समय दिल्ली सल्तनत पर प्रभाव (प्रभुत्व) था।

''वर्ष 1836 ई० में ऑकलैण्ड भारत के गर्वनर जरनल थे। उन्होंने देखा कि दिल्ली के आसपास सभी राजघराने गुर्जर जाति के थे। इन पर प्रभुत्व पाना उन्हें कठिन लगा।''

उन्होंने इनको अपनी सूची में लुटेरों, डाकुओं में शामिल कर लिया। इस प्रकार गुर्जरों का अपमान होने लगा। दूसरे उन्होंने 'फूट डालो और राज करो' की नीति अपनाई। कुंवर दलेल सिंह और कुंवर देवी सिंह और पृथ्वी सिंह ने उनका विरोध किया । तो अंग्रेजों ने कुंवर हरवंश सिंह को अपने पक्ष में करके वर्ष 1836 ई० में पूरे परीक्षितगढ़ राज्य का राजा घोषित कर दिया। इस प्रकार रानी लाड़कौर का पूरा वर्चस्व कायम न रह सका।

पुरा में महादेव मन्दिर का निर्माण

वर्ष लगभग 1842 ई० में रानी लाडकौर (महारानी लण्डौरा) जब दिल्ली मीटिंग के पश्चात वापस लण्डौरा जा रही थीं तो रास्ते में पुरा गाँव पड़ा। पुरा गाँव में एक स्थान पर उनका हाथी अड़ गया और आगे नहीं बढ़ा। पीलवान के हाथी को काफी प्रयास करने के बावजूद भी हाथी आगे नहीं बढ़ा। तब पीलवान ने रानी को बताया कि आपका हाथी आगे नहीं बढ़ रहा है। तब रानी ने अपनी फौज को वहीं रूकने का आदेश दिया।

पुरा महादेव मंदिर में राजा राम दयाल सिंह जी की मुर्ति का नमन करते हुए।

रात्रि में सुबह के समय रानी को एक स्वप्न दिखाई दिया। स्वप्न में भगवान शिव ने रानी लाडकौर को दिव्य ज्योति के माध्यम से दर्शन दिये हैं। उन्होंने कहा की सतयुग के समय की मेरी सफेद शिवलिंग इसी स्थान पर है। सुबह होते ही रानी ने वहाँ खुदाई कराई तो सफेद रंग का शिवलिंग प्राप्त हुआ। कहा जाता है कि इस शिवलिंग की पूजा स्वयं परशुराम जी करते थे। यह वही स्थान था जहाँ परशुराम के पिता जमदीग्न अपनी रेणुका के साथ रहते थे। यहाँ से ही हस्तिनापुर का राजा सहस्त्रबाहु उनकी पत्नी रेणुका को उठाकर ले गया था।

रानी लाडकौर ने उसी स्थान पर पुरा महादेव मन्दिर का निर्माण कराया। पश्चिमी उत्तर प्रदेश में पुरा महादेव मन्दिर अब एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक स्थान बन गया है। यह सब प्रमाणिक इतिहास मन्दिर महादेव एवं राजकीय भाट राजा लण्डौरा से प्राप्त हुआ।

रानी लाड़कौर के पति राजा खुशहाल सिंह की मृत्यु वर्ष 1848 ई० में हो गयी थी। रानी लाड़कौर के एक पुत्र **रगबीर सिंह** वर्ष 1844 ई० में पैदा हुआ। तत्पश्चात रानी लाड़कौर की मृत्यु 1859 ई० में हुई तब राजा रगबीर सिंह 16 वर्ष के थे। माता लाड़कौर के पश्चात ही राजा रगबीर सिंह की शादी परिनगर (रियासत) के **प्रधान नारायण सिंह** की बहन **धर्मकौर** के साथ मार्च 1861 ई० में हुई थी।

1857 Revolt Hero "Rao Kadam Singh Gujjar"

राव कदम सिंह अपने दस हजार क्रांतिकारियों के साथ तथा बहसूमा राज परिवार के सदस्यों के साथ बहसूमा, मवाना व किला परीक्षितगढ़ में ब्रिटिश्ठा शासन के खिलाफ लोजीलेक्सी एक्ट अर्थात् राज हड़पने की नीति का विरोध करते हुए शहीद हो गये।

अध्याय 08

कुँवर कदम सिंह (1857 की क्रान्ति के नायक)

कुँवर कदम सिंह

1857 का विद्रोह सिपाहियों के अंसतोष का परिणाम मात्र नहीं था। वास्तव में यह औपनिवेशिक शासन के चरित्र, उसकी नीतियों, उसके कारण कम्पनी के शासन के प्रति जनता के संचित असंतोष का और विदेशी शासन के प्रति उनकी घृणा का परिणाम था।

एक शताब्दी से अधिक समय तक अंग्रेज इस देश पर धीरे-धीरे अपना अधिकार बढ़ाते जा रहे थे और इस काल में भारतीय समाज के विभिन्न वर्गों में विदेशी शासन के प्रति जन-असंतोष तथा घृणा में वृद्धि होती रही। यही वह असंतोष था जिसका अन्तिम रूप एक जनविद्रोह के रूप में उभरा। 1857 का विद्रोह ब्रिटिश नीतियों और साम्राज्यवादी शोषण के प्रति जन-असंतोष का उभार था।

1857 के विद्रोह के प्रमुख केन्द्र एवं प्रमुख विद्रोही नेता

	केन्द्र	विद्रोह नेता		दमनकर्त्ता
1.	मेरठ	राव कदम सिंह	10 मई 1857	मेजर नरल हैविट
2.	दिल्ली	बहादुरशाह II	11 मई 1857	निकलसन हड़सन
3.	लखनऊ	बेगम हजरत/बिरजिस कादिर	4 जून 1857	कालिम कैदबल
4.	झाँसी	रानी लक्ष्मीबाई	4 जून 1857	कालिम कैदबल
5.	ग्वालियर	तात्या टौपे	4 जून 1857	जनरल ह्यूरोग
6.	कानपुर	नाना साहब	5 जून 1857	जनरल ह्यूरोग
7.	जगदीशपुर	कुँवर सिंह/अमर सिंह	12 जून 1857	विलियम टेंकर
8.	इलाहाबाद	लियाकत अली	6 जून 1857	कर्नल नीक
9.	बरेली	खान बहादुर खाँ/अखतर खाँ	जून 1857	सिवेन्ट आयर

कुंवर कदम सिंह का जन्म वर्ष 25-10-1831 ई० बहसूमा रियासत के राजमहलों में हुआ था। **राजा नैन सिंह** के बड़े भाई **कुंवर जहाँगीर सिंह** का विवाह खूबड़ गौत्र में **मनीराम** की पुत्री **रामकौर** से हुआ था। जिससे **कुंवर देवी सिंह** पैदा हुए। कुंवर देवी सिंह का विवाह नसीरपुर के **रतन सिंह** की बेटी **प्राणकौर** से हुआ। जिससे पुत्र हुआ **कुंवर कदम सिंह।** इन्हीं कुंवर कदम सिंह को रानी लाड़कौर ने परीक्षितगढ़ केयरटेकर बनाया था। कुंवर कदम सिंह अविवाहित थे।

इन्हीं कुंवर कदम सिंह ने मेरठ क्रान्ति में नैतृत्व किया। ब्रिटिश शासन के भारत के बाइसराय लार्ड कार्नवालिस के पश्चात वर्ष 1846 ई० में लार्ड डलहौजी गर्वनर जनरल बनकर भारत आये थे।

वर्ष 1857 में लार्ड डलहौजी गर्वनर जनरल थे। वे गुर्जर जाति के लिए सबसे खतरनाक सिद्ध हुए। 31 अक्टूबर 1849 ई० को उन्होंने एक कानून बनाया जिसे (लौजीलेकसी एक्ट) कहा जाता। इस कानून के तहत किसी हिन्दू को ईसाई बन जाने पर उसे पैतृक सम्पत्ति में उत्तराधिकार के साथ तिगुनी सम्पत्ति दी जाती थी। दूसरे कोई भी ईसाई किसी भी हिन्दू सम्पत्ति में मनमाने ढंग से अधिकार पा सकता था ।

भारी जन विरोध के बावजूद 29 अप्रैल, 1850 ई० को इस कानून को लागू कर दिया गया ।

''इस एक्ट के अनुसार डलहौजी ने किला परीक्षितगढ़ का कुछ भाग तो लण्डौरा रियासत के अधीन करके लण्डौरा **राजा हरवंश सिंह, कुंवर रगवीर सिंह** (सौतेली माता) **कमला** आदि को अपने पक्ष में कर लिया । बाकी भाग पर अंग्रेजों ने कब्जा कर लिया ।''

मेरठ के तत्कालीन कलैक्टर आर0एच0 डनलप द्वारा मेजर नरल हैविट को 28 जून 1857 ई० को लिखे पत्र से पता चलता है। मेरठ के क्रांतिकारियों का सरताज थे (राव कदम सिंह) पूर्वी परगने क्षेत्र क्रांतिकारियों के नेता थे । उनके साथ 10 हजार क्रांतिकारियों ने जो कि प्रमुख रूप से मवाना, हस्तिनापुर, रियासत परीक्षितगढ़ बहसूमा क्षेत्र के थे । ये क्रांतिकारियों का कफन प्रतीक तौर पर सिर पर सफेद पगड़ी बाँधकर चलते थे । क्रांतिकारियों ने पूरे जिले में खुलकर विद्रोह कर दिया है और परीक्षितगढ़ के राव कदम सिंह को पूर्वी परगने का राजा घोषित कर दिया है । राव कदम सिंह व दलेल सिंह और पृथ्वीसिंह के नेतृत्व में क्रांतिकारियों ने परीक्षितगढ़ की पुलिस पर हमला बोल दिया । उसको मेरठ तक खदेड़ दिया। ''उसके बाद संभावित युद्ध की तैयारी में रियासत परीक्षितगढ़ किले पर तीनों तौपें चढ़ा दी थीं।'' ये तौपें जब से किले में दबी पड़ी थीं ।

जब सन् 1803 में अंग्रेजों ने दोआव में अपनी सत्ता जमाई थी। उसके बाद हिम्मतपुर और बुकलाना के क्रांतिकारियों ने राव कदमसिंह के नेतृत्व में गठित क्रांतिकारी सरकार की स्थापना के लिए अंग्रेज परस्त गाँव पर हमला बोलकर बहुत से गद्दारों को मौत के घाट उतार दिया। क्रांतिकारियों ने इन गाँवों से लगान को भी वसूला था।

राव कदमसिंह बहसूमा परीक्षितगढ़ रियासत के अंतिम राजा नैन सिंह के भाई का पौत्र था । राजा नैन सिंह के समय रियासत में 349 गाँव थे और इसका क्षेत्रफल लगभग 800 वर्ग मील था । वर्ष 1818 में नैन सिंह की मृत्यु के बाद अंग्रेजों ने रियासत पर कब्जा कर लिया था । इस क्षेत्र के लोग पुनः अपना राज चाहते थे । इसीलिए क्रांतिकारियों ने कदमसिंह को अपना राजा घोषित कर दिया।

10 मई 1857 को मेरठ में हुए सैनिक विद्रोह की खबर फैलते ही मेरठ के पूर्वी क्षेत्र में क्रांतिकारियों ने राव कदम सिंह के निर्देश पर सभी सड़कें रोक दीं और अंग्रेजों के यातायात और संचार को ठप कर दिया। मार्ग से निकलने वाले सभी यूरोपियनों को लूट लिया। मवाना, हस्तिनापुर बहसूमा के क्रांतिकारियों ने **राव कदम सिंह** के भाई **दलेल सिंह 'पिथोसिंह'** और **देवी सिंह** आदि के नेतृत्व में बिजनौर के विद्रोहियों के साथ साझा मोर्चा गठित किया। और बिजनौर के मण्डावर, दारानगर और घनौत क्षेत्र में धावे मारकर वहाँ अंग्रेजी राज को हिला दिया। इनकी अगली योजना मण्डावर के क्रांतिकारियों के साथ बिजनौर पर हमला करने की थी । मेरठ और बिजनौर दोनों ओर के घाटों, विशेषकर दारानगर और रावली घाट पर राव कदम सिंह का प्रभाव बढ़ता जा रहा था। ऐसा प्रतीत होता है कि कदमसिंह विद्रोही हो चुकी बरेली बिग्रेड के नेता बख्त खान के सम्पर्क में था।

क्योंकि उसके समर्थकों ने ही बरेली बिग्रेड को गंगा पार करने के लिए नावें उपलब्ध कराई थीं । इससे पहले अंग्रेजों ने बरेली के विद्रोहियों को दिल्ली जाने से रोकने के लिए गढ़मुक्तेश्वर के नावों के पुल को तोड़ दिया था ।

26 जून, 1857 को बरेली बिग्रेड का बिना अंग्रेजी विरोध के गंगा पार कर दिल्ली चले जाना खुले विद्रोह का संकेत था । जहाँ बुलन्दशहर में विद्रोहियों का नेता **बुलीदाद खान** वहाँ का स्वामी बन बैठा, वहीं मेरठ में क्रांतिकारियों ने कदम सिंह को राजा घोषित किया और खुलकर विद्रोह कर दिया ।

28 जून, 1857 को **मेजर नरल हैविट** को लिखे पत्र में तत्कालीन कलैक्टर जनरल ने मेरठ के हालातों पर चर्चा करते हुए लिखा कि यदि हमने शत्रुओं को सजा देने और अपने दोस्तों की मदद करने के लिए जोरदार कदम नहीं उठाए तो जनता हमारा पूरी तरह साथ छोड़ देगी और आज का सैनिक और जनता का विद्रोह कल व्यापक क्रांति में परिवर्तित हो जायेगा ।

राव कदम सिंह के क्रांतिकारियों एवं मेरठ के क्रांतिकारी हालातों पर काबू पाने के लिए अंग्रेजों ने **मेजर विलयम्स** के नेतृत्व में खाकी रिसाले का गठन किया । जिसने जुलाई 1857 को पहला हमला पाँचली गाँव पर किया । इस घटना के बाद राव कदम सिंह ने परीक्षितगढ़ छोड़ दिया और उन्होंने बहसूमा में मोर्चा लगाया । जहाँ गंगा खादर से उन्होंने अंग्रेजों के खिलाफ लड़ाई जारी रखी ।

18 सितम्बर 1857 को राव कदम सिंह के समर्थक क्रांतिकारियों ने मवाना पर हमला बोल दिया और तहसील को घेर लिया । खाकी रिसाले के वहाँ पहुँचने के कारण भयंकर युद्ध हुआ । क्रांतिकारियों को पीछे हटना पड़ा ।

20 सितम्बर 1857 को अंग्रेजों ने दिल्ली पर पुनः अधिकार कर लिया । हालातों को देखते हुए राव कदम सिंह एवं दलेल, पिर्थोसिंह अपने हजारों समर्थकों के साथ गंगा के पार बिजनौर चले गये । जहाँ **नवाब महमूद खान** के नेतृत्व में अभी भी क्रांतिकारी सरकार चल रही थी । थाना भवन के काजी **इनायत अली** और दिल्ली से **बहादुरशाह जफर** के तीन मुगल शहजादे भी भागकर बिजनौर पहुँच गये ।

राव कदमसिंह आदि के नेतृत्व में क्रांतिकारियों ने बिजनौर से नदी पार कर कई अभियान किये । उन्होंने रंजीतपुर में हमला बोलकर अंग्रेजों के घोड़े छीन लिए । 5 जनवरी 1858 ई० को नदी (गंगा) पार कर मीरापुर एवं मुज्जफरनगर में पुलिस थाने को आग लगा दी । इसके बाद राव कदम सिंह ने हरिद्वार क्षेत्र में मायापुर गंगा नहर चौकी पर हमला बोल दिया और कनखल में अंग्रेजों के बँगले जला दिये । राव कदम सिंह के इन अभियानों से उत्साहित होकर **नवाब महमूद खान** ने राव कदम सिंह एवं दलेल सिंह, प्रिर्थोसिंह आदि के साथ मेरठ पर पुनः आक्रमण करने की योजना बनाई। परन्तु उससे पहले ही 28 अप्रैल 1858 को बिजनौर में क्रांतिकारियों की हार हो गई और नवाब को रामपुर के पास से गिरफ्तार कर लिया । उसके पश्चात राव कदम सिंह एवं **दलेल सिंह**, **प्रिर्थोसिंह**, **देवीसिंह** बहसूमा के सभी क्रांतिकारियों को गिरफ्तार कर बरेली ले गये और कुछ क्रांतिकारी मेरठ ले गये । राव कदम सिंह के लिए साथ ही 10 हजार क्रांतिकारीयों को एक-एक करके फाँसी दे दी थी ।

मेरठ गजेटियर के अनुसार 28 जुलाई 1858 ई० में **दलेल सिंह, प्रिर्थोसिंह, देवी सिंह, भवानी सिंह** आदि का बहसूमा के राज परिवार के सदस्यों को फाँसी दे दी।

परन्तु **राव कदम सिंह** की फाँसी को गोपनीय रखा था या तो उन्हें बरेली में फाँसी दी अन्यथा विदेश इंग्लैण्ड (लन्दन) में ले जाकर फाँसी दी । उनकी फाँसी गोपनीय रखी थी ।

चूँकि राव कदमसिंह के साथ 10 हजार क्रांतिकारियों को मौत के घाट उतार दिया था और बहसूमा रियासत परिवार पूरी तरह नष्ट कर दिया। परिवार के व्यक्तियों ने जंगल अर्थात गंगा नदी के किनारे छुपकर जीवन निर्वाह किया तथा कुछ समय पश्चात बहसूमे आकर बसे थे ।

हमें गर्व है कि हमारे पूर्वज शासक होने के साथ-साथ विश्व की महान क्रांति के महानायक थे । इस क्रांति में तीन लाख पान सौ सत्तर के लगभग लोगों को फाँसी लगी । जिसमें राव कदम सिंह के 10 हजार क्रांतिकारियों, बहसूमा रियासत के लगभग 60 या 62 व्यक्तियों को फाँसी लगी । पूरे देश में लगभग 60 या 62 हजार के लगभग गुर्जर (समाज) के व्यक्तियों को फाँसी लगी थी । लगभग सवा लाख नबावों एवं मुस्लिमों को फाँसी लगी थी । अन्य पिछड़े एवं दलितों को फाँसी लगी थी ।

''जिसकोननिजगौरवतथानिजदेशकाअभिमानहै।
वहनरनहींनरपशुनिराहैमृतकसमानहै।।''

''मैं प्रताप सिंह नागर, पूर्व रियासत बहसूमा के अपने महान शासकों एवं पूर्वजों को श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ। मैं उनका नवजात बालक बार-बार शहीद होने के लिए नतमस्तक हूँ । वर्ष 28 जुलाई-31 जुलाई 1858 ई० को ब्रिटिश शासन ने बहसूमा राज परिवार को फाँसी दी थी ।''

उस वर्ष 28 से 31 जुलाई के बीच (रक्षाबन्धन) का त्यौहार पड़ा होगा । हम बहसूमा के नागर एवं क्षेत्र के गुर्जर और अन्य इस त्यौहार को उनके सम्मान की रक्षा करते हुए आज तक इस त्यौहार को नहीं मनाते है और तब तक नहीं मनायेंगे जब तक विदेश (इग्लैण्ड) से राव कदम सिंह जी की अस्थियाँ नहीं आ जाती हैं और हमारा संघर्ष जारी रहेगा । कोई तो ऐसा राजनेता पैदा होगा जो इस कार्य को सम्पन्न करेगा । तब तक
रक्षाबंधन तथा होली का पूजन पक्के (पक्के पकवान से) नहीं करेंगे। कभी कोई भगवान शिव का प्यारा इस कार्य को अवश्य सम्पन्न करेगा।

आपका
कुंवर प्रताप सिंह नागर
(सचिव)

अध्याय 09

राजा रगवीर सिंह (लण्डौरा)

जब राजा रगवीर सिंह की **16** वर्ष की आयु थी। उनकी माता रानी लाडकौर (लगभग वर्ष **1859** ई.) इस संसार से बिदा हो गई। राजा खुशहाल सिंह की दूसरी पत्नी राजा टिहरी की बहन रानी कमलाकौर ने रियासत लण्डौरा का कार्यभार (ब्रिटिस शासन के इसारे पर चार्ज दिया गया) संभाला। राजा रगवीर लण्डौरा केयर टेकर थे। परन्तु रानी कमलाकौर (मौसी) का राज्य के सिपे-सलारो पर वर्चस्व था। लगभग वर्ष **1861** ई. में राजा रगवीर की शादी पीरनगर के जयकरण सिंह की बहन धर्मकौर से सम्पन्न हो गई।

रानी कमलाकौर और भाई नरायण सिंह, राजा रगवीर से ईर्ष्या रखते थे। इसलिऐ राजा रगवीर को मारने की योजना बनाई।

राजा रगबीर सिंह जी, रियासत लण्डौरा, हरीद्वार।

रानी कमलाकौर ने नत्थू घीवर, जो रियासत में खाना परोसता था उसे अपने पक्ष में करके राजा रगवीर को खाने में जहर दे दिया और संन्दूक में बन्द करके गंगा जी में बहा दिया।

गंगा की लहरों में सन्दूक के ऊपर का हिस्सा टूट गया और गंगा जी के पवित्र जल से राजा रगवीर का जहर का अंश समाप्त हो गया।

मोहन माला कंठन माला जैसे रगवीर लण्डौरा वाला

धोबी गंगा किनारे कपड़े साफ कर रहे थे। धोबीयों ने मोहनमाला से अन्दाज लगाया कि सन्दूक में राजा रगवीर है। चूंकि धोबी बहसूमा रियासत के रहने वाले थे, धोबीयो ने राजा रगवीर को गंगा जी से बाहर निकाला और बहसूमा रियासत में सूचना दी। अधिकांश बहसूमा रियासत के व्यक्तियों को फाँसी लग चूकी थी। शेष बचे परिवार के साथ, राजा रगवीर 'बहसूमा' में रहने लगे। उसके पश्चात् राजा रगवीर ने न्यायालय में वाद दायर करके मांग की, कि मैं राजा लण्डौरा जिन्दा हूँ। मुझे पुन: लण्डौरा का राजा बनाया जाये। न्यायालय ने राजा लण्डौरा और उनकी पत्नी धर्मकौर को नोटिस जारी करके न्यायालय में उपस्थित होने का आदेश दिया था।

न्यायालय में वाद दायर होते ही रानी कमलाकौर ने रानी धर्मकौर को लण्डौरा रियासत में बुला लिया और रानी धर्मकौर को राज्य की बागडौर और ऐसो-आराम दिये तथा मेरठ में स्थित किला परीक्षत हाऊस जो कि मेरठ में बना था उसको रानी धर्मकौर के भाईयों को दने का वादा किया। इस प्रकार से रानी धर्मकौर ने न्यायालय में राजा रगवीर को पहचानने से मना कर दिया। राजा रगवीर की मोहन माला को भी नकली बता दिया था। इस प्रकार राजा रगवीर न्यायालय में वाद हार गये थे।

बाद में रानी धर्मकौर को लण्डौरा का कार्यभार सौंप दिया और उनके भाईयों को मेरठ सहित अन्य जगह की सम्पति भी सौंप दी।

उसके पश्चात् राजा रगवीर ने सन्यासी वस्त्र धारण कर लिऐ और अटर-सटर नाम से विख्यात हुऐ। स्वामी अटर-सटर ही राजा रगवीर थे। उनके पास श्याम-कर्ण नामक घोड़ा था। उस घोड़े के लिऐ कुंवर बीरबल सिंह अपने खेतों में रिजका बौते थे। स्वयं कुंवर बीरबल सिंह घोड़े की सेवा करते थे। उनके बाद उनके पुत्र कुंवर होराम सिंह व कुंवर सुखदेव सिंह जी जंगल से घास लाकर घोड़े को खिलाते थे।

''स्वामी अटर-सटर जी'' के घोड़े की विशेषता थी कि जब घोड़े के मन में जलेबी व मिठाई का खाने का मन होता था तो घोड़ा स्वामी जी से आज्ञा लेकर उसी दुकान के सामने जाता था और दुकानदार घोड़े को उसी मिठाई को खिलाते थे। दुकानदार की उस दिन दुगनी कमाई तथा बिकरी होती थी। इसलिये दुकानदार इन्तजार करते रहते थे कि कब घोड़ा हमारी दुकान पर आये और हमारी दुकानदारी दुगनी होवे।

स्वामी जी दूध और खीर, फल ग्रहण करते थे। स्वामी जी अन्न का सेवन तो कभी-2 करते थे। अचानक स्वामी जी का घोड़ा बीमार पड़ गया और फिर स्वर्ग सिधार गया, घोड़े का शरीर पूरा होने

के पश्चात् स्वामी जी उदास रहने लगे। एक बार-स्वामी जी से कुंवर बीरबल सिंह जी ने पूछा स्वामी जी घोड़े के न रहने से आप उदास रहते है। स्वामी जी चुप रहे और कहा कि अबकी पूर्णमासी पर गंगा स्नान करने जाना है। स्वामी जी ने ऐसा कह कर प्रश्न को टाल दिया।

''अन्तो गतवा: पूर्णमासी पर गंगा स्नान करने को कह कर गये स्वामी अटर-सटर फिर कभी नही आये।''

परिवार वालो ने उन्हें काफी तलाश किया। कुछ समय पश्चात् मालूम हुआ कि बिजनौर में आश्रम बनाया है। वही पर रहते है। काफी समय पश्चात् शरीर पूरा हुआ।

पूर्व **ब्लाक प्रमुख-सरजीत सिंह** के कथनानुसार स्वामी जी ने जो आश्रम बनवाया वह पूर्व साँसद भारतेन्दु जी की रियासत के पास था। बताया जाता है कि पूर्व साँसद जी के पिताजी या दादाजी उनको अपने घर ले गये। साँसद जी के परिवार के अनुसार स्वामी जी पूर्णमासी के गंगा स्नान करने के पश्चात् लडडू का वितरण करते थे। स्वामी जी द्वारा दिये गये लडडू जिस व्यक्ति को प्राप्त हो जाते थे। वह व्यक्ति उस समय जो कार्य सम्पन्न होने का संकल्प करता था वह पूर्ण हो जाता था। इसीलिऐ स्वामी जी दूर-**2** तक प्रसिद्ध हो गये थे।

अत: स्वामी जी के अन्तिम समय का मुझ बालक को ज्ञान नही है। इसलिऐ आगे उनके बारे में लिखने के लिये मै असमर्थ हूँ।

रानी धर्मकौर द्वारा दिये गये ब्यान से लण्डौरा रियासत में रानी कमलाकौर तथा उनके भाई नरायण सिंह को राहत की सॉस मिली और अब रियासत लण्डौरा में रानी कमलाकौर और रानी धर्मकौर की चलने लगी। अब प्रश्न आया कि राजा लण्डौरा कौन बनाया जाये। लगभग **1898** व **1899** ई. में ग्राम-जन्झेड़ा के अनपढ़ व्यक्ति बलवन्त सिंह (रिसायत लण्डौरा) को राजा बना दिया गया।

बाद में धर्मकौर का सिक्का भी राजा बलवन्त सिंह को कर दिया गया तथा दूसरी शादी भी (टिहरी राजा) की पुत्री से हुई। आगे इस रियासत में बड़ी पुत्री राजकुमारी कृष्णा कुमारी पैदा हुई और दो पुत्र कुंवर राम कुमार व कुंवर नरेन्द्र सिंह पैदा हुए। राजकुमारी कृष्णा कुमारी की शादी सदरे रियासत युवराज समथर, झाँसी राजकुमार रामानुज जुदेव के साथ सम्पन्न हुई। राजा समथर के तीन पुत्रियाँ तथा एक पुत्र का जन्म हुआ। एक राजकुमारी उषा राजे की शादी (कुण्डा रियासत) प्रताप गढ़ राजा उदम सिंह से सम्पन्न हुई। उनका पुत्र हुआ रघु राज प्रताप सिंह उर्फ राजा भईया के नाम से विख्यात है। उत्तर प्रदेश सरकार के प्रभावशाली नेता है। दूसरी राजकुमारी की शादी नैनी स्टेट के राजकुमार के साथ सम्पन्न हुई। तीसरी राजकुमारी की शादी हरियाणा के नरायण गढ़ के जगपाल सिंह, चीफ इंजिनियर के साथ सम्पन्न हुई तथा राजा रणजीत सिंह जुदेव की शादी (नेपाल नरेश) राणा शाह के परिवार में सम्पन्न हुई। उसी-राज परिवार में सदरे रियासत कश्मीर महाराजा कर्ण सिंह जी की शादी भी सम्पन्न हुई।

लण्डौरा रियासत के राजा रगवीर सिंह जी

स्वामी अटर-सटर जी

कुंवर बीरबल सिंह खेत से रीजका लाकर घोड़े को खीलाते थे

श्याम कर्ण घोड़ा

बहसूमा स्थित शिव मन्दिर, मुख्य सड़क, बिजनौर मार्ग के पास में स्वामी (अटर-सटर) संन्यासी की वेषभूषा में और साथ में श्याम कर्ण घोड़ा एवं कुंवर बीरबल सिंह जी बहसूमा घोड़े की सेवा करते हुऐ।

इधर, राजा बलवन्त सिंह जी ने बहसूमा में केयर टकेर के रूप में (राजा जैत सिंह के वंशज) कुंवर कल्लन सिंह, कुंवर होटन सिहं और कुंवर बीरबल सिंह को कार्यभार सौंपा। रियासत लण्डौरा के अनुसार जानकारी प्राप्त हुई कि बाद में रानी धर्मकौर या राजा बलवन्त सिंह के दीवान एवं प्रबन्धक कस्बा बहसूमें आते रहते थे। इसके बाद रियासत किला परीक्षित गढ़ भी जाते थे और मेरठ स्थित किला हाऊस रानी धर्मकौर के भाईयों की देख-रेख में था। जिसका नाम बदलकर **लण्डौरा हाऊस** रख दिया था। अब बहसूमा एवं किला परीक्षित गढ़ की सम्पत्ति जो ब्रिटिश शासन के नुकसान के पश्चात् बची थी। उस सम्पत्ति को अन्य लोगों के अधिकार में देना प्रारम्भ कर दिया।

उस समय कुंवर राजकुमार या कुंवर नरेन्द्र सिंह जी के दीवान एवं व्यवस्थापको द्वारा बहसूमे स्थित दीवाने आम एवं अन्य हबेली अन्य व्यक्तियों के अधिकार में दे दी थी। वे बहसूमे में आज भी स्थित है। बहसूमा के रंग महल को भी भरतासिंह को दे दिया गया था। भरता सिंह ने अपनी बहन की शादी ग्राम खंदडिया के बीरबल सिंह के पिता से कर दी थी। बीरबल सिंह ग्राम खंदडिया जमींदार थे। उनके सहयोग से राजा लण्डौरा तक पहुँच बनाई गई। तब उन्होंने भरता सिंह के रहने के लिऐ रंग महल को दिया और बहसूमा स्थित महलों एवं अन्य सम्पत्ति पर राजा जैतसिंह के वंशजो का अधिकार समाप्त हो गया।

भरता सिंह की मृत्यु के पश्चात् उनके दोनों बेटो ने रंग महल को तोड़ दिया। इससे सम्पूर्ण गुर्जर समाज पर गहरा आघात पहुँचा। जिस रंग महल में महान शासकों का जन्म हुआ हो। उस रंग महल को खण्डित कर दिया गया। जब मैने स्वयं रंग-महल खण्डित करने के लिऐ मना किया तो दोनों नहीं माने। नागर गौत्र के किसी व्यक्ति ने मेरा साथ नहीं दिया। चूकिं रंग महल को खण्डित करने वाले नागर गौत्र के दूसरे खानदान से तालुक रखते थे। उसका विकल्प भी था। परन्तु वे नहीं माने। उन्होंने इस धरोहर के इतिहास के पन्ने को समाप्त कर दिया।

मैं तो भगवान को साक्षी मानते हुऐ स्वर्ग में बैठे हुऐ महापुरूष राजा जैत सिंह, राजा गुलाब सिंह, राजा नैन सिंह, राजा नत्था सिंह, रानी लाड़कौर तथा अमर शहीद कुंवर कदम सिंह जी को नमन करते हुए अपने आपको अभागा महसूस कर रहा हूँ।

उनका नवजात
शिशु
कुंवर प्रताप सिंह नागर

10 मई 1857 ई. में ब्रिटिश शासन के खिलाफ विद्रोह किला परीक्षितगढ़ तथा बहसूमा से शुरू हुआ था।

प्रथम स्वतन्त्रता आन्दोलन के महानायक कुवंर कदम सिंह ने लार्ड डलहौजी की राज हड़प नीति का विरोध किया। लगातार 14 माह तक संघर्ष करते हुए शहीद हो गये थे।

विद्रोह का स्वरूप

➲ 1857 का विद्रोह सिपाहियों के असंतोष का परिणाम मात्र नहीं था। वास्तव में यह औपनिवेशिक शासन के चरित्र, उसकी नीतियों, उसके कारण कंपनी के शासन के प्रति जनता के संचित असंतोष का और विदेशी शासन के प्रति उनकी घृणा का परिणाम था।

➲ एक शताब्दी से अधिक समय तक अंग्रेज इस देश पर धीरे-धीरे अपना अधिकार बढ़ाते जा रहे थे, और इस काल में भारतीय समाज के विभिन्न वर्गों में विदेशी शासन के प्रति जन-असंतोष तथा घृणा में वृद्धि होती रही। यही वह असंतोष था जिसका अंतिम रूप एक जनविद्रोह के रूप में उभरा।

➲ 1857 का विद्रोह ब्रिटिश नीतियों और साम्राज्यवादी शोषण के प्रति जन-असंतोष का उभार था। परन्तु यह आकस्मिक घटना नहीं थी। लगभग एक शताब्दी तक पूरे भारत में ब्रिटिश आधिपत्य के विरूद्ध तीव्र जन-प्रतिरोध होते रहे थे।

1857 के बाद प्रथम विद्रोह

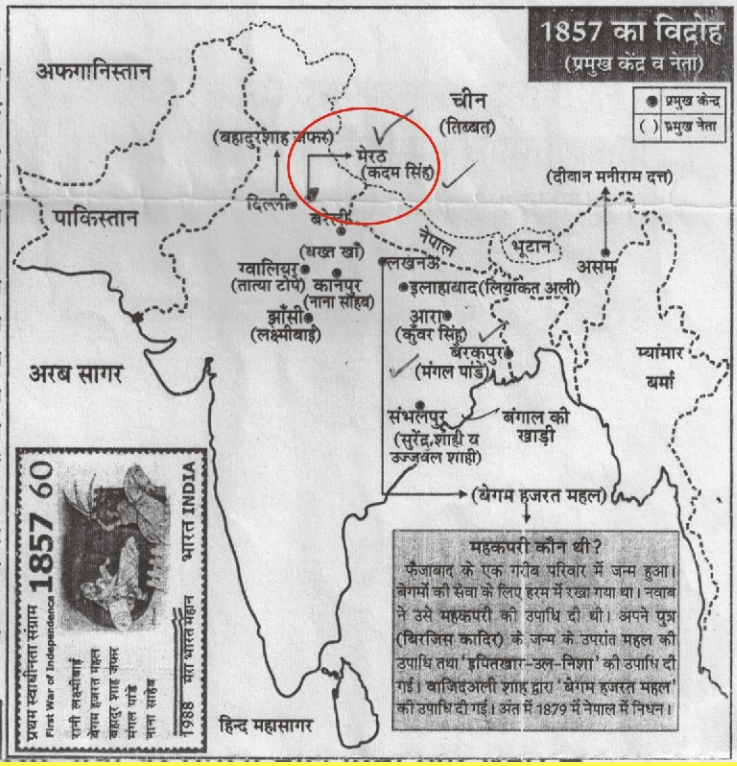

किला परीक्षितगढ़ किले के ऊपरी भाग का दृश्य है। मेजर नरल हैविट का मुकाबला करने के लिऐ तोपो का भी सहारा लेना पड़ा।

मेरठ के तत्कालीन कलक्टर आर.एच. डनलप द्वारा मेजर जनरल नरल हैविट को 28 जून 1857 को लिखे पत्र से पता चलता है कि क्रान्तिकारीयों ने पूरे जिले में खुलकर विद्रोह कर दिया और परीक्षितगढ़ के राव कदम सिंह और दलेल सिंह, देवी सिंह, पृथ्थी सिंह, मान सिंह आदि के नेतृत्व में क्रान्तिकारीयों ने परीक्षितगढ़ की पुलिस पर हमला बोल दिया और उसे मेरठ तक खदेड दिया। उसके बाद, अंग्रेजों से सम्भावित युद्ध की तैयारी में परीक्षितगढ़ के किले पर तीन तोपे चढ़ा दी। ये तोपे जब से किले में ही दबी पड़ी थी।

रानी लाडकौर पत्नी राजा खुशहाल सिंह (लण्डौरा)

रानी लाडकौर पत्नी राजा खुशहाल सिंह (लण्डौरा) की शादी उनके पिता राजा नत्था सिंह ने फाल्गुन मास में फूलेरा दोज के दिन की थी। रानी लाडकौर को भागवान शिव ने पुरा महादेव में दिव्य ज्योति प्रदान की थी। नागर वंश के प्रथम राजा जैति सिंह को भी भगवान शिव ने ग्राम सैपपुर में दिव्य ज्योति प्रदान की थी और पाँचवी पीढ़ी में रानी लाडकौर को दिव्य ज्योति दी। भगवान वेद व्यास ने राजा जनमेयजय से हस्तिनापुर में सर्पनाशक यज्ञ के पश्चात् कहा था कि किला परीक्षितगढ़ रियासत का पाँचवी पीढ़ी तक राज्य रहेगा। यह बात सत्य प्रतीत होती है। रानी लाडकौर के पश्चात् परिवार का राज्य नहीं रहा।

पुरा महादेव शिव मन्दिर का निर्माण (जिला बागपत)

रानी लाडकौर पत्नी राजा खुशहाल सिंह जब दिल्ली से लार्ड डलहौजी की (राज्य हड़प्पन नीति) का विरोध करके लौट रही थी। रास्ते में पूरा-नामक स्थान पड़ा वहाँ पर उनका हाथी आगे नहीं बढ़ा और अपनी सूड़ से इसारा करता रहा। तब पीलवान ने रानी को बताया कि हाथी आगे नहीं बढ़ रहा है। तब रानी ने सभी को रूकने का आदेश दिया। सुबह 4 बजे रानी को भगवान शिव ने दिव्य ज्योति दी और इसरा किया कि यहाँ पर मेरा शिवलिंग है। रानी की आँख खुल गई। रानी ने उस स्थान की खुदाई करायी। वहाँ भगवान शिव का (सफेद) शिवलिंग प्राप्त हुआ रानी ने मन्दिर का निर्माण कराया। इसी को पुरा महादेव मन्दिर कहते हैं।

हस्तिनापुर में पाण्डेश्वर मन्दिर का दृश्य

पाण्डेश्वर मंदिर (हस्तिनापुर) राजा नैन सिंह ने बनवाया था। साथ में समिति के अध्यक्ष तथा राजा नैन सिंह समिति के सचिव श्री प्रताप सिंह नागर द्वारा पुनः निर्माण कराकर शिलालेख लगवाया था।

श्री रतन सिंह राणा, ग्रामीण अध्यक्ष, विकास कटारिया उपाध्यक्ष एवं प्रताप सिंह नागर सचिव, राजा नैन सिंह स्मारक समिति स्थित पाण्डेश्वर मन्दिर हस्तिनापुर

रवि कुमार भड़ाना, USA में इंजिनियर के पद पर कार्यरत है। ये ग्राम काजीपुर के रहने वाले नवाब सिंह भड़ाना जी के पुत्र है। जो एक समाजसेवी है। ये अमेरिका में रहकर गूर्जर समाज का नाम रोशन कर रहे है।

सर्वप्रथम गठित कमेटी का अधिवेशन बहसूमा में

21 मार्च, 1991 ई. को राजा नैन सिंह की पुण्य तिथि के अवसर पर प्रताप सिंह नागर, सचिव द्वारा आयोजित समारोह का दृश्य। इस समारोह में समिति के उपाध्यक्ष श्री योगेश कुमार जैन को स्टेट बैंक ऑफ इंडिया में विधि अधिकारी चयन होने पर नागरिक अभिनन्दन किया गया। इस समारोह की अध्यक्षता समिति के तत्कालीन अध्यक्ष स्व. कुंवर विधिचन्द्र नागर द्वारा सम्पन्न हुई। इस समारोह में समिति के सभी पदाधिकारी उपस्थित हैं।

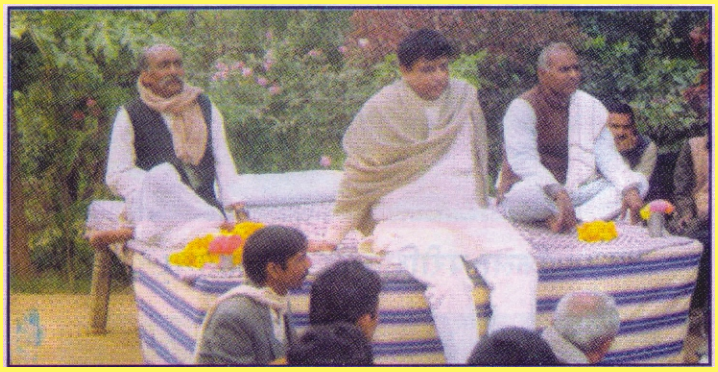

चौ. हुकुम सिंह, मंत्री उ. प्र. बहसूमा में समिति के सचिव प्रताप सिंह नागर के निवास स्थान पर राजा नैन सिंह स्मारक समिति की प्रथम सभा को सम्बोधित करते हुये।

पुरा महादेव मन्दिर में प्रताप सिंह नागर (सचिव) व देशपाल सिंह (अध्यक्ष), उस शिवलिंग की पूजा करते हुए जिस पर रानी लाडकौर ने मन्दिर बनवाया था

बहसूमा स्थित बाबा फूल सिंह का मन्दिर जिसमें प्रताप सिंह नागर (सचिव) के साथ प्राँन्जल नागर पूजा करते हुऐ।

अध्याय 10

स्वतन्त्रता संग्राम में गुर्जरों की भूमिका

स्वतन्त्रता संग्राम में गुर्जरों की भूमिका

भारतीय वर्ण-व्यवस्था धीरे-धीरे व्यवसायाश्रित जाति-व्यवस्था में परिणित होती गई । वेदों में क्षत्रियों के लिये ''राजन्य'' शब्द का प्रयोग हुआ है यही शब्द मुगल काल में ''राजपूत'' नाम से स्वीकृत किया गया जो कालान्तर में जातिसूचक बन गया । प्राचीन संस्कृत साहित्य में कहीं कोई जातिसूचक शब्द नहीं प्रयोग हुआ है, वहाँ केवल वंशों का वर्णन मिलता है । ये वंश-उपवंश ही सामाजिक व्यवस्था के विकास में जाति का रूप धारण करते चले गये । ईसा की पहली शताब्दी के आस-पास जातिसूचक शब्दों का प्रयोग मानव समाज को जाति-वर्गों में विभाजित करते हुए प्राप्त होते हैं । भीम-कोल आदि जनजातियों का वर्णन यद्यपि रामायण काल से ही मिलता है लेकिन क्षत्रिय जातियों में आमीर (अहीर) एवं गुर्जर शब्दों का प्रयोग जाति के रूप में ईसा पूर्व की दूसरी शताब्दी से ही संस्कृत ग्रन्थों में उपलब्ध होता है । गुर्जर जाति एवं गुर्जर शासक देश-रक्षा के लिये विश्वविख्यात रहे हैं।

गुर्जर जाति का अतीत अत्यन्त उज्जवल रहा है । पहली शताब्दी से लेकर ग्यारहवीं शताब्दी तक भारतवर्ष के अधिकांश भू-भाग पर गुर्जर सम्राटों का आधिपत्य रहा है, जिन्होंने अपने शौर्य, युद्ध-कौशल एवं दूरदर्शिता के बल पर विदेशी आक्रान्ताओं को खदेड़कर भारत की सीमाओं को सुरक्षित रखकर अपने साम्राज्य का विस्तार अफगानिस्तान तक किया था । **महाराजा मिहिरभोज, नागभट्ट, वत्सराज, भीमदेव सोलंकी** एवं **महाराजा कुमारपाल** इसी श्रंखला के दैदिप्यमान रत्न हैं। दक्षिण के चालुक्य भी गुर्जरों की एक शाखा से सम्बन्धित राजवंश हैं। **महाराज शिवाजी** भी बैंसला, जिसे महाराष्ट्र में भोंसला कहा जाता है गुर्जरों के एक प्रसिद्ध गौत्र से हैं । इनके प्रधान सेनापति भी गुर्जर वंश से ही थे । गुरू गोविन्द सिंह की माता गुर्जर माता थीं ।

महाराजा रणजीत सिंह के प्रधान सेनापति **हरि सिंह नलवा** की विजय गाथायें आज तक अफगानिस्तान में गूँज रही हैं, जो एक गुर्जर यौद्धा थे । सर्वखाप पंचायत द्वारा मनोनीत सेनापति **प्रतापराव गुर्जर** यवनों के विरुद्ध क्षत्रिय समाज का महान रक्षक बना जिसने विदेशी यवन आक्रान्ताओं को खदेड़कर भारत की अस्मिता की रक्षा की । विश्व इतिहास में बलिदान की

अद्वितीय मिसाल **धाय माता पन्ना बाई** भी एक गुर्जर माता थीं, जिन्होंने अपने पुत्र **चन्दन सिंह** का बलिदान देकर महाराजा उदय सिंह की प्राण-रक्षा की थी ।

सहारनपुर हरिद्वार से सिकन्दराबाद तक तथा बिजनौर से शाहदरा तक विशाल गुर्जर बाहुल्य भू-भाग पर अपना साम्राज्य स्थापित कर धर्म, जाति एवं सत्य का गौरववर्द्धन करने वाले महाराजा नैन सिंह भी इसी जाति की देन हैं, जो प्रजा वत्सलता, शौर्य, वीरता एवं युद्ध-कौशल के लिये प्रसिद्ध रहे । ऐसे गौरवमय इतिहास की स्वामिनी यह जाति देशभक्ति, बलिदान, वीरता एवं रणकौशल के लिये सदैव विख्यात रही है।

अंग्रेजों के विरुद्ध लड़े गये 1857 के प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम में गुर्जर जाति के देशभक्त राजाओं, जमींदारों, महन्त, महात्माओं एवं सामान्य ग्रामीणों ने जो बलिदान किये उनकी अमर गाथाएँ ब्रिटिश सरकार के तत्कालीन बन्द दस्तावेजों में दबी हुई प्रकाशन की बाट जोह रही है ।

इस संग्राम में भारतीय रजवाड़ों में अधिकांशत: अंग्रेजों के विरुद्ध थे । कुछ रजवाड़े ब्रिटिश शासन के सहयोगी रहे । लेकिन जितने भी छोटे-बड़े गुर्जर राजघराने थे वे सभी अपनी भरपूर शक्ति से अंग्रेजों के विरुद्ध लड़े । बहसूमा एवं परीक्षितगढ़ के **राजा कदम सिंह**, दादरी के **राव रोशन सिंह**, कठैड़ा के **उमराव सिंह** ने अंग्रेजी सेना के छक्के छुड़ाकर अनेकों अंग्रेजों को मौत के घाट उतारा, जिसके परिणामस्वरूप इन्हें फाँसी के फन्दे पर लटकाया गया अथवा गोली का शिकार बनाया । इनकी जायदादें जब्त कर ली गयीं । 15 अगस्त, 1849 को लार्ड डलहौजी ने एक राज्य हड़प नीति के द्वारा बहसूमा व परीक्षितगढ़ राज्य को हड़प लिया ।

राजाओं के साथ-साथ ही गुर्जर सन्यासी भी अपने देशभक्ति का परिचय देने में पीछे नहीं रहे । सूरजकुण्ड पर मन्दिर के महन्त, सीकरी देवी मन्दिर के पुजारी एवं बढ़पुरा शिव मन्दिर के महन्त सन्त लछमन भारती एवं उनके शिष्य निश्चल भारती ने स्वयं अपने भक्तों सहित अंग्रेजी सेनाओं से लोहा लिया जिसके फलस्वरूप उन्हें भी मौत के घाट उतारा गया । मेरठ के तत्कालीन **कोतवाल धन सिंह गुर्जर** ने पुलिस में भी अंग्रेजों के विरुद्ध बगावत कर भारतीय देशभक्तों को संरक्षण एवं सहयोग दिया, जिसके फलस्वरूप उन्हें भी मृत्यु दण्ड दिया गया ।

शासकों एवं सन्तों की प्रेरणा से जमींदार एवं सामान्य नागरिक भी अंग्रेजी सत्ता को उखाड़ने में पीछे नहीं रहे । दनकौर के निकटवर्ती नागर गुर्जरों में अट्टा के **इन्दर सिंह**, **नत्था सिंह,** के **दरयाव सिंह**, राजपुर के **सरजीत सिंह**, सरकपुर के **रामदयाल सिंह** एवं उनके भाई **निर्मल सिंह** के बलिदानों का उल्लेख इन दस्तावेजों में किया गया है । इन सभी को **बुलन्दशहर काले आम** पर फांसी दी गई थी। बढ़पुरा में **महन्त लछमन भारती** के साथ अन्य कई ग्रामीणों को भी मृत्यु दण्ड दिया गया था ।

लुहारली के मजलिस जमींदार की बलिदानी गाथायें आज भी श्रोताओं के रोंगटे खड़े कर देती हैं। मोदीनगर के निकटवर्ती गाँव सीकरी में 105 युवकों को प्राण दण्ड दिया गया था । मन्दिरों के गर्भ-गृह देशभक्तों की शरणस्थली एवं योजनास्थली के रूप में प्रयोग किये जाते थे । ये युवक मन्दिर के गर्भ-गृह में अंग्रेजों के विरुद्ध योजना तैयार कर रहे थे । गुलावठी क्षेत्र के गुर्जरों ने अंग्रेजों को जो क्षति पहुँचायी उसकी सजा उन्हें बागी करार कर दी गई । उनकी सम्पत्ति जब्त कर ली गयी । उनके वंशज आज भी खुर्जा में बसे हुए हैं । बम्हेटा के अमीरा (अहीरों) ने अंग्रेजों का खुलकर साथ दिया । वह रात के अन्धेरे में अपने दस-पाँच साथियों के साथ छुपकर जाते और गुर्जरों के ग्रामों के बाहर बंधे बूँगे तथा बिटौड़ों में आग लगाकर आतंकित कर भाग जाते थे । बम्बावड़ एवं दुजाना के गुर्जर युवकों ने उनके इस आतंक को समाप्त कर सामान्य लोगों को अभय प्रदान किया। बागपत क्षेत्र के ग्राम बली निवासी **अचलू दादा (अचल सिंह)** ने अपना एक संगठन बनाकर अंग्रेजी सेना को मार-काट कर सरकारी तन्त्र को नष्ट किया। इस कार्य में इनके सहयोगी **चौधरी शाहमल** थे जिनके नाम पर यमुना पुल का नामकरण किया गया है । लेकिन जो नायक थे, जिन्हें तोप के मुँह से बाँधकर उड़ाया गया था आज उनका कोई स्मारक उनकी शहादत को स्मरण दिलाने के लिये नहीं है।

दिल्ली के आस-पास के गुर्जरों ने भी अंग्रेजों का पूरी शक्ति से विरोध कर स्वतन्त्रता के लिये बलिदान दिया। दलूपुरा के चालीस नौजवानों को पीपल के पेड़ पर लटकाकर फाँसी दे दी गई । कूड़ीखेड़ा के **दयाराम गुर्जर** के नेतृत्व में चन्द्रावल एवं आस-पास के गुर्जरों ने मैटकाफ हाऊस पर अधिकार कर अंग्रेजों को वहाँ से खदेड़ दिया। फतेहपुर में बेरी के तंवर गुर्जरों ने **राव दरगाई सिंह** के नेतृत्व में अंग्रेजी सेना को मारा-काटा जिसका दण्ड पूरे ग्राम को दिया गया । वहाँ 12 वर्ष से ऊपर के सभी पुरुषों के सिर काटे गये ।

हरियाणा के बहपा ग्राम के **चौ० सज्जन सिंह खटाणा** के नेतृत्व में खटाणा खाप के गुर्जरों ने संगठित होकर अंग्रेजी सेना के विरुद्ध लड़ाई लड़ी । पलवल के निकटवर्ती ग्राम नरसिंहपुर, बन्धवाड़ी, खटौला एवं मोहम्मदपुर आदि के गुर्जर देशभक्तों ने **चौधरी अभय सिंह भूमला** को अपना नायक घोषित कर स्वतन्त्रता संग्राम में अपनी जो बलिदानी आहूति दी वह आज भी भावी पीढ़ी के लिये प्रेरणादायक है ।

गुर्जर अंग्रेजों के कट्टर शत्रु थे । उन्होंने जो सूचि अपनी विरोधी जातियों की प्रकाशित की थी, उनमें गुर्जर जाति सर्वोपरि थी । गुर्जरों को चोर, लुटेरा, जंगली आदि विशेषण देकर सरकारी नौकरियों में भर्ती बन्द कर दी गई थी । इतना ही नहीं अंग्रेज इतिहासकारों ने गुर्जरों को विदेशी तक करार दिया, जिसका अनुसरण उनके भक्त भारतीय इतिहासकार भी करते आ रहे हैं । यह हमारी देशभक्ति और बलिदानों का ही फल दिया गया था।

राष्ट्रीय स्वतन्त्रता आन्दोलन में भी गुर्जरों का योगदान किसी से कम नहीं रहा है । गुठावली के **भूप सिंह** जो अंग्रेजों के विरुद्ध जन आन्दोलन चलाने के कारण छुपकर राजस्थान भाग गये, वहाँ **विजय सिंह पथिक** के नाम से अंग्रेजों एवं देशी रजवाड़ों के विरुद्ध स्वतन्त्रता आन्दोलन एवं किसान जागृति के अग्रदूत बनकर ''राजस्थान केसरी'' के रूप में जननायक बने । इनके द्वारा चलाया गया **बिजौलिया किसान सत्याग्रह** ही गाँधी जी के लिये प्रेरक बना जिसकी स्वंय गाँधी जी ने भूरी-भूरी प्रशंसा की है । इसी प्रकार महाराष्ट्र, गुजरात में बारडौली किसान आन्दोलन के नायक **सरदार बल्लभ भाई पटेल** भी अपने दृढ़-निश्चय, अदम्य साहस एवं दूरदर्शिता के कारण देश के प्रमुख कर्णधारों में गिने गये, जिन्होंने देशी राज्यों एवं रियासतों को भारत गणराज्य में विलय कराकर वर्तमान भारत के स्वरूप का निर्माण किया । ये भी गुर्जर जाति में उत्पन्न एक अद्वितीय देशभक्त थे । बुलन्दशहर के बराल गाँव के **महाशय हरकेश सिंह** स्वतन्त्रता सेनानियों में एक मिसाल माने गये थे । उनकी माँ जब वे 6-7 वर्ष के बालक ही थे, तभी उन्हें देशभक्तों के जत्थे में सम्मिलित करने के लिए भेजने लगी थीं । ऐसी माताएँ कम ही होती हैं । स्वतन्त्रता प्राप्ति के उपरान्त सत्ता-सुख के भोग में राजनेताओं ने हमारे बलिदानों को भुलाकर हमें अंग्रेजों की भाँति ही उपेक्षित रखा । अंग्रेज गुर्जरों की पहचान चना तथा पानी के उच्चारण से कराकर उन्हें दण्डित करते थे । गुर्जर चने को चणों तथा पानी को पोणी उच्चारण करता है ।

कश्मीर भारत का अभिन्न अंग है । यहाँ के समीपवर्ती क्षेत्र में गुर्जर मुसलमान भाई अधिक संख्या में बसे हैं, जिन्होंने पाकिस्तान से युद्धों के समय अपनी देशभक्ति का परिचय देकर भारतीय सेनाओं को सहयोग कर पाकिस्तानी चालों को विफल किया है । सेना हो या अन्य क्षेत्र गुर्जरों की देशभक्ति में कोई कमी नहीं आयी है । परन्तु गुर्जरों को आज भी वह सम्मान नहीं मिल रहा है जिसके वे अधिकारी हैं।

अतीत के गौरवमय इतिहास से सम्पन्न यह जाति गोरे अंग्रेजों की शत्रु थी, इसलिये उन्होंने इसका दमन किया लेकिन आज स्वतन्त्र भारत की अपनी सरकार भी इसके इतिहास एवं सम्मान को उजागर करने में पूर्णतः उदासीन है, जो राष्ट्र एवं इस बलिदानी जाति के लिये अहितकर है, क्योंकि जो देश या जाति अपने बलिदानों को स्मरण नहीं रखती वह नष्ट हो जाया करती है।

–कुँवर प्रताप सिंह नागर

अध्याय 11

1857 की क्रान्ति के पश्चात् अंग्रेजों द्वारा गुर्जर जाति पर किये गये अत्याचार

भारतवर्ष में पाँच किसान आन्दोलन हुए। कम्पनी सरकार के खिलाफ सर्वप्रथम किसान आन्दोलन गुजरात से शुरू हुए।

1. **मराठी एवं गुजराती किसानों द्वारा आन्दोलन (1875) :** सबसे पहले मराठी एवं गुजराती किसानों द्वारा आन्दोलन मारवाड़ी साहूकारों के खिलाफ था । मारवाड़ी साहूकार अपने ऋणों में हेरा-फेरी करके किसानों का शोषण करते थे । इसी आन्दोलन के तहत 1879 ई० में कृषक राहत अधिनियम बनाया गया।
2. **चम्पारण सत्याग्रह (1917) :** यह किसान आन्दोलन बिहार से शुरू हुआ और उत्तर भारत में फैल गया । यह आन्दोलन यूरोपीय नील उत्पादकों के खिलाफ था । यूरोपीय नील उत्पादक किसानों का शोषण करते थे । इस किसान आन्दोलन का नेतृत्व डॉ० राजेन्द्र प्रसाद ने किया था।
3. **खेड़ा (केटा) आन्दोलन (1918) :** यह आन्दोलन बम्बई सरकार के खिलाफ था । 1918 में सूखे के कारण फसल नष्ट हो गई थी तभी गुजरात एवं महाराष्ट्र के किसानों ने आन्दोलन किया । इस आन्दोलन का नेतृत्व गाँधी जी ने किया था।
4. **बिजोलिया किसान आन्दोलन (1920) :** दशक का किसान आन्दोलन है । यह किसान आन्दोलन राजस्थान से शुरू हुआ । यह आन्दोलन राजस्थान के राजघराने के खिलाफ तथा कम्पनी सरकार द्वारा राजाओं को दिये गये अधिकारों के खिलाफ था । इन अधिकारों के तहत किसानों का शोषण होता था । इस किसान आन्दोलन का नेतृत्व विजय सिंह पथिक ने किया।
5. **बारदौली सत्याग्रह आन्दोलन (1928) :** सूरज जिले के बारदौली तालूका में 1928 में लगान न देने के लिये यह आन्दोलन हुआ । इस आन्दोलन को बारदौली सत्याग्रह के नाम से जाना जाता है । यह आन्दोलन अंग्रेज सरकार द्वारा लगान को 10 प्रतिशत से 30 प्रतिशत करने के विरोध में किया गया था । यह आन्दोलन लौह-पुरुष सरदार बल्लभ भाई पटेल के नेतृत्व में हुआ था।

बुलन्दशहर में काला आम पर शहीद हुए थे, क्रांतिकारी

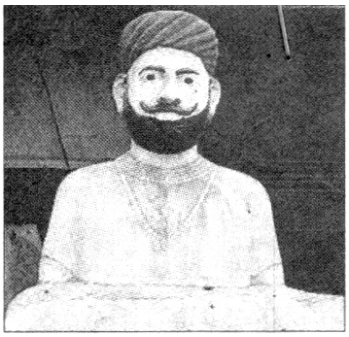

राव उमराव सिंह

दश की आजादी के लिए 1857 की क्रांति की अलख जग चुकी थी । इस जनक्रांति का श्रीगणश मेरठ की धरती से हुआ था । राष्ट्रीय भावना से ओतप्रोत भारत पुत्र राव उमराव सिंह ने अन्य दशभक्तों के साथ 12 मई, 1857 को सिकन्दराबाद तहसील पर धावा बोला था । वह दादरी क्षेत्र के गाँव कटहेड़ा के रहने वाले थे और उस समय सिकन्दराबाद तहसील ही लगती थी । इस दौरान तहसील के खजाने को अपने अधिकार में ले लिया था । इसकी सूचना मिलते ही बुलंदशहर के सिटी मजिस्ट्रेट सैनिक बल के साथ सिकन्दराबाद आ धमके थे । सात दिन तक सिकन्दराबाद सेना अंग्रेज सेना से टक्कर लेती रही । अन्त में 19 मई को सशस्त्र सेना के सामने क्रांतिकारियों को हथियार डालने पड़े थे । 46 लोगों को बंदी बना लिया था । जबकि उमराव बच निकले थे ।

इस क्रांतिकारी सेना में गुर्जर समुदाय की मुख्य भूमिका होने के कारण उन्हें सत्ता कोप आजना होना पड़ा । उमराव सिंह अपने दल के साथ 21 मई, 1857 को बुलंदशहर पहुँचे और कारागार पर धावा बोलकर अपने राजबंदियों को मुक्त करा लिया। बुलंदशहर से अंग्रेज शासन समाप्त होने की कगार पर था । लेकिन बाहर से सेना की मदद आ जाने से यह संभव नहीं हो सका । 30 और 31 मई 1857 को क्रांतिकारी सेना और अंग्रेज सेना का ऐतिहासिक युद्ध हुआ । इसमें जनहानि के बाद क्रांतिकारी सेना से पराजय स्वीकार कर ली। उसके बाद बुलन्दशहर के कालाआम (तत्कालीन कत्ल-ए-आम) चौराहे पर राव उमराव सिंह को हाथी के पैर से कुचलवा कर नृशंसतापूर्वक हत्या कर दी गई थी।

सत्य प्रतिलिपि

मीटिंग कार्यवाही दिनांक 27-9-96 प्रस्ताव संख्या-3

विषय : स्वर्गीय राजा नैन सिंह मार्ग के सम्बन्ध में

राजा नैन सिंह स्मारक समिति के अध्यक्ष का प्रार्थना पत्र श्री अब्दुल रहमान सदस्य द्वारा मीटिंग में प्रस्तुत किया गया जो झबले चाय वाले की दुकान से हाजिरा चौक (सरकारी नल) तक का नामकरण स्वर्गीय राजा नैन सिंह की यादगार में स्वर्गीय राजा नैन सिंह मार्ग रखे जाने के सम्बन्ध में है । प्रस्ताव पर विचार विमर्श हुआ तथा प्रस्ताव सर्वसम्मति से पास हुआ।

प्रेषित:

प्रताप सिंह नागर

सचिव

राजा नैन सिंह स्मारक समिति

बहसूमा, मेरठ।

अ० ह०

राजश कुमारी

अध्यक्ष

नगर पंचायत बहसूमा (मेरठ)

अध्याय 12

ईसा पूर्व गुर्जर साम्राज्य

प्राचीन भारत में गुर्जर राज्य

प्राचीन काल से ही गुर्जर प्रदेश (वर्तमान गुजरात) का उल्लेख पाया जाता है । 'गुर्जर' शब्द की व्युत्पत्ति 'गुरू' और 'गो' शब्दों से मानी जाती है । जिस प्रदेश में गुरूकुल अधिक थे और जहाँ गो पालन प्रचुरता से होता था वह गुर्जर प्रदेश था । द्रोणाचार्य के गुरू परशुराम का आश्रम गुर्जर प्रदेश में समुद्र के किनारे था । यह अलग बात है कि द्रोणाचार्य के समय तक गुरूकुलों में विद्याध्ययन हेतु बालकों को भेजने की वृत्ति शिथिल पड़ चुकी थी और अन्ततः द्रोणाचार्य को राजकुल में जाकर ही शिष्यों को पढ़ाना पड़ा।

गो पालन से 'गुर्जर' और 'गुर्जरी' शब्द इस प्रकार जुड़े हुए हैं कि उसके लिए लिखित प्रमाण की आवश्यकता ही नहीं है । दही बिलौती हुई गुर्जरी या गुर्जरी की मूर्तियाँ और चित्र उत्तर भारत में सर्वत्र मिलते हैं । क्षत्रिय होने पर भी गायों के कुलों (समूह, गौत्र) के साथ भ्रमण करते रहना भी कुछ गुर्जर कुलों की रुचि रही है । गुर्जर प्रदेश (गुजरात) के अतिरिक्त मथुरा के चारों ओर भी अनेक गुर्जर कुल बस गये थे जो आज भी बरसाना, बल्लभगढ़, भरतपुर, बुलन्दशहर, मेरठ इत्यादि में उसी प्रकार से अपना कुल धर्म निभा रहे हैं।

आज भी दिल्ली के 229 गाँव गुर्जरों के हैं । कृष्ण प्रिया राधा भी बरसाने की गुर्जर कन्या ही थीं। गुर्जर उच्च क्षत्रिय वंश माना जाता था तथा श्रीकृष्ण को कुछ लोग उच्च क्षत्रिय मानने से इन्कार करते थे इसलिए राधा और श्रीकृष्ण का विवाह न हो सका ऐसी भी किवदन्ती है । नन्द और यशोदा भी गुर्जर थे। श्रीकृष्ण के मित्र और सेनापति सात्यकि गुर्जर राजा थे।

''अधिक प्राचीनकाल में अन्वेषण करने पर मूल सूर्यवंश के राजा दिलीप की गो सेवा प्रसिद्ध है । उन्हीं के वंश में राजा दशरथ और श्रीराम तथा लक्ष्मण हुए । गुर्जर अपने को श्री लक्ष्मण के वंशज मानते हैं ।''

उत्तर-पश्चिम भारत के गुर्जरों में नांगड़ी (नागर) गुर्जर बहुत हैं । गुजरात के नागर ब्राह्मण भी नांगड़ी गुर्जरों से ही सम्बन्धित हैं । इनके कोशाम्बी तथा पाटलीपुत्र में भी राज्य थे । नागर शब्द नाग से बना है । पुराणों में इनके कई प्रसिद्ध केन्द्र थे जैसे विदिशा (भिलसा), पद्मावती

(नरवर), क्रान्तिपुरी (क्रान्तित राज मिर्जापुर)। यहाँ पर उल्लेखनीय है कि मुगल साम्राज्य एवं सैय्यदों से लोहा लेते हुए दयाराम नांगड़ी सरदार को मिर्जापुर जिले में क्रान्तित नोटा के यहाँ ही शरण मिली क्योंकि यही नागवंश की प्राचीन राजधानी थी । जिला नागौर (राजस्थान) में भी नागवंशी गुर्जर शासक रहे हैं जो नांगड़ी कहलाये ।

नांगड़ी गुर्जर अपने को नन्दी मानते थे । नन्दी भगवान शिव के उपासक थे । गौवंश की पवित्रता एवं रक्षा इनका पवित्र धर्म था ।

महाराजा कनिष्क जिन्होंने शक सम्वत् चलाया

गुर्जर साम्राज्य भू-चित्रः ईसा से 78 ई० से 1192 तक
''शासनकाल'' संसार मानचित्र

सन् 78 ई० से 1192 ई० तक कनिष्क ने नया सम्वत् जिसे शक सम्वत् कहा जाता है । राजा कनिष्क की पहली राजधानी पेशावर उसके बाद मथुरा राजधानी रही । इसके समय कश्मीर के कुण्डल वन में आचार्य वसूमित्र की अध्यक्षता में चौथी बौद्ध संगीति हुई।

कुषाण वंश गुर्जर साम्राज्य

कुषाण वंश के प्रसिद्ध राजा कनिष्क इस समय के प्रसिद्ध राजा हुये। कुषाणों को यूचि या तौचेरियन भी कहा जाता है । चूँकि कबीला पाँच भागों में बँट गया था । इन कबीला अफगानिस्तान, काबूल, कंधार और प्रार्थिया के एक भाग को अपने राज्य में मिला लिया । इसने वैदिक धर्म को अंगीकार किया ।

इसका समय ईसा से 78 ई० पूर्व के लगभग माना जाता है । इस प्रसिद्ध राजा कनिष्क के समय में कश्मीर के कुंडल वन में आचार्य प्राश्र्व की अध्यक्षता में चौथी बौद्ध संगीति हुई थी । इसकी राजधानी पेशावर (पुरुषपुर) एवं दूसरी राजधानी मथुरा थी । ''इसने 78 ई० में नया सम्वत् चलाया जिसे अब शक सम्वत् के नाम से जाना जाता है । महाराजा कनिष्क ने कश्मीर को जीतकर वहाँ ''कनिष्कपुर'' नामक नगर बसाया । उसने काशगर, यारकन्द व खोतान पर भी विजय प्राप्त की ।

इस प्रकार शक सम्वत् ई० 78 को चलाने वाले महान् शासक कनिष्क ही थे । इस प्रकार से कुषाण वंश से 1192 ई० तक लगभग 1250 वर्षों तक गुर्जर साम्राज्य रहा है । ईसा 78 ई० पू० महाराजा कनिष्क का शासन मिलता है । अन्त में 1192 ई० तक उ०प्र० कन्नौज में गुर्जर साम्राज्य समाप्त हो गया। दिल्ली में अन्तिम महाराजा अनंगपाल तंवर का अन्तिम गुर्जर साम्राज्य था। विभिन्न इतिहासकारों के मत : **कर्नल टॉड** के अनुसार राजपूतों को विदेशी उत्पत्ति माना है। राजपूत शक, कुषाण तथा हूणों की सन्तान थे।

विलियम कुक तथा बी०ए० स्मिथ नामक इतिहासकारों ने राजपूत जाति को विदशी माना है जो गुर्जर हूणों के साथ ही भारत आये जिन्हें द्वितीय श्रेणी के क्षत्रिय के रूप में हिन्दू समाज में समाहित कर लिया गया । कालान्तर में वे गुर्जर प्रतिहार राजपूत के रूप में प्रतिष्ठित हुए ।

डॉ० इश्वरी प्रसाद व डी०आर० भण्डारकर नाम के इन दोनों इतिहासकारों ने राजपूतों को विदशी और गुर्जरों को द्वितीय श्रेणी के क्षत्रिय माना है ।

डी०एच० ओझा व सी०वी० वैद्य भी राजपूतों को विदशी तथा गुर्जरों को द्वितीय श्रेणी के क्षत्रिय मानते हैं । मुगल शासनकाल में राजपूत जाति का प्रचलन हुआ है । ''महाभारत काल के समय में भी क्षत्रिय जाति में दो वंश थे सूर्यवंश और चन्द्रवंश । ये दोनों ही वंश क्षत्रिय थे । महाभारत काल में सूर्यवंश का अन्त हो जाता है, शेष चन्द्रवंश बचता है । यही चन्द्रवंश गुर्जर क्षत्रिय है । इन्हीं में अहीर, जिन्हें हब यादव कहा गया है । गुर्जर जाति से ही जाट जाति का उदय हुआ, जो जत्थे के रूप में अलग हुये जाट कहलाये । इस प्रकार से द्वितीय क्षत्रिय जाति में गुर्जर एवं अहीर ही रह जाता है । इनमें जत्थे के रूप में अलग हुए क्षत्रियों को जाट कहा जाता है । चूंकि जाट 11वीं शताब्दी में अलग हो गये थे ।''

संस्कृत के महान् विद्वान गुर्जर सम्राट भोज

(वर्ष 1010 ई. में गददी पर बैठे थे। राजा भोज का शासन काल 55 वर्ष 7 माह 3 दिनः वर्ष - 1010 से 1065 ई.)

भोजराज का जन्म परमार वंश में हुआ। इस वंश के विषय में ऐसी जन श्रुर्ति प्रसिद्ध है कि विश्वामित्र ने वशिष्ट ऋषि की कामधेनु पकड़ ली थी। उसे प्राप्त करने के लिऐ वशिष्ठ ने यज्ञ किया। फिर यज्ञ कुण्ड से एक वीर का आर्विभाव हुआ। उस वीर योद्धा ने वशिष्ट ऋषि की गाय द्वीन कर पुनः लाकर दे दी। उस वीर को ऋषि ने परमार नाम से पुकारा। अतः इस वंश का नाम परमार पड़ा।

इस वंश का प्रथम राजा कृष्ण राज उपेन्द्र माना जाता है। लगभग सम्वत **820** ई. में राजा कृष्ण राज उपेन्द्र मालवा के प्रथम शासक थे। उन्होंने अपनी राजधानी, धारा नगरी बनाई थी।

राजा सिन्धुराज को वृद्धावस्था में एक पुत्र उत्पन्न हुआ जिस का नाम भोजराज रखा गया। भोज जब पाँच वर्ष का हुआ, तो राजा ने अपने को वृद्ध समझ कर मन्त्रियों के साथ विचार करके अपने राज्य का भार अपने छोटे भाई मुन्ज को सौंप दिया और राजकुमार भोजराज को उनकी गोद में दे दिया। बाद में कुछ समय पश्चात् राजा स्वर्गवासी हो गये।

राजा मुन्ज दरबार में बैठे थे। एक ज्योतिष पांरगत ब्राह्मण राजा मुन्ज के पास सभा में आया। तब राजा ने उससे अपने जीवन में घटनाओं के विषय में पूछा। उसने सारी बाते बता दी। फिर राजा उससे सन्तुष्ट हो गये।

सभा में बैठे हुऐ बुद्धि सागर मन्त्री ने कहा, महाराज, भोज की जन्मपत्री के विषय में ब्राह्मण से पूछिये। ब्राह्मण ने भोज को पाठशाला से बुलवाया और भोज को देखकर ज्योतिषि ने कहा कि राजन भोज के भाग्योदय को तो ब्रह्मा भी कहने में समर्थ नहीं है। मैं बैचारा कौन हूँ। फिर भी बताता हूँ। ''कि भोजराज बंगाल सहित दक्षिण पर पचपन वर्ष, सात माह और तीन दिन राज्य करेगा''।

यह सुनकर राजा मुन्ज घबरा गया और ब्राह्मण को विदा किया। रात्री में भोज को मारने की सोचने लगे। उसने बंगदेश के महाबली वत्सराज को बुलाया और कहाँ आप भोजराज का वध कर दीजियें। वत्सराज ने ऐसा करने से मना किया। परन्तु राजा के अनुरोध पर भोजराज को वन में ले आया। वहाँ जा कर वत्सराज ने भोजराज को सारी बात बताई। तब भोज ने राजा मुन्ज को वट वृक्ष के पत्ते पर वन में अपने वध की शंका से लिखा था।

''मान्धाता च महीपतिः कृतयुगांलकार भूतों गतः, सेतुर्येन महोदधौ विरचितः कयासौदशास्यान्तकः,
अन्ये वापि युधिष्टिर प्रभृतयों याता द्रिव भूपते, नैकेनापि संमगता वसुमती नूनः त्वया या रात्री स्यति।।''

सतयुग के अलंकार भूत मान्धाता राजा भी चले गये। कहाँ है वे रावण का वघ करने वाले श्री राम उन्होंने समुद्र पर पुल बनाया। हे राजन युधिष्टिर आदि राजा भी यहाँ से चले गये परन्तु पृथ्वी किसी के साथ नहीं गई। अब निश्चित ही तुम्हारे साथ जायेगी।

उस समय भोज ने हाथ से खून निकाल कर एक वट वृक्ष के पत्ते पर एक पत्र लिखकर वत्सराज को दिया, कि इसे राजा मुन्ज को दे देना। जब वत्सराज ने यह पत्र राजा मुन्ज को दिया तो वह इसे पढ़कर शय्या से भूमि पर गिर पड़ा। भोज ने लिखा था कि लोभ ही पाप की जड़ है और लोभ ही पाप का कारण है। लोभ के कारण मनुष्य माता, पिता, पुत्र, भाई, मित्र एवं स्वामी को भी मार देता है।

चूकि वत्सराज ने भोज को मारा नही था। उसे गुफा में छुपा दिया था। जब राजा मुन्ज ने अग्नि में प्रवेश कर मरने की इच्छा की तभी वत्सराज ने राजा के मन्त्री बुद्धिसागर से कान में कुछ कहाँ। तब बुद्धिसागर ने वत्सराज को सभा से बाहर भेज दिया। एक सन्यासी का रूप धारण करके (काल्पनीक) सभा में प्रवेश किया। तब राजा मुन्ज के मन्त्री बुद्धिसागर ने उस देव पुरूष से पूछा कि आप क्या जानते हो। तो उसने बताया कि में रोगी और शस्त्र से कटे को जीवित कर सकता हूँ। राजा ने यह सुना और कहने लगा महाराज आप भोज को जीवित करें।

तब सन्यासी ने जाकर शमशान में दिखावे का यज्ञ किया। वत्सराज ने गुप्त स्थान से भोज निकालकर राजा मुन्ज को सौंप दिया। तभी राजा मुन्ज ने भोज को राज्य सौंप दिया और वन को जाकर तप किया। तब राजा भोज ने वर्ष **1010** ई. गददी पर बैठे थे। राजा भोज का प्रथम युद्ध कर्नाटक के चालुक्यों के साथ हुआ। फिर इन्द्रास्थ, लाठ प्रदेश के राजा कीर्तिराज, कोकंण, के केशिदेव, तुरूठ के कलचुरियों, चन्देलों, ग्वालियर के कच्छवाहों, कन्नौज के गुर्जर सम्राटों और चाहमानो, गुजरात के चौल्युकों से युद्ध हुए। इस प्रकार राजा भोज ने अनेक राजाओं से युद्ध किया।

भारत के महान इतिहाकार के. एम. मुन्शी जो भारत संविधान सभा की एक समिति के अध्यक्ष थे। उन्होनें राजा भोज के बारे में लिखा है।

भोज राज की प्रतिभा चतुर्मुखी थी। उन्होनें कविता के साथ-साथ अन्य शास्त्रों एवं विधाओं से सम्बन्ध ग्रन्थों को पढ़ा तथा अनेक शास्त्रों से सम्बन्ध ग्रन्थ लिखे। अत: वे एक असाधारण विद्वान एवं कवि थे। उन्होनें राजनीति, ज्योतिष, दर्शन, वास्तुकला, व्याकरण, चिकित्साशास्त्र, धर्मशास्त्र एवं काव्य शास्त्र पर लगभग **45** ग्रन्थ लिखे है।

राजा भोज रचित कुछ ग्रन्थों का उल्लेख प्रस्तुत है।

1. **सरस्वती कण्ढाभरण** (यह अलंकार शास्त्र का ग्रन्थ है।)
2. **श्रृंगार प्रकाश** (यह भी काव्य शास्त्र के सम्बद्ध में ग्रन्थ है।)
3. **शब्दानुशासन** (व्याकरण शास्त्र से सम्बन्ध)

4. **चाणक्यनीति** (नीति शास्त्र)
5. **चारूचर्मा** (धर्मशास्त्र)
6. **तत्व प्रकाश** (शैव धर्म)
7. **व्यवहार समुच्चय** (धर्मशास्त्र)
8. **शिव तत्व रत्नः कलिका** (धर्मशास्त्र एवं दर्शन)
9. **सिद्धान्त संग्रह।**
10. **राज मार्तण्ड** (योग सूत्रवृति)
11. **आयुवेद सर्वस्व**
12. विश्रान्त विद्या विनोद
13. **राजमृगांक योगसूत्र वृति** (आयुर्वेद एवं ज्योतिष)
14. **आदिव्य प्रताप सिद्धान्त**
15. **राजमार्तण्ड**
16. **विदुज्जनवल्लभ प्रश्न ज्ञान**
17. **शातिहोत**
18. **समरान्गण**
19. **युकित कल्पतरू वास्तु**
20. **नाम मालिका**
21. **विद्या विनोद**
22. **सुभाषित प्रबन्ध**
23. **चम्पूरामायण**
24. **भोज संहिता**
25. **भोज भट्टा रिकाबली**
26. **व्याकरण दर्शन**
27. **रस तरंगिणी**
28. **सरस्वती कण्डा भरण**
29. **भर्तृहरिकरिका**
30. **राज मृगाङ्क**
31. **विविध विधा चतुरा**
32. **सिद्धांतसार**
33. **राजमार्तण्ड वेवान्त**
34. **द्रव्यानुयोग**
35. **कुर्मशतक्रम**
36. **अवनि शतकम**
37. **परिजात मजरी**
38. **श्रंगार मन्जरी कथा**
39. **कोदण्ड**
40. **अज्ञातनाम प्राकृत काव्य**
41. **भुजबल**

राज भोज ने धारा नगरी संस्कृत महाविद्यालय बनवाये। कालिदास उस समय महान कवि थे। राजा भोज के शासन के कवि थे। मालवाँ के नवाबो ने महाविद्यालय को मजिस्द बना दी थी।

विदेशी शासकों को क्षत्रिय वीर गुर्जरों ने वापस भेजा

मेसीडोनिया के क्षत्रिय फिलिप द्वितीय का पुत्र एलक्जैण्डर, सिकन्दर महान् के नाम से जाना जाता है। सिकन्दर ने अपनी विश्वविख्यात विजय की रणनीति के अन्तर्गत 20 वर्ष की आयु में 'हरवामनी साम्राज्य' का विध्वंस कर दिया था । इस विजय से सिकन्दर का मनोबल बढ़ गया और वह विश्व-विजय की सोचने लगा।

ईसा से 327 वर्ष पूर्व सिकन्दर महान् बल्ख (बैक्ट्रिया) से होता हुआ भारत की ओर बढ़ा। सिकन्दर काबुल को जीतते हुए तथा हिन्दुकश पर्वत को पार करते हुए तक्षशिला पहुँचा। तक्षशिला के **राजा आम्भी** ने सिकन्दर की सेना के सामने आत्मसमर्पण कर दिया तथा राजा आम्भी ने सिकन्दर को सहयोग भी दिया। इस प्रकार से सिकन्दर का मनोबल और भी बढ़ गया। सिकन्दर महान् अनेक राजाओं को हराता हुआ आगे बढ़ने लगा। सिकन्दर ने भारत की परम भूमि में प्रवेश किया। इस विश्वविख्यात शासक सिकन्दर को भारत भूमि में प्रवेश करने से रोकने के लिये गुजरावाला के महान् **राजा पोरस** ने सिकन्दर से युद्ध करने का ऐलान किया। इस युद्ध को ''वितस्ता का युद्ध'' के नाम से जाना जाता है । यह युद्ध झेलम नदी के तट पर हुआ। इस युद्ध में राजा पोरस की हार का यह कारण रहा कि अन्य हिन्दू राजाओं ने पोरस महान् का साथ नहीं दिया। इस प्रकार से इस युद्ध में राजा पोरस ने बड़ी वीरता के साथ युद्ध किया परन्तु आपसी राजाओं द्वारा राजा पोरस को धोखा देने से उनकी हार हुई।

परन्तु जब सिकन्दर का सेनापति सेल्यूकस राजा पोरस को पकड़कर सिकन्दर के सामने ले गया तो सिकन्दर महान् ने राजा पोरस से प्रश्न किया कि आपके साथ कैसा व्यवहार किया जाये? इस पर महान् पोरस ने सिकन्दर को जवाब दिया कि मेरे साथ वैसा ही व्यवहार किया जाये जो एक राजा को दूसरे राजा के साथ करना चाहिये। इस उत्तर से सिकन्दर महान् गद्-गद् हो गया और सिकन्दर महान् पर संकट की इस महान् घड़ी में भी पोरस की वीरता, धर्मोयता और साहस का इतना प्रभाव पड़ा कि इससे प्रभावित होकर उसने अपने देश वापस जाने का निर्णय लिया। सिकन्दर महान् इस गुर्जर सम्राट पोरस की वीरता को देखते हुए भारत से वापस चले गये।

इतिहास का एक अन्य उदाहरण–गुर्जर प्रतिहार वंश के कन्नौज के शासक **महेन्द्र पाल द्वितीय** का पुत्र **राजा राज्यपाल** गद्दी पर बैठा । वह गुर्जर प्रतिहार वंश का 12वां राजा था । राजा राज्यपाल के शासन के समय महमूद गजनवी ने 1018 ई० में भारत पर आक्रमण किया । महमूद गजनवी लूट-पाट करता हुआ कन्नौज पहुँच गया । वहाँ के शासक राजा राज्यपाल ने महमूद गजनवी की लूट-पाट को रोक दिया । महमूद गजनवी कन्नौज के राजा राज्यपाल से प्रभावित होकर वापस अपने देश चला गया।

महमूद गजनवी ने पुनः 1026 ई० में भारत पर आक्रमण करके गुजरात राज्य में प्रवेश किया। वहाँ पर महमूद गजनवी का सिंध के मैदान में राजा जयपाल सिंह के साथ युद्ध हुआ। यहाँ महमूद गजनवी की पराजय हुई। इससे पूर्व महमूद गजनवी ने सोमनाथ के शिव मन्दिरों को लूट लिया था। राजा जयपालसिंह से सिंध के मैदान में हारने के पश्चात महमूद गजनवी को वापस अपने देश चले जाना पड़ा। इस प्रकार से 1065 ई० में गुर्जर राजाओं का शासन समाप्त हो जाता है। इससे पहले किसी विदेशी राजा को गुर्जर राजाओं ने भारत में घुसने नहीं दिया। इसके पश्चात राजपूत राज्य की स्थापना हुई। इसी समय विदेशी शासकों ने यहाँ आकर अपने राज्य की स्थापना की। इसी प्रकार **महाराजा रणजीतसिंह** के प्रधान सेनापति **वीर हरिसिंह नलवा** पर यवनों ने भारत में घुसने नहीं दिया। इस वीर हरिसिंह नलवा की वीरगाथा हम सुनते रहे हैं। इस वीर ने भी इस महान् क्षत्रिय गुर्जर जाति में ही जन्म लिया था। इसी समय वीर शिवाजी ने जन्म लेकर मुगल शासकों को लोहे के चने चबवा दिये। वीर शिवाजी न होते तो हिन्दुत्व नष्ट ही हो जाता।

इसी वंश के **राजा भोज** उज्जैन के राजा थे । जब राजा भोज को पूर्व शासक विक्रमादित्य का सिंहासन मिला तो राजा भोज उस सिंहासन पर बैठना चाहते थे परन्तु जनश्रुति के अनुसार राजा भोज को सिंहासन पर बैठने से मना कर दिया गया था । उन्होंने इस प्रकार की आवाज सुनी कि हे राजा भोज आप राजा विक्रमादित्य जैसे राजा बनें तभी आप इस सिंहासन पर बैठें । इस महान् शासक राजा भोज ने ऐसे धार्मिक अनुष्ठान किये कि राजा भोज का नाम भी विक्रमादित्य की तरह ही आज भी अमर है । राजा भोज इस प्रकार प्रतापी राजा हुए । इस संसार में राजा भोज का नाम आदर के साथ लिया जाता है। भारत वर्ष महान् राजनेताओं को हमेशा याद करत् रहेगा । ये राजनेता निम्न प्रकार से हैं–

11 मार्च 1680 को **वीर शिवाजी** इस संसार से विदा हो गये ।

11 दिसम्बर 1950 को **सरदार बल्लभ भाई पटेल** इस संसार से विदा हुए ।

11 जनवरी 1966 को **लाल बहादुर शास्त्री** इस संसार से विदा हो गये ।

11 जून 2000 को **राजेश पायलट** इस संसार से विदा हो गये ।

इस प्रकार से इन महान् व्यक्तियों का इस संसार से कुछ समय पूर्व चले जाने से भारतवर्ष के प्रत्येक मनुष्य के मन में एक ज्वाला दहकती रहेगी । अगर ये महान् व्यक्तित्व वाले मनुष्य इस मृत्युलोक में और अधिक समय तक जीवित रहते तो इस मृत्युलोक में रहने वाले प्रत्येक मनुष्य को अधिक सहानुभूति होती। अब इनके अल्पकाल में इस संसार से चले जाने से प्रत्येक मनुष्य के मन में यह धारणा बनी हुई है कि अगर ये महान् व्यक्ति इस संसार में और अधिक समय तक जिन्दा रहने चाहिये थे, परन्तु परम पिता परमेश्वर के यहाँ किसी की नहीं चलती और परमपिता परमेश्वर कुछ महान् व्यक्तित्व वाले मनुष्यों को शीघ्र ही इस संसार से ले जाते हैं।

–कुंवर प्रताप सिंह नागर

छत्रपति शिवाजी नागपुर के गुर्जर परिवार 'भोंसले' के थे

20 अप्रैल, 1627 ई० को शिवनेर के दुर्ग में **शिवाजी** का जन्म हुआ । वे **शाह जी भोंसले** की प्रथम पत्नी **जीजाबाई** के पुत्र थे । शाह जी भोंसले बीजापुर के एक सामन्त थे, जिन्होंने **''तुकाबाई मोहितो''** नामक एक अन्य स्त्री से विवाह कर लिया था । इसी कारण जीजाबाई उनसे अलग रहती थीं । बालक शिवाजी का लालन-पालन उनके स्थानीय संरक्षक **दादा जी कोणदेव** तथा जीजाबाई के गुरू **समर्थ रामदास** जी की देख-रेख में हुआ । जिन्होंने उन्हें मातृभूमि की रक्षा के लिए प्रेरित किया। दादाजी कोणदेव से उन्होंने सेना और शासन की शिक्षा पायी थी । 12 वर्ष की आयु में शिवाजी को पूना की जागीर दे दी गयी । इन दिनों देश में अव्यवस्था फैली हुई थी । जनता में सुरक्षा का अभाव था । इन सब परिस्थितियों में शिवाजी ने अपनी माता जीजाबाई के आदर्श एवं गुरू की उच्च शिक्षा को अपने महानतम चरित्र में अंगीकार करके मुगल शासकों से लोहा लेते रहे तथा 1674 ई० में उनका छत्रपति के रूप में राज्याभिषेक हुआ तथा 1680 में एक उच्च चरित्रवान, योग्य शासक, कुशल राजनीतिज्ञ तथा साहसी व्यक्ति का सूर्य हमेशा के लिए अस्त हो गया ।

वीर शिवाजी मराठा

जब बादशाह सलीम की पुत्री गौहरबानो को छत्रपति के सैनिक पकड़कर ले आये थे तो शिवाजी के सैनिकों ने छत्रपति शिवाजी से कहा कि आप गौहरबानो से शादी कर लें । तभी छत्रपति शिवाजी ने कहा कि मैं भी इतना सुन्दर होता जो मैं इनकी कोख से जन्म लेता ।

इन्हीं आदर्शों के कारण छत्रपति इतिहास में सूर्य के समान हैं । उनका इतिहास स्वर्ण अक्षरों से लिखा है ।

''मुगलों की ताकत को जिसने तलवारों पर तौला था,
बोली हर-हर महादेव की, वीर शिवाजी बोला था ।''

इस प्रकार से वीर शिवाजी के बारे में अनेकों विशेषताएँ थीं । मैं छत्रपति जी के पूरे परिवार की वंशावली का नीचे वर्णन कर रहा हूँ–

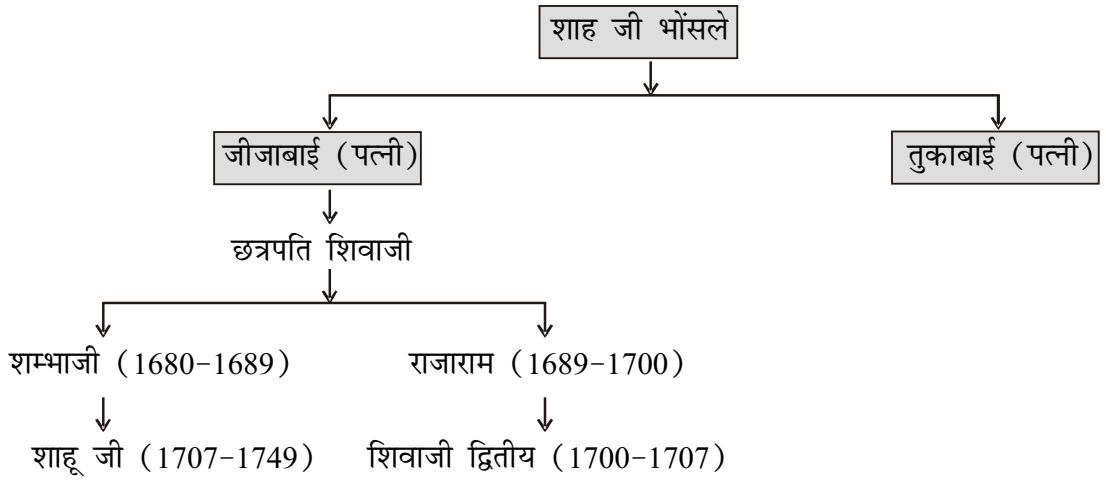

1708 में मीना नदी के तट पर **भीमापुर** ने पुनः राज्याभिषेक किया ।

वीर शिवाजी के पोते **भीमापुर** ने राज्याभिषेक के पश्चात् 1707 से 1749 तक राज्य किया । परन्तु 1714 में राजा राम की दूसरी पत्नी **राजसबाई** ने षाडयन्त्र करके **ताराबाई** और उनके पुत्र को बन्दी बना लिया और अपने पुत्र **शम्भा जी द्वितीय** के साथ कोल्हापुर में बस गयीं । इस प्रकार शम्भा जी द्वितीय भी मराठों के राजा की भांति ही रहा । लेकिन महाराष्ट्र में शाह जी मराठों का राजा रहा । शाह शासनकाल में मराठा शक्ति था । सितम्बर 1749 ई० में शाहू की मृत्यु हो गयी ।

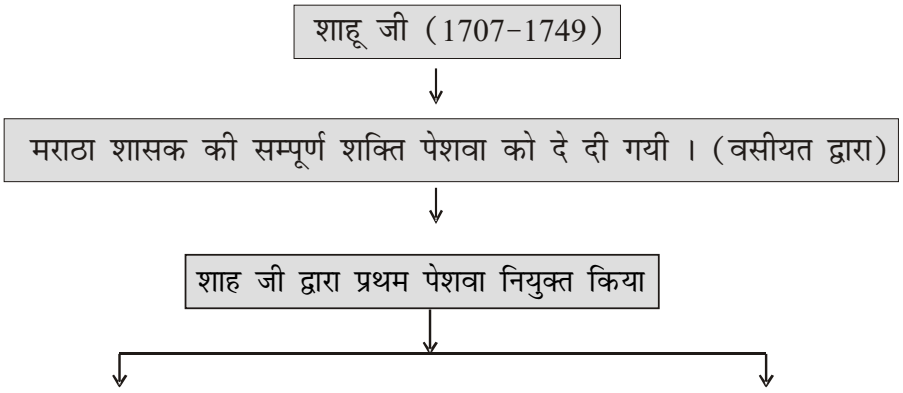

बाजीराव को दो नामों से पुकारा जाता था–**रघुनाथ राव** तथा **नाना साहब** ।

बालाजी प्रथम की 25 अप्रैल, 1940 को मृत्यु होने के बाद शाहू जी के दो पुत्र हुए–नाना साहब (1740-1761) तथा रघुनाथ राव ।

बालाजी प्रथम के बड़े पुत्र 18 वर्षीय नाना साहब पेशवा नियुक्त हुए । नाना साहब पेशवा ने **रघुजी भोंसले** की देखरेख में पेशवा का कार्य सौंपा और उन्हें पूर्ण अधिकार देकर आक्रमण की भी छूट दे दी। इसी रघुजी भोंसले ने अपनी सेना लेकर दिल्ली पर आक्रमण किया जिसका अहमद शाह अब्वाली से पानीपत का तृतीय युद्ध 1761 में सामना हुआ था। उसके बाद–

माधव राव नारायण प्रथम (1761-1772)

नारायण राव (1772-1773)

सवाई माधव राव द्वितीय (1774-1795)

पेशवा बाजीराव द्वितीय (1796-1818)

इनके बाद नाना साहब के छोटे भाई **रघुनाथ राव, बाजीराव द्वितीय** (1796) पेशवा नियुक्त हुए ।

बाजीराव द्वितीय के समय अंग्रेजों ने पेशवा पर अधिक अत्याचार प्रारम्भ कर दिये थे । 1818 ई० में बाजीराव द्वितीय का पेशवा का पद अंग्रेजों ने हमेशा के लिये समाप्त कर दिया और अंग्रेजों ने 8 लाख रुपये प्रति वर्ष पेंशन देकर **बाजीराव द्वितीय** को कानपुर भेज दिया तथा वहीं पर उनकी मृत्यु हो गयी । उसके बाद उनका पुत्र **नाना साहब (धूधूपंत)** के नाम से पुकारा जाता था। नाना साहब (1818-1857) को अंग्रेजों ने पेंशन देने से मना कर दिया। भारतवर्ष में लार्ड डलहौजी की नीति का विरोध सबसे पहले नाना साहब पेशवा ने क्रान्ति की शुरूआत की तथा उसके बाद झांसी में **रानी लक्ष्मीबाई** व **अवन्तीबाई** ने शुरू की थी।

1857 में अंग्रेजों के खिलाफ आन्दोलन शुरू किया नाना साहब पेशवा ने जिनके वंशज **प्रताप राव गुर्जर** ने महाराष्ट्र हाईकोर्ट में अपनी सम्पत्ति के लिये जो लार्ड डलहौजी ने 1857 में जब्त कर ली थी की अपील की ।

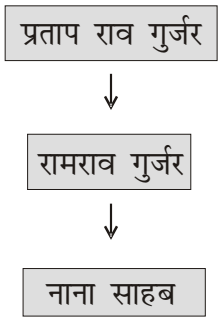

1857 के पश्चात नाना साहब की स्थिति अंग्रेजों ने दयनीय कर दी थी।

1868 ई० में नाना साहब के पोते तेज सिंह राव ने महाराष्ट्र हाईकोर्ट में अपील की थी सम्पत्ति 294 एकड़ मिलने की परन्तु महाराष्ट्र हाईकोर्ट ने उनके वंशजों को सम्पत्ति देने से मना कर दिया। सम्पत्ति ग्राम समाज को देकर सरकार ने अपने हाथों में ले ली थी। तेज सिंह राव ने हाईकोर्ट के खिलाफ सर्वोच्च न्यायालय दिल्ली में रिट याचिका दायर की जिसका आदेश सर्वोच्च न्यायालय ने (20-8-1992) में सुनाया।

माननीय सर्वोच्च न्यायालय दिल्ली में प्रताप राव गुर्जर के पुत्र तेज सिंह को छत्रपति शिवाजी का वंशज तो मान लिया परन्तु 294 एकड़ भूमि अधिकार में नहीं दी गयी। स्वतन्त्र भारत का यह विधान बना है कि किसी जमींदार पर 64 एकड़ बीघा से अधिक जमीन नहीं रह सकती है।

इसीलिये माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने तेज सिंह राव को छत्रपति शिवाजी का वंशज मानते हुए एक आदेश 20-8-1992 को किया। उस आदेश की फोटो कॉपी साथ में संलग्न है।

नागपुर के पास 184 गांव गुर्जर जाति के हैं जिनका गौत्र बैंसले जो भोंसले का उपराह्म है। बीजापुर रियासत के पास भी कटिल गुर्जरों के ग्राम हैं। इस प्रकार महाराष्ट्र के भू-भाग में गुर्जर जाति सम्पन्नता में मौजूद है।

SHIVAJI DESCENDANT LOSES LAST COURT BATTLE

The order released by the chief justice of India, Y.B. Chandrachude on 29th Sept 1992

Rakesh Bhatnagar
The Times of India News Service
29-9-1992 New Delhi

The surviving descendant of one of the distinguished generals of Maratha hero Shivaji lost the last legal battle when the Supreme Court today held that 294 acres of land owned by him was merely a gift by the ruler of Nagpur, Raghoji-II to the ancestors of the descendant, Tej Singh Rao, 199 years ago in 1973.

Tej Singh Rao, descendant of Pratap Rao Gujar, had been litigating against the Maharashtra government's order declaring 176.91 acres of the total gifted land as surplus.

The land was stated to be a part of grant that Raghoji-II made on the marriage of his daughter Banubai to Vyankatrao alias Nanasaheb son of Ramrao, a male descendant of Pratap Rao Gujar. As both the bride and bridegroom were minors, the land was held in custody of Ramrao. All villages in Bhiwapur taluk and six villages in other taluks and annual cash allowance of Rs. 17,415 comprised the grant.

CONTENTION : Raghoji-II died in 1816. Tej Singh Rao's contention had been that as the land granted by the then ruler of Nagpur through a sovereign legislative grant flowing from the sovereign authority, the post-independence laws were not applicable on its administration. He said the land was not a subject matter of ceiling laws. He sought protection for the grants given by the erstwhile rulers through sovereign legislation.

The high court while dismissing the surviving descendant's petition about 10 years ago noted that the grant in question was a "gift pure and simple" and was not a legislation act by the ruler.

The records and documents produced by Tej Singh Rao were of little help in ascertaining the exact manner in which the grant was conferred on his ancestors by Raghoji-II. The register of "Maufi Holdings" for 1866-1894 and 1913-14 indicated that the grant was made by Raghoji-II in favour of **Ramrao Gujar.**

It said "original grantee Ramrao, the father-in-law of Bannobai, then daughter of Raghoji-II from whom it descended, to her husband, the Banubaie's own son having been adopted by Pursoji Bhonsle as heir to the throne, she adopted her grandson Chitkojirao as her heir, he then came into possession of all the village forming the taluk Bhiwapur and has held them ever since."

REVENUE-FREE : In one of the recordings in the register it the register it was found that the grant was meant for support of "a member of the ruling family". The villages granted to the family were then kept revenue-free in perpetuity for the holder of grant and his heirs.

During the proceedings it was also revealed that till 1866 the grant was stated to be for the support of "a member of the ruling family". Later the entry in the register said the grant was for the "support of the ruling family". The court could not find any entry which showed that the grant was made through the legislative act by Raghoji-II at the time of his daughter's marriage.

Then, Tej Singh Rao referred to the letter written by the India Office, London, to the governor general on December 16, 1867. He said Her Majesty's government had made a fresh grant in favour of Chitkojirao Gujar of the Bhonsle family of Nagpur.

This communication said : "Having considered in Council your Excellency's letter of May 23, foreign department (political), I have much satisfaction in recommending to you the sanction of her Majesty's government to the recommendation of your Excellency in council in favour of the proposed grant to Chitkojirao **Babasahib Gujar**, of the Bhonsle family of Nagpur and its continuance to his adopted son Kooshunjee and his lineal male issues in each generation as an act of special indulgence.

The courts noted that even this letter did not mention that the sanction to the grant was accorded by Her Majesty's government in exercise of her legislative functions. There was no enactment of the British Parliament sanctioning the grant. Therefore, it was difficult to hold that the grant was sovereign legislative act. Since it was not a legislative act, the grant was not an existing law as defined by Article 366 (10) of the Constitution. The provision continues to be operative by virtue of Article 372(1) of the Constitution, the court noted.

The end result is that Mr. Tej Singh Rao will have to part with 176.91 acres of land under the Maharashtra Agricultural and (Ceiling on Holidays) Act, 1961.

◗ **नोटः** उपरोक्त प्रकरण माननीय उच्चतम न्यायालय का है जो भारत के प्रधान न्यायाधीश वाई. वी. चन्द्र चूड की पीठ द्वारा दिये गये आदेश की फोटो प्रति कियी है।

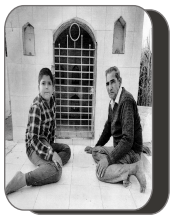

राजा नैन सिंह स्मारक समिति का गठन

राजा नैन सिंह स्मारक समिति का गठन

16 अप्रैल 1986 ई० को तत्कालीन मुख्यमंत्री पंडित नारायणदत्त तिवारी जी के निर्देश पर संसदीय कार्य एवं गृहराज्य मंत्री उ०प्र० शासन बाबू हुकुम सिंह जी जब हस्तिनापुर में जैन समाज के एक समारोह में आये थे, मैं भी उनके साथ था । जब जैन समाज ने राजा नैन सिंह इतिहास का बखान किया और उन्होंने बताया कि दिगम्बर जैन बड़ा मन्दिर की नींव स्वयं राजा नैन सिंह जी ने रखी थी तो मैं आत्मविभोर हो गया था । मैं अपने मन में सोचने लगा कि हमने पूर्वजों के प्रति कुछ नहीं किया तभी माननीय मंत्री बाबू हुकुमसिंह के निर्देशन में राजा साहब के आदर्शों का प्रकाशन करने का आदेश हुआ। तभी मैंने अपने वंशज बाबा कुंवर विधिचन्द नागर से राजा नैन सिंह स्मारक समिति गठन करने का अनुरोध किया । राजा नैन सिंह जी की जयंती के अवसर पर 21 नवम्बर 1986 ई० को कुंवर विधीचन्द नागर की अध्यक्षता में राजा नैन सिंह स्मारक समिति का गठन किया गया । अभी तक राजा नैन सिंह स्मारक समिति द्वारा पाँच किसान सम्मेलन किये गये है।

राजा नैन सिंह स्मारक समिति द्वारा किये गये महत्त्वपूर्ण कार्य

राजा नैन सिंह स्मारक समिति द्वारा वर्ष 1986 ई. से वर्ष 2021 तक के किये गये कार्य निम्न लिखित है।

- 27 मार्च 1986 ई. को राजा नैन सिंह की पुण्यतिथि पर समिति की बैठक बहसूमा में समिति के सचिव प्रताप सिंह नागर के आवास पर हुई। जिसकी अध्यक्षता समिति के सर्वप्रथम अध्यक्ष कुंवर विधी चन्द्र नागर ने की।
- समिति द्वारा तय किया गया कि राजा नैन सिंह के नाम पर किसान सम्मेलन किया जाये। समिति द्वारा पहला किसान सम्मेलन बहसूमा में आयोजित किया गया। राजा नैन सिंह की पुण्यतिथि के अवसर पर 27 मार्च 1986 ई. को बहसूमा में (राम लीला मैदान) में आयोजित किया गया। इसमें मुख्य अतिथि संसदीय कार्य एवं खादय मन्त्री माननीय हुकुम सिंह जी पधारे।

- दूसरा किसान सम्मेलन भी बहसूमा में दिनांक 27 नवम्बर 1991 ई. को आयोजित किया गया। सम्मेलन राजा नैन सिंह के जन्म दिवस पर आयोजित किया गया। इसमें भी माननीय हुकुम सिंह जी पधारे।
- वर्ष 1992 में बहसूमा की मुख्य सड़क पर (शिव मन्दिर स्थित है) इसी मन्दिर में सन्यासी अटर सटर नाम से विख्यात अर्थात राजा रगबीर लण्डौरा भी इसी मन्दिर में रहे। स्वामी कल्याणदेव जी महाराज ने सन्यासी अटर सटर की सराहना की थी। दुर्गा मन्दिर एवंम अन्य मन्दिर के निर्माण हेतू लगभग 27000 हजार रूपये स्वयं सचिव श्री प्रताप सिंह नागर ने दान दिये। राजा नैन सिंह समिति का शिला लेख लगा है।
- वर्ष 2000 ई. में सर्व प्रथम राजा नैन सिंह (स्मारिका) नामक पुस्तक (सचिव) प्रताप सिंह नागर द्वारा लिखी गई। इस पुस्तक का विमोचन 17 मार्च 2001 ई. में राजा नैन सिंह की पुण्य तिथि के अवसर पर आयोजित किसान सम्मेलन में किया गया। यह सम्मेलन (नव जीवन इण्टर कालेज) के मैदान में आयोजित किया गया। इस सम्मेलन में भी माननीय हुकुम सिंह जी संसदीय एवं कार्य मन्त्री पधारे। इस अवसर पर (सचिव) प्रताप सिंह नागर द्वारा राजा नैन सिंह के नाम से मुख्य द्वार के लिये 51000 हजार रूपये दान दिये इसका उदघाटन भी माननीय मन्त्री जी ने किया।

इसी सम्मेलन में मन्त्री जी ने विधयक निधि कोटे से 3,50,000 हजार रूपये विद्यालय को दान दिलाये।

- चौथा किसान सम्मेलन 27 नम्बर 2002 को आयोजित किया गया। जिसमें मुख्य अतिथि माननीय अवतार सिंह भड़ाना जी (सांसद) पधारे। यह सम्मेलन हस्तिनापुर में (पाण्डेश्वर मन्दिर) के प्रांगण में आयोजित किया गया। जिसमें (सचिव) प्रताप सिंह नागर ने मन्दिर प्रांगण में पत्थर एवं मरम्मत के लिये 1,24,000 रूपये दान दिये थे। समिति का पत्थर लगा है। इसी रास्ते पर माननीय सांसद द्वारा राजा नैन सिंह द्वार का निर्माण कराया और कस्बा-बहसूमा में समिति के (सचिव) प्रताप सिंह नागर के अनुरोध पर मुख्य सड़क से रानी के महल तक मार्ग का नाम राजा नैन सिंह मार्ग रखा गया। नगर पंचायत बहसूमा की तत्कालीन अध्यक्षा श्रीमती राजेस ने किया।
- पाँचवा किसान सम्मेलन मेरठ शहर में चौबीस अप्रेल को आयोजित किया गया। सम्मेलन 10 मई 2003 ई. को शहीद दिवस पर किया गया। इस सम्मेलन में मुख्य अतिथि-माननीय हुकुम सिंह जी तथा राज्यमन्त्री माननीय नवाब सिंह नागर जी पधारें। (सचिव) प्रताप सिंह नागर के अनुरोध पर तत्कालीन महापौर शाहीद अखलाक एवं उप-महापौर सुशील गुर्जर द्वारा, अमर शहीद राव कदम सिंह के नाम पर किला मार्ग पर जो कि जेल रोड़ के निकट मार्ग का नाम रखा गया। इसका उदघाटन भी माननीय हुकुम सिंह जी ने किया।

''बड़े दुख: के साथ कहना पड़ रहा कि पत्थर खण्डित करके हटा दिया गया''

राव कदम सिंह मार्ग

मेरठ में तिराहा मोड़ पर एक रास्ता जेल मार्ग को जाता है। इसका दूसरा रास्ता किला परीक्षितगढ़ मार्ग को जाता है। वही तिराहा पर नगर निगम-मेरठ के उप-महापौर सुशील गुर्जर के प्रयास से शहीद दिवस **दिनांक-10 मई 2003** को तत्कालीन कृषि मन्त्री (उत्तर प्रदेश) माननीय हुकुम सिंह जी द्वारा उदघाटन करते हुऐ। उनके साथ में सिंचाई राज्य मन्त्री माननीय नबाव सिंह नागर जी और कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुऐ माननीय, प्रधान प्रभु दयाल जी पूर्व-विधायक (खरखौदा) ने की। सभा का संचालन श्री सुरेन्द्र सिंह नागर एडवोकेट ने किया तथा कार्यक्रम के संयोजक कुंवर प्रताप सिंह नागर, (सचिव) राजा नैन सिंह समिति बहसूमा, मेरठ उपस्थित रहे।

किला परीक्षित गढ़ मार्ग, का उदघाटन करते हुए तत्कालीन कृषि मन्त्री (उत्तर प्रदेश)
माननीय हुकुम सिंह जी

प्रथम सम्मेलन

इस मंच के माध्यम से सर्वप्रथम राजधानी बहसूमा में 26 मार्च 1987 ई० को राजा नैन सिंह किसान सम्मेलन का आयोजन किया गया । इस सम्मेलन में मुख्य अतिथि के रूप में बाबू हुकुमसिंह जी मंत्री उ०प्र० शासन पधारे थे । और सरधना क्षेत्र के विधायक जकीरूद्दीन चौधरी ने अध्यक्षता की थी तथा संचालन विधायक हरशरण जाटव ने किया था।

द्वितीय सम्मेलन

इस मंच के माध्यम से दूसरा किसान सम्मेलन 21 नवम्बर 1991 ई० को बहसूमा में आयोजित किया गया। उसमें भी मुख्य अतिथि बाबू हुकुम सिंह जी पूर्व मंत्री तथा महासचिव अ०भा० कांग्रेस के द्वारा सम्पन्न हुआ, अध्यक्षता विधायक फूलसिंह सौदाई द्वारा की गई तथा संचालन पंडित राधे लाल शर्मा द्वारा किया गया। बहसूमा की तत्कालीन अध्यक्ष राजेस कुमारी द्वारा राजा नैन सिंह के नाम पर **मार्ग का नाम रखा गया।**

तृतीय सम्मेलन

इस मंच के माध्यम से तीसरा किसान सम्मेलन **17 मार्च 2001** को बहसूमा में आयोजित किया गया। उसमें भी मुख्य अतिथि बाबू हुकुम सिंह संसदीय एवं ऊर्जा मंत्री के रूप में पधारे थे। यह किसान सम्मेलन ऐतिहासिक था। इस सम्मेलन का मवाना तहसील के गाँवों में प्रचार किया गया था। यह किसान सम्मेलन नवजीवन इण्टर कॉलेज के मैदान में आयोजित किया गया था।

नवजीवन इण्टर कॉलेज मुख्य द्वार के निर्माण हेतू (स्वयं मेरे द्वारा) 51 हजार रुपये दान दिये गये । उक्त मुख्य द्वार का नाम राजा नैन सिंह के नाम से होगा । यह वार्ता प्रबंधक समिति द्वारा तय की गई थी । माननीय मंत्री जी से विद्यालय प्रांगण में पाँच लाख रुपये की माँग की गई थी माननीय मंत्री जी ने अपनी पार्टी विधायक माननीय अतुल कुमार खटीक को विधायक निधि से तीन लाख पचास हजार रुपये दिलवाये । राजा नैन सिंह स्मारक समिति के द्वारा लगभग चार लाख रुपये विद्यालय को दान के रूप में मिले थे । इस सम्मेलन की अध्यक्षता तत्कालीन जिला पंचायत अध्यक्ष दयानन्द गुप्ता जी द्वारा की गई । मवाना चैयरमैन नरेश चन्द्रा प्रतिष्ठित व्यक्ति भी तथा क्षेत्रीय विधायक सहित उपस्थित थे । सभा का संचालन राममेहर सिंह ने किया तथा समाज सेवी नेपाल सिंह कसाना आदि भी उपस्थित थे । इस सम्मेलन में लगभग 50 हजार कृषकों का जन सैलाब भी उपस्थित था। पाण्डेश्वर मन्दिर को राजा साहब ने बनवाया था। उसका पुनः जीर्णोद्वार स्वंय मेरे द्वारा कराया गया इसमें पूर्व विधायक माननीय कृष्ण गोपाल त्यागी जी का योगदान सराहनीय रहा तथा समस्त त्यागी समाज का भी योगदान सराहनीय रहा। क्षेत्रीय सांसद माननीय अवतार सिंह भंडाना जी द्वारा हस्तिनापुर में राजा नैन सिंह द्वार का निर्माण कराया गया।

चर्तुथ सम्मेलन

इस मंच के माध्यम से चौथा किसान सम्मेलन **10 मई 2002** को मेरठ शहर चैम्बर्स ऑफ कॉमर्स हाल में आयोजित किया गया । मंच द्वारा आयोजित किसान सम्मेलन 10 मई, 1857 ई० की वर्षगाँठ पर आयोजित किया गया । मंच के द्वारा कुंवर कदम सिंह जी के बलिदान को प्रकाशित कराना था । इस सम्मेलन में मुख्य अतिथि के रूप में बाबू हुकुम सिंह जी कृषि मंत्री

उ०प्र० शासन पधारे । इस सम्मेलन की अध्यक्षता माननीय हरीश पाल पूर्व सांसद द्वारा की गई । दादरी क्षेत्र विधायक माननीय नवाब सिंह नागर विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे । सभा का संचालन बाबू सिंह आर्य द्वारा किया गया तथा मेरठ नगर निगम उप-महापौर श्री सुशील गुर्जर भी उपस्थित थे । राजा नैन सिंह स्मारक समिति के प्रयास से सुशील गुर्जर के माध्यम से तत्कालीन महापौर शाहीद अखलाक द्वारा (किला परीक्षितगढ़ मार्ग) का नामकरण अमर शहीद कुंवर कदम सिंह के नाम पर किया गया।

पांचवा सम्मेलन

इस मंच द्वारा पाँचवां किसान सम्मेलन **10 मई, 2003** को नगर निगम मेरठ टाउन हॉल के मैदान में आयोजित किया गया। इस सम्मेलन में भी माननीय बाबू हुकुम सिंह कृषि मंत्री उ०प्र० शासन मुख्य अतिथि के रूप में पधारे । 10 मई, 2003 को 1857 क्रांति की वर्षगांठ पर कुंवर कदम सिंह जी के नाम पर मेरठ नगर निगम, मेरठ द्वारा पारित हुए मार्ग का विधिवत शिलान्यास किया गया । मार्ग का शिलान्यास किला मार्ग से जेल मार्ग के तिराहे पर किया गया।

उपरोक्त मार्ग का शिलान्यास 10 मई, 1857 की वर्षगांठ पर किया गया। इस सम्मेलन की अध्यक्षता माननीय नवाब सिंह नागर सिचाई राज्य मंत्री उ.प्र. शासन द्वारा की गई। इसी सम्मेलन में मेरठ विश्वविद्यालय मेरठ संघ अध्यक्ष डॉ. सोमेन्द्र सिंह तौमर का अभिनन्दन किया गया। सभा का संचालन श्री सुरेन्द्र नागर एडवोकेट द्वारा सम्पन्न हुआ।

छठा सम्मेलन

छठवा किसान सम्मेलन 10 मई 2004 को शहीद दिवस पर अयोजित किया गया। इसमें भी माननीय हुकुम सिंह पधारे, (सचिव) प्रताप सिंह नागर द्वारा माननीय मन्त्री जी से कृषि विश्वविद्यालय के मुख्य भवन का नाम अमर शहीद कुंवर कदम सिंह जी के नाम पर रखने की मांग की गयी।

इस प्रकार उपरोक्त सभी सम्मेलन (सचिव) प्रताप सिंह नागर अर्थात मेरे द्वारा किये गये। इन सब सम्मेलनो का खर्च स्वयं मेरे द्वारा वहन किया गया। मेरे द्वारा पुन: राजा नैन सिंह स्मारिका पुस्तक लिखी गई है। जो कि तैयार हो चुकी है। शीघ्र ही विमोचन किया जा रहा है।

सारांश

उपरोक्त मंच द्वारा राजा नैन सिंह स्मारक समिति द्वारा 6 किसान सम्मेलन किये गये । इन 6 सम्मेलन का खर्च (स्वयं) मेरे द्वारा वहन किया गया । इसमें समाज एवं मंच के पदाधिकारियों का सहयोग नहीं रहा । अन्त में मेरा मनोबल तब ओर अधिक टूट चुका था । जब मेरे द्वारा माननीय हुकम सिंह जी से अनुरोध किया गया था कि मेरठ कृषि विश्वविद्यालय का नामकरण

कुंवर कदम सिंह जी के नाम करने की माँग की थी । परन्तु अरूण सिंह जी माननीय मंत्री के निकट थे । उनके सामने मेरी नहीं चली । उन्होंने इस विश्वविद्यालय का नाम लौहपुरुष सरदार बल्लभभाई पटेल के नाम पर कर दिया । वे भी हमारे पूर्वज हैं । परन्तु स्थानीय दृष्टि से कुंवर कदम सिंह जी का हक अधिक था । चूँकि सरदार पटेल जी के नाम मेरठ मेडिकल कॉलेज का नाम भी है।

''मैंने एक पत्र तत्कालीन मुख्यमंत्री माननीय राजनाथ सिंह जी को लिखा था । मुख्यमंत्री कार्यालय से एक पत्र प्राप्त हुआ उस पत्र में लिखा था कि कृषि फाउण्डेशन समिति के अध्यक्ष हुकुम सिंह जी हैं। आप उनके माध्यम से ही वार्ता करें । मेरे पत्र का प्रभाव इतना बड़ा था कि जब माननीय मुख्यमंत्री जी मेरठ कृषि विश्वविद्यालय का शिलान्यास करने आये थे । तब मुख्यमंत्री जी ने राजा नैन सिंह जी का जिक्र किया तथा कुंवर कदम सिंह जी के बलिदान पर भी बोले थे ।

तब मैंने एक पत्र अपने **खून से लिखकर** कुछ पंक्तियाँ ही कुंवर कदम सिंह जी के सम्मान में कृषि मंत्री उ.प्र. शासन को लिखी थी । उसमें माननीय मंत्री जी (P.R.O.) श्री लाल जी यादव जी को मेरा पत्र प्राप्त हुआ था । जब मेरा पत्र पहुँचा था अगले दिन मुख्यमंत्री जी को कृषि विश्वविद्यालय का शिलान्यास करने आना था । चूँकि उस समय बाबू हुकुम सिंह जी संसदीय कार्य विभाग मंत्री भी थे। इस वजह से वे व्यस्त थे । उनके (P.R.O.) यादव जी ने मेरा पत्र अगले दिन सुबह माननीय मंत्री जी को दिया। लेकिन उसी दिन माननीय मंत्री जी व माननीय मुख्यमंत्री जी को **मेरठ कार्यक्रम** में आना था। इसका प्रमाण मुझे तब ज्ञात हुआ जब माननीय मंत्री जी के मित्र शामली के पूर्व चैयरमैन रमेश चन्द्र गुप्ता जी का फोन मेरे पास आया । तभी (P.R.O.) का फोन आया । उन्होंने मुझे अवगत कराया कि निकट भविष्य में कहीं अन्य जगह का नामांकरण कुंवर कदम सिंह जी के नाम पर किया जायेगा ।

आपका शुभचिंतक

कुंवर प्रताप सिंह नागर (सचिव)

राजा नैन सिंह स्मारक

समिति बहसूमा (मेरठ)

परम पूज्य बाबा फूल सिंह जी के मठ पर विशाल भण्डारे का आयोजन

परम पूज्य बाबा फूल सिंह जी के मठ पर विशाल भण्डारे का आयोजन किया जा रहा है। इस भण्डारे का आयोजन राजा जैत सिंह की 11वीं सन्तान **श्री कुंवर गजे सिंह नागर** द्वारा किया जा रहा है।

भण्डारे के व्यवस्थापक कुलगुरू **शेखर चन्द्र शर्मा जी** तथा यज्ञ के पुरोहित **पंडित प्रमोद शर्मा** और यज्ञ के यजमान के रूप में **कुंवर प्रताप सिंह नागर (सचिव)** तथा **पधान ईश्वर सिंह जी** आदि उपस्थित थे। भण्डारे का संचालन कुंवर विरेन्द्र नागर, आदेश नागर, कपिल नागर, यतेन्द्र नागर, संजय नागर, संदीप अहलावत, सतबीर अहलावत, मुनेश अहलावत, अरूण कुमार चाहल द्वारा किया गया व अतरपाल सिंह, मास्टर राम सिंह जी आदि गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे इस भण्डारे के आयोजन के मुख्य अतिथि - नगर पंचायत बहसूमा के अध्यक्ष मान्यवर **सोनू कुमार चाहल** थे। उनके सभी सभासद उपस्थित थे। उनके अथक प्रयास से देव पुरूष बाबा फूल सिंह जी के मठ के लिऐ रास्ते का निर्माण कराया गया।

इस कार्य के लिए सभी क्षेत्रवासी आपका आभार प्रकट करते है तथा ग्राम-मोड़कला के सुधीर कुमार, पधान कृष्णपाल सिंह व जयबीर सिंह आदि का विशेष योगदान रहा और सम्पूर्ण ग्राम मोड़कला के सभी व्यक्तियों तथा महिलाओं का विशेष योगदान रहा। बहसूमा रियासत के राजकीय पंडित रामफल दत्त शर्मा और अन्नू पंडित जी द्वारा पूर्व से बाबा जी की सेवा की जाती रही है तथा गणमान्य व्यक्तियों का सहयोग रहता है।

कुंवर प्रताप सिंह नागर
(सचिव)

संदर्भ साहित्य

1. **सूर्य वंश की वंशावली :** लिंग पुराण, पृष्ठ संख्या: 25-30
2. **चन्द्र वंश की वंशावली :** श्री मद भागवत महापुराण पृष्ठ संख्या 95-105
3. **कुरु वंश की वंशावली :** महाभारत के शांति पर्व से पृष्ठ संख्या 400-500
4. जनमेजय तथा राजा परीक्षित का वर्णन महाभारत से प्राप्त
5. **नागर वंश की वंशावली :** राजकीय भाटों द्वारा प्राप्त
6. **शिवाजी मराठा की वंशावली :** माननीय सर्वोच्च न्यायालय, भारत सरकार 29-09.1992 के आदेश के साथ प्राप्त
7. संस्कृत के महान विद्वान गुर्जर सम्राट भोज, लेखक, डा. हरिसिंह शास्त्री विभागध्यक्ष, MLN कालेज, रादौर, हरियाणा
8. Avari, Burjor (2007). India: The Ancient Past. A History of the Indian-Subcontinent from 7000 BC to AD 1200. New York: Routledge. ISBN 978-0-203-08850-0.
9. Ganguly, D. C. (1935), Narendra Nath Law (ed.), "Origin of the Pratihara Dynasty", The Indian Historical Quarterly, Caxton, XI:
10. Majumdar, R. C. (1981), "The Gurjara-Pratiharas", in R. S. Sharma and K. K. Dasgupta (ed.), A Comprehensive history of India: A.D. 985-1206, 3 (Part 1), Indian History Congress / People's Publishing House, ISBN 978-81-7007-121-1
11. Majumdar, R.C. (1955). The Age of Imperial Kanauj (First ed.). Bombay: Bharatiya Vidya Bhavan.
12. Mishra, V. B. (1954), "Who were the Gurjara-Pratiharas?", Annals of the Bhandarkar Oriental Research Institute, 35 (¼): 42–53, JSTOR 41784918
13. Meister, M.W (1991). Encyclopaedia of Indian Temple Architecture, Vol. 2, pt.2, North India: Period of Early Maturity, c. AD 700-900 (first ed.). Delhi: American Institute of Indian Studies. p. 153. ISBN 0195629213
14. Puri, Baij Nath (1957), The history of the Gurjara-Pratiharas, Munshiram Manoharlal
15. Puri, Baij Nath (1986) [first published 1957], The History of the Gurjara-Pratiharas, Delhi: Munshiram Manoharlal
16. Sharma, Dasharatha (1966). Rajasthan through the Ages. Bikaner: Rajasthan State Archives

17. Sharma, Sanjay (2006), "Negotiating Identity and Status Legitimation and Patronage under the Gurjara-Pratiharas of Kanauj", Studies in History, 22 (22): 181–220, doi:10.1177/025764300602200202, S2CID 144128358
18. Sharma, Shanta Rani (2012), "Exploding the Myth of the Gujara Identity of the Imperial Pratiharas", Indian Historical Review, 39 (1): 1–10, doi:10.1177/0376983612449525, S2CID 145175448
19. Singh, R. B. (1964), History of the Chahamanas, N. Kishore
20. Sharma, Shanta Rani (2017). Origin and Rise of the Imperial Pratiharas of Rajasthan: Transitions, Trajectories and Historical Change (First ed.). Jaipur: University of Rajasthan. p. 77-78. ISBN 978-93-85593-18-5.
21. Tripathi, Rama Shankar (1959). History of Kanauj: To the Moslem Conquest. Motilal Banarsidass. ISBN 978-81-208-0478-4.
22. Yadava, Ganga Prasad (1982), Dhanapala and His Times: A Socio-cultural Study Based Upon His Works, Concept
23. Kalia, Asha (1982), Art of Osian Temples: Socio-economic and Religious Life in India, 8th-12th Centuries A.D., Abhinav Publications, ISBN 9780391025585
24. Cort, John E. (1998), Open Boundaries: Jain Communities and Cultures in Indian History, SUNY Press, ISBN 9780791437865
25. Schwartzberg, Joseph E. (1978). A Historical atlas of South Asia. Chicago: University of Chicago Press. p. 146, map XIV.2 (i). ISBN 0226742210.
26. Avari 2007, pp. 204–205: Madhyadesha became the ambition of two particular clans among a tribal people in Rajasthan, known as Gurjara and Pratihara. They were both part of a larger federation of tribes, some of which later came to be known as the Rajputs
27. Wink, André (2002). Al-Hind: Early Medieval India and the Expansion of Islam, 7th–11th Centuries. Leiden: BRILL. p. 284. ISBN 978-0-391-04173-8.
28. Agnihotri, V. K. (2010). Indian History. 26. p. B8. Modern historians believed that the name was derived from one of the kings of the line holding the office of Pratihara in the Rashtrakuta court
29. Sharma, Shanta Rani (2017). Origin and Rise of the Imperial Pratiharas of Rajasthan: Transitions, Trajectories and Historical Chang (First ed.). Jaipur: University of Rajasthan. pp. 77–78. ISBN 978-93-85593-18-5.
30. Chaurasia, Radhey Shyam (2002). History of Ancient India: Earliest Times to 1000 A. D. Atlantic Publishers & Distributors. p. 207. ISBN 978-81-269-0027-5.

31. Smith, Vincent Arthur; Edwardes, S. M. (Stephen Meredyth) (1924). The early history of India : from 600 B.C. to the Muhammadan conquest, including the invasion of Alexander the Great. Oxford : Clarendon Press. p. Plate 2.
32. Ray, Himanshu Prabha (2019). Negotiating Cultural Identity: Landscapes in Early Medieval South Asian History. Taylor & Francis. p. 164. ISBN 9781000227932.
33. Chopra, Pran Nath (2003). A Comprehensive History of Ancient India. Sterling Publishers. pp. 194–195. ISBN 978-81-207-2503-4.
34. Kulke, Hermann; Rothermund, Dietmar (2004) [1986]. A History of India (4th ed.). Routledge. p. 114. ISBN 978-0-415-32920-0.
35. Dikshit, R. K. (1976). The Candellas of Jejakabhukti. Abhinav. p. 72. ISBN 9788170170464.
36. Mitra, Sisirkumar (1977). The Early Rulers of Khajuraho. Motilal Banarsidass. pp. 72–73. ISBN 9788120819979.